❀ श्री परमात्मने नमः ❀

चौदह विद्या सागर

जिसमें

नाद, वाद्य, नृत्य, कोक, वैद्यक, ज्योतिष वस्तु
शिल्प, रत्नपारखी, प्रतिमानिर्माण, छंद,
संभाषण, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, आकर्षण, रसायन
इन्द्रजाल, विद्युत और शकुन आदि
विद्याओं का समावेश है।

—:❀:—

जिसको

बाबू मोहनलाल जी माहेश्वरी 'प्रेम कवि'
अलीगढ़ निवासी ने सर्व साधारण के
लाभार्थ सरल गद्य, पद्य नागरी
भाषा में बनाकर

मुन्शी सालिगराम मास्टर अलीगढ़, टौन स्कूल ने
बाबू रमेश चन्द्र 'मित्तल' मौडर्न प्रिंटिंग वर्क्स
अलीगढ़ में छपवा कर प्रकाशित किया।

द्वितीय वार	स्वत्वाधिकारी	प्रति पुस्तक
२०००	प्रकाशक	मूल्य २॥)

❀ श्री हरि ❀

❀ अथ नाद विद्या प्रारम्भ ❀

मंगला चरण

[:❀:—:❀:—:❀:]

जय जय जय शिव शक्ति जय, गणपति सरस्वति माय।
"प्रेम" नाद विद्या लिखत, पूरण करहु सुआय॥

नाद प्रशंसा

आदि नाद परघट भयौ, फेर जगत को फेर।
नाद बिना कछु है नहीं, नाद शब्द इक मेर॥
नाद बड़ी विद्या लही, सरसुति सो बर पाइ।
कंठ लागि श्रति नाग है, शिव कुण्डल भय जाइ॥
पशु पक्षी हूँ नादकों, सुन रहत हैं मोहि।
नाद स्तुति को करि सकै, देखो सब जग ज्योंहि॥
नाद समुद्र के तरनकों, सरसुति करत विचारि।
हिय में दो तूबीं धरीं, ततछिन उतरी पारि॥
ऐसे उत्तम नाद को, लहन सबन को ज्ञान।
मोहनलाल बरनन करत, हरिवल्लभ मतभान॥

शरीर में नाद की उत्पत्ति और गति

उत्पत्ति नाद सु कहत हो, शास्त्र सबे सु विचार।
चार पदारथ नर लहैं, यही ते गिरधार॥
जाने बिना जु तत्व के, श्रति जातिन के भेद।
मुक्ति सहज सो निह लहै, होइ बड़ी मन खेद॥

नाद उत्पत्ति

जीव जबहि प्रेरित चितहि, चित्त जीव के दाई।
देह अग्नि कों ता छिनहि, प्रेरत पावक भाई॥
पावक प्रेरे तब जुवल, ऊरधकों सो जोई।
अति सूक्ष्म ध्वनि करतसों, निकट बाद के होई॥
बहुरों वह ध्वनि ऊर्द्ध चढ़ि, सूक्ष्म हिये में जाई।
करै पुष्ट ध्वनि कंठ में, सीस ही मध्यम भाई॥
कृत्रिम ध्वनि पुनि बदन में, तब ही प्रगटत आई।
ताही सों सब सुर बनत, गावत मुनि गन ताई॥
या विधि तन में नाद की, उतपति होत सुजान।
मोहनलाल महेश्वरी, तसही करी बखान॥

दश वायु नाम

प्रान अपान, अरु व्यान, पुनि कहे उदान समान।
नाग, कूर्म, अरु, क्रिकिल, पुनि देवदत्त परिमान॥
बहुरि धनंजय, ये दसहु, इनमें मुख्य प्रान।
मुख नासा, अरु, नाभि हिय, रहैं कहैं सुग्यान॥
कटि, जंघा, अरु उदर में, गुद, अरु अण्डन, मांहि।
आयु अपान रहे सदा और ठौर सी नाहि॥

नैन, कान, पुनि गुल्फ और, ये व्यानहि को ठाम।
सब शरीर में रहत सो है समान जिहि नाम॥
कर, चरनन, की संधि में कहत उदान बनाई।
नागादिक पांचों कहैं, सप्त धातु समझाई॥
इहि विधि बायु करत है, तन में नाद प्रसार।
तासों शब्द सु बनत है सुर सुरता, उच्चार॥
रख्यो नाम सुर नाद को, ताको उतपति सार।
आचारज गायन विविध, कहे अनन्य प्रकार॥

नाद विधि।

आहत और अनाहतौ, नादौ द्वै विधि होय।
सो प्रगटत है पिंड में यों जानत सब कोय॥
नाद अनाहत पुनि सबै सेवत गुरुसों याह।
दाता है वह मुक्ति को, चित न करे कछु चाह॥
आहत मोहे जगत को, भव को मेटन हार।
ताते उतपति नाद की, कहौं सुविधि व्योहार॥

शरीरस्थ चक्रनाम।

गुदा लिंग के बीच है चक्र विशुद्ध दल चार।
नाभि निकट मणि परि है, दस दल ताहि निहारि॥
लिंग मूल इक चक्र है, षट दल ताको जोई।
हिये अनाहत, चक्र पुनि, बारह दल सा होई॥
सोलह दल कंठ हि कमल सोलह भूत को बास।
पर्जादिक जे सात सुर, तिनको तहाँ निवास॥
कण्ठहि ऊपर घंटिका तहाँ द्वादश दल और।
चक्र दोय दल को कह्यौ, भौंह बीच गल ठौर॥
ता ऊपर मणि चक्र है; षट दल ताहि निवास।

अमृत धार में श्रवै, तन को करै विलास ॥
प्राण वायु पर जो चढ़ै, सुषमन संग सुखपाई।
जात बहुरि रिझवतजु फिर नट विद्या के दाई॥

नाड़ी नाम ।

नाड़ी तन में बहुत हैं, चौदह तिन में जान ।
प्रथम सुषमना पुनि इड़ा, बहुरि पिंगला मान ॥
कहौ बहुरिजु पयरवनी, संचारी पुनि होय ।
कहीं हरत जिन्दा बहुरि, और बारुनी जोय॥
यशरवनीं विस्वोद्वशा, बहुरि शंषनी मानि ।
पूषा सरसुति है बहुरि, अलंकषाहू जानि ॥
इन सब के संयोग ते तन, मघ विचरत नाद ।
सुरंसरा ताकौ कही, आचारज गुन वाद ॥
सुर प्रकार अब कहत हों, सब वही भेद बनाय ।
कह्यौ मार्ग संगीत में, सोई विधि दरसाय॥

सुर प्रकार—चौपाई ।

तीन भांति कर सुर को जान, मंद मध्य अरु तार बखान।
उपजे मन्द हृद ते आइ, उपजे गलते मध्यम भाई॥
सिरते ठार प्रगट पुनि होई, यह विधि तन बीना में जोई।
दारु कई दुंबी विपरीत, मैं जुकही तुम सों यहि रीत॥

सप्त सुर नाम

पिरथम को सुन नाम, दूसरो रिषभ सुजानों।
तीजो है गंधार जु, चौथो मध्यम मानों॥
पंचम पंचम जान, छटौ है धैवत प्यारो।
सप्तम सुर सु निषाद; गायकन नाम उचारो॥

ये हो सातो सुर अहैं, गावत सु गावनहार सब ।
मोहन तिनकी श्र तिनको कहों शस्त्र सों सार अब ॥

सप्त श्रुति रुप नाम

तीन श्रुति हैं रिषभ की, दयावती इक जान ।
दूजी रतिका रंजनी, तीजी करके मान ॥
सुर गंधार की पुनि, रौद्रा क्रोधा दाय ।
मध्यम की पुनि तीन हैं, प्रथम प्रसारिन लोय ॥
बहुरि प्रीति पुनि मार्जनी, संज्ञा ये शुभ दाय ।
छिती रक्ता संदापिनी आलापिनी बनाय ॥
पंचम सुर की चार ये श्रुती कहीं हैं गाय ।
धक्त की श्रुति तीन हैं मंदती रोहिनी नाम ॥
बहुरि तीसरी जानिये, रम्भा अति अभिराम ॥
उग्रा और है त्ताभिनी, दोनों श्रुति कर जान ।
सुर निषाद की श्र तिनको, तू ऐसे पहिचान ॥
सुरके पीछे होत है, मनहि चुरावन हार ।
ताही को श्र ति कहत हैं, जान लेउ निरधार ॥

चतुर सुर भेद

वादी पहिलौ दूसरौ, संवादी कहिवाय ।
बहुर विवादी तीसरो, अनुवादी चतुराय ॥
कै बारह कैं आठश्र ति, इनके बीचहि होइ ।
तिनको सवादी कहै, जे समुझैं हिय गोइ ॥
सुर गांधार निषाद पुनि, रिषभरु धैवति जान ।
ये जु विवादी आपु ये, होत निरन्तर मान ॥
और जो इतने बाहिरे, ते अनुवादी भाई ।
चारों इनके भेद जो, मैं कहि दिये बनाई ॥

बदी को राजा कहत, संवादी परधान ।
सानु बिबादी भृत्य हैं, अनुवादी परिमान ॥

मूर्छना ।

मूर्छना को आश्रम जहाँ होय ।
सुरन समूह तहां पुनि जोय ॥
जो संगीत को जानत लोय ।
मोहन भेद कहत है गोय ॥

तीन ग्राम—दोहा

ग्राम तीन गायक कहत, सुन उनके स्थान ।
दो बुरे संसार में, तीजो सुरपुर जान ॥

छप्पय ।

प्रथम ग्राम है षर्ज दूसरो मध्यम जानौ ।
है तीजो गंधार ग्राम, वास सुर लोक बखानौ ॥
थीचौ श्रुति में जाय सु, सो पंचम ठहराई ।
षर्ज ग्राम सो होत है, पूर्ण रूप सो आई ॥
पञ्चम की तीजी श्रुति, जब प्रवेश कहि आप ।
कहत ग्राम मध्यम, सभी, गुनियन के समुदाय ॥
धैवत जहाँ श्रुति तीन को, षर्ज ग्राम तब होय ।
चार श्रुतिन को होइ जब, तब मध्यम को जोय ॥
सुध सुर की इक श्रुतिन को जब गंधार सुर होय ।
पञ्चम इक की श्रुतिन को, चुबति शोभा सोय ॥
सुध सुर की इक श्रुतिन, जब ले तान निषाद ।
होय ग्राम गंधार तब यहै ग्राम सम्वाद ॥
षर्ज आदि सब सुरन को, तातै कोनो ग्राम ।
मध्यम सुर सुप्रधान है, दूजे सो अभिराम ॥

इनही के कुल में भयो, तीजो ग्राम गन्धार।
सो स्वर्गहि में रहत है, प्रेम करौ निरधार॥

तान नाम।

एकहि सुर परमान एक है, द्वै सुर को द्वै जानों।
इनको नाम गायकन जग में, भल तानरू बखानों॥
एकहि सुरको नाम अर्चिका द्वै सुर गायक जानों।
सामिक नाम सयौन सरन को गुनियन के मनमानों॥
चार सुरन को नाम सुरांतर, गान चाय्य निमानों।
मोहनलाल महेश्वरी गायन, शास्त्र सुदेख बखानों॥
इनही के संयोग योग ते, प्रगटत तान जुआई।
तिनकी संख्या अगिनत जानो, कस सकों गिनाई॥
तीन लक्ष दस सहस्र तासु पर, उन्तालीस धराई।
एतौ संख्या गाना चारज, गिनके दई बताई॥

साधारण सुर।

साधारण दो भाँति के, ठहरावति कवि लोय।
सुर साधारण एक है, दूजौ जाति जु जोय॥
सुर साधारण चारि विधि, पण्डित कहत विचार।
काकली अन्तर षर्ज पुनि, मध्यम कर निरधार॥
पहिलो श्रुति ले षर्ज की, सुर निषाद ठहराय।
चौथी श्रुति जो षर्ज, सो साधारण भाय॥
यही भांति नाम सुरन में, जान लेउ सब कोई।
मध्यम साधारण सबै, कही गुनी जन लोई॥

आलापन

आलापन हो राग को, तामे योंही जान।
जाति संग साधारण हि, पण्डित कहत विधान॥

चौपाई।

बरणौ चारि भाँत के कहिये, अस्थाई अवराही लइये।
अवरोही संचारी जानि, इनके लच्छण यों तू मानि॥

अवरोही लच्छण।

रहि २ कहिये एक सुर, थाई ताको नाम।
ऊरध गामी होय सो, है आरोही धाम॥
अरध ते अधको चले अवरोही कहि ताइ।
ये तीनों जब ही मिले संचारी कहि बाइ॥
जा सुर में ठहरा सुर, थाई ताहि बखान।
जब कविकोविंद यों कहें, दोनों मति यों जान॥
(उतार और चढ़ाव इसी का नाम है)

अलंकार।

गीत अग्र जो गाइयें, सोई ग्रह सुर होय।
जो सुर अतें गीत के, न्याय कहें सब कोय॥
बार बार आवै जु सुर, सोई अंस प्रमान।
बचनन की रचना जुई, अलंकार का ज्ञान॥
एक एक मूर्छना मिले अलंकार गिन काढ़ि।
साठ सवैय होत हैं, तिनपर तीनों बाढ़ि॥

अलंकार लच्छण

सातों सर जे होत हैं, श्रुतितें तिनके नाम।
षज रिषभ गंधार अरु, मध्यम अति अभिराम॥
पंचम धैवत और पुनि, कहत निषादहि लोय।
तिनकी संज्ञा दूसरी, सरगमि पधनि होय।

अथ सुर पत्त पच्ची नाम

कक्की षज सुरहिको कहिये, चात्रका रिषभहि जानों ।
है गांधार छाग को बोलन, मध्यम क्रौंच बखानों ॥
पंचम सुर कोकिल की बाणी, जो मनहरन सुनावे ।
धैवत दादुर बोलि बोलि के अति अनुराग जनावे ॥
अति गर्ज को सो उच्चारे शब्द निषाद सुहोई ।
पशु पच्छिन बोली सों सुर, भेद लहै कोई कोई ॥
हरिबल्लभ ये ज्ञान तान सुर, प्रेम सुरहस्य दिखाया ।
मोहनलाल महेश्वरी, रसिकन हेत ग्रन्थ सोइ गाया ॥

इति सुर अध्याय समाप्त

अथ राग अध्याय प्रारम्भ

शक्ति अरु शिव संयोग ते, उपजे हैं सब राग ।
मोद बढ़ै जिनके सुने, उपजत है अनुराम ॥

राग उत्पत्ति

नृत्य समें मुख पांच ते, उपजे पांचों राग ।
गिरजा के मुख ते छटौ, भयौ राग बड़िभाग ॥
प्रथमहि शब्द जान मुख सों वर श्रराग है उपजायौ ।
चामदेव मुख दूजे से सो राग बसन्त बनायौ ॥
तीसरि मुख अधोर तहि सों भैरव राग जनायौ ।
चौथे मुख तत्पुरुष से शिव पंचम को प्रगटायो ॥
पंचम मुख ईशानते जन्मों, मेघ राग सुख दाई ।

यों पाँचों रागन की सष्टी, शंकर जग प्रगटाई ॥
शक्ती के मुख ते भयौ नट नारायण जान।
छओ राग इस ग्रन्थ में, सुरता करत बखान ॥

छः राग नाम।

प्रथमहि श्रीराग को जाना, दूजा राग बछान्त पिछानों।
तीजों भैरव राग सुनीको, पंचम राग सुधारो जी को ॥
पंचम मेघराज को जानों, नट नारायण छटो बखानों ॥

दोहा।

अब रागिनी को भार्य्या, कहौ सुनो चित लाय।
जासों रागी राग में, रस रंगत उपजाय॥
इक इक रागहि की कहीं छः छः रागिनी गाय।
नाम कहत अब सबहि के, सुनो गुनी चित लाय॥

श्रीराग की रागिनी।

कंठ मलारी गूजरी, भवनो अति सुखखान।
गौरी केदारी भली, मध माधवी सुजान॥

बसन्त राग की रागिनी।

देवगिरी बैराठि पुनि, देसी ललित बखान।
छटी हिंडोली कहीजे, नारि बसन्त सुजान॥

भैरव राग की रागनी।

भैरव की धुनि भैरवी, राम कली गन्धारि।
खट गुजरी आसावरी, भैरों की प्रिय नारि॥

पंचम राग की रागिनी।

कर्नाट बढ़ि हंसिका, परमंजरी सुनाम।
भूपाली विभासिका, मालश्री छः काम॥

मेघ राग की रागिनी ।

सोरठ मध्वारी बहुरि, सावेरी सुख सार ।
कौशिक गन्धारी कही, नारि सु हरि सिंगार ॥

नट नारायण राग की रागिनी ।

कल्याणी आभीर सुचि, कामोदी हम्मीर ।
कही नाटिका सारिणी, तिय नारायण धीर ॥

राग गायन समय ।

प्रात काल में गाइये, भैरवि अति अभिराम ।
भूपाली मध साधवी, विरावरी सुख धाम ॥
श्याम गूजरी मल्हारी, अरु भैरों की तोय ।
बंगाली वैराटि पुन, सिंधो गा हित होय ॥
रासकली अरु सोरठो, बहुरि भैरवी होय ।
एक पहर पर गा इन्हें, गान करे चित जोय ॥
बैराटी अरु रोड़िका, कामोदी पुनि होय ।
गन्धारी अरु कुड़ पका, नागशन्दि का जोय ॥
देसी शंकर आभख, बहुरै कहे जु जान ।
पहर तीसरे गा इन्हें, गान तान परमान ॥
मालव श्रीरागड़ गनौ, गौरी नट कल्यान ।
त्रिवन रुनट सारंग पुनि, सब राग को ज्ञान ॥
चोथे पहरे आदि ले, आधी निसि निरधार ।
कोविधि याविधि कहत है, जो २ जिनकी बार ॥
ज़ाको जो समयौ कह्यौ, तब ताकों करि गान ।
मोहन सब मनमोह कर लहि यश सुखधनमान ॥

राग गायन ऋतु ।

श्रीरागहि रागिनी सहिते नर शीत ऋतु में गावे ।
राग बसंत बसंत ऋतु में, गायसु सुख उपजावै ॥
भैरव ग्रीष्म ऋतु में गावै, पञ्चम शरद्र बखानों ।
मेघ राग वर्षा ऋतु में गा, मोद बढ़े मनमानों ॥
ऋतु हेमन्त में गाइये, नट नारायण राग ॥
मोहन जो जानै भलो, ताही को धन भाग ॥

अन्य मत से छः राग नाम ।

भैरव कौशिक अरु हिंडोल, दीपक श्रीराग पुनि बोल ।
मेघराग पुनि छाटयौ मान, हनुमत ये कियो बखान ॥

राग गुण ।

भैरों सर सुरता कहै, कोल्हू चले जुधाय ।
कालकौश जग जानिये, पाखन पिघले आय ॥
चलै हिंडोला आपते, सुनत राग हिंडोल ।
पानी बरसै अतिहि सुत, मेघराज के बोल ॥
श्रीराग के सुनत ही, सुखो वृक्ष हराय ।
दीपक दीपक बर उठें, जो कोउ जाने गाय ॥

गायक-गवैया नाम ।

जो गावै रागहि भलो, सुर कर साधन जान ।
ताहि गवैयो कहीजे, गायन शास्त्र प्रमान ॥

गायन—आसन ।

आसान बैठ ऊंठ आला पै, जब सुर निकसे नीको ।
मोहे सकल समाज गान कर, शंसे मेटे जी को ॥

जो सोते बैठे चलते, फिरते गाते हैं।
अथवा आसन सो बैठे, नहीं वोह रोते चिल्लाते हैं॥
वो दुख महाराग कहि पावें, यामें झूठ न जानो।
तासों गायन हेत गवैया आसन लहि सुख मानो॥

गायन भेद गात।

पाँच भांति के गायन कहे, तिनमें भेद सब यों लहे।
सिद्धा कारक अरु अनुकार, अनुभावक पंचम अधिकार॥
सिषये सकल सीख कर लेय, सिद्धा कारक कहिये सोय।
छाया काहू और की, लेतु बुद्धि बलदान।
सो अनुकारक बड़ौ है, सिद्ध चतुर गुन खान॥

गायन प्रकार।

गायन तीन प्रकार के, कहे गुनी जन गाय।
येकल यमल सुवृन्द है, लक्षण कहो सुनाय॥
जो आपु ही गावै सदा, येकल कहिये ताहि।
जो गावें मिल दो जने, यमल कहीजे ताहि॥
कहिये गायन वृन्द सो, जो गावें मिल जूह।
रूप सुजोबन मधुरता, ये गुण अधिक समूह॥

गायन।

छाया लागै शुद्ध की, जानै सिगरी रीति।
ताको गायन कहत है, जे पंडित संगीत॥
गायन में जे होत है, दोष बीस अरु पाँच।
तिनके लक्षण कहत हो, जान लेहु तुम साँच॥

गायन दोष २५

दांतिन सों दांतिन घिसै, सो सदिष्ठरि जान।
रहस करै जो राग को, सो उदर्द करि मान ॥
सीत कार गावत करैं, सीत कार कहि वाहि।
गावै भय संयुक्त जो, भीतक कहिये ताहि ॥
गावै जो अति बेगिसों, कहो भडिता नाम।
कंपै तान में देह सुर, सो कंपित को ठाम ॥
मुखपसार गानहि करै, सो करालता नाम।
कहैं कपिल ताको कहै, घरिभाड़ी अति धाम ॥
काके सुर सम होई सुर, सोई काको होई।
गावैं सिका घाघरै, करभग है वा सोई ॥
गाल फुलावै गान में, कहि तूंबा की ताहि।
गावैं चक्रजु मुख करै, बक्री जानो वाहि ॥
गात पसारें गान में, होत पसारी सोई।
आँख मूंद गानहिं करे, वहै निमीलक होई ॥
गावत उपजैं गान सुर, सोई अधोमुख जान।
गावत जो बर्जित सुरहि, सोई अपसुर मान ॥
प्रगट होत अच्छर नहीं, जाके गावत गीत।
ताको कहि अव्यक्त तू, चित्त में हात समीत ॥
थान तीनि गावै नहीं, थान नष्ट कहि ताहि।
तीन विचच्छण कहैं तिहि अधमन में कर जाहि ॥
सुद्ध और छाया लगी, मिल करजु कोऊ गान।
मिश्रकताओं कहत हैं पण्डित सुर सुग्यान ॥
गावै जो गायन सदा, नासासुर सो सान।

नाम सोनुनासिक कहैं, ताकि चतुर बखान।
गायन दोष और सुर गति, गायन रीति सुचाल।
लिखी शास्त्र संगीत सों, तुम हित मोहनलाल॥

तालार्णव।

ताल प्रान है गान को, कहत बुद्ध यों जान।
तातें गायन को चहै, लहन ताल को ज्ञान॥
गीतहि को मापन करै, लहि विश्राम सुवान।
ताल कहत तासों गुनी, गायन चतुर सुजान॥
लिखौं वाद्य विद्या सही, ताको सर्व लवलेश।
लेहु गुनी जन देख सो, मेटहु सकल कलेश॥
ताल मात्रा सों बनत, मात्रा कला बनाय।
मर्ण सुवर्ण को भेद जे, लखहु स पिंगल मांय॥

लय।

धीरे अथवा वेग सों, जो गायन की चाल।
ताही सो लय कहत है, गायक गुणी विशाल॥
लयकी धीमी चाल को, 'ठा' कहियत गुनि लोग।
लय के भाग विभाग ही, बने ताल संयोग॥

सरगम वर्णन।

आरोही।

सा रे ग म प ध नि सा

अवरोही

सा नि ध प म ग रे सा।

भैरव राग सरिगम

सब मनि धनि धप धप मध पम
वरि स स धनि सरिगम धपमप
धप मम रि स निध निस ॥

बैराठी ।

रिम रिम पध पध मप धप धप पध मप धस गरि
म पध पस नप गम धम मगरिगम ॥

मालकोश-टोडी ।

रिग रिस सरिस नि सरिगम पम नि धध मरिस
गरिस रिसनि धनिग रिससरि ॥

हिंडोल विलावल ।

सरि गध पध पमग रि ससरि पगम पगम
गरिस सरिग पगम गरिस सरिग पगम
पधस निस ॥

ललित सरगम ।

सरिगप परि गरिस नि सरिग पगरिरिस ।

केदार सरगम ।

गम पम पप गमग रिसनि रिमग मपस सनिध पगग पगग

देसी कान्हारा ।

स ग ध प ध म ध म ध स स ग ।

नट सरगम

सरिग पमग रिस सरिगधप गरिस सपम गमप पधम गरिग पगरि ससरि ।

श्रीराग ।

रिम पनि सनि स धप मगरि ।

बसन्त ।

सरिम गध पमप मम धम मध धध धस सनि धस पम

मालश्री ।

निधप पमध निसनि ससम धपम गमप मप मध

आसावरी ।

रिमग रिमध पमरि सरिम रिमम धमम पपम गरिस धरिस निध पम ।

मालारी ।

धसरि पमरि धसस धसनि मरिम पधप मधप धसध धरिस धपम ।

देश ।

समध मगरिं ससग धपध पधम पधम सगस सरिग पध ससप ससप ससध धध पपपध ॥

नाद गान कों तान तन, लहि सरगम की चाल ।
मोहनलाल पूरण किया, कृपा करी गोपाल ॥

॥ श्रीहरि ॥

अथ वाद्य विद्या प्रारम्भ

मंगला चरण ।

जै जै जै शिव जै जै मंगल दातार ।
प्रेम वाद्य विद्या लिखत पूर्ण करहु करतार ॥

विद्या भेद

गीत निरूपण मैं कियो सुहै वाद्य आधीन ।
तात बरनन वाद्य को करत सु चतुर प्रवीन ॥

वाद्य चतुर्विधि वर्णन

चार भान्ति के वाद्य बखाने, तत न सुषीर मोद मद ठाने ।
पुनि अनवद्य अकरघन जान, इनकी विधि अब कहत बखान ॥

वाद्य नाम ।

वीणादिक जो वाद्य हैं तिनको है तत नाम ।
वंस काहिला आदि दै सुषिर कहैं अभिराम ॥
जग में सुर सुरता कहैं बाजे साढ़े तीन ।
चर्म तार और फूंक को अर्द्ध ताल सुरहीन ॥
चर्म चढ़ो जो वाद्य है सो अनवद्य बखान ।
कास्य ताल को आदि कर सब घन की धी जान ॥

वीणा विचार

विद्या हैं द्वै भान्ति की तिन के कहों विवेक ।
श्रुति बीना है एक सो सुर वीणा है एक ॥

अनव नामद्य

डुंडुभि मेरी और निरसान, इतने व अनवद्य बखान।
सब जन मन को अतिदी भावै, इनकर मोहन शब्द सुनावै॥
ताल उघटयाइक बहुरि छुद्र वंटिका होई।
अय घण्टा कम्पा बहुरि मुक्ती पद तू जोई॥
एक भयाग्य कहावत हैं सब, इनकी विधि तू सुन मोपै अब।

ताल कथन

पंच ताल सारग कहे, तिनको कहौं बनाइ।
प्रथमहि चंचत पुटहि, चाच पुटो या भा॥
बहुरिपुषट पितु पुत्र है उद्‌घाटो पुनि होइ।
ताल भेद यों कहत हैं सबै गुनी जन लोइ॥
चचत पुट में गुरू लघु सुसुप्त विस्तार।
सयोष सधा द्वै जातिते उपजो अति निरधार।
ताल प्रान संगीत को कहें संगीती लोय।
ताते पहिले गीत को ताल साधना जोय।

ताल नाम

लघु आदि परिमिती सो देसी तालहि जानि।
कांस्य ताल का ध्वनि लयै, चित को रोचक ठानि॥
पांच वर्ण को उच्चारै, एक तालिका होइ।
देसी में घट बढ़ि कहूं, जो बनि आवे सोइ॥
अह नर सो छन में घटयो, लघु ही को अधिकार।
करि प्रधान याते कह्यो, याही को निरधार॥
ताल प्रान संगीत को, कहैं संगीत लोई।
ताते पहिले गान के, ताल साधना जोई॥

ताल नाम

आदिताल रासनाल पंचम अरु दर्पनताल रतिलीलाताल

वीर बिक्रम बखानी है। तालश्रीराग तालचच्चधरी व जैमिलग्न गजलीला हंसलीला वर्ण भिन्न मानी है। राजचूड़ामणि तालचतुरश्रवन रंगीघौतताल रंग सुदीपक जानी है। राजताल असवानताल मिश्रवर्न सिंह ताल विक्रत विजय सरवलील सुखदानी है।

सिंहनींदन कोकिल प्रिया, है निसारत इकताल।
राजविद्या रतिमल्लिका, विजियानन्द सुचाल ॥
क्रीड़ा जयश्री मकरन्द, रति कीरत प्रति ताल अनंद
बिंद माल सम नन्दन, मंडक ठेकी जान ॥
उर्वीछन अरु नांदी, वरन मठिक मान।
समकाल रु कुमुद अति, चतुरपर्नजती रूप ॥
चन्द्रकला चित चपन करि, चन्दताल सुरभूप।
द्र ताली समुक्द ये तालकुविंद सुताल ॥
कंठाभरन निसंक सो कुन्दन अरु ब्रह्मताल।
रायवंक और अनंगइ, लघुसेसर झपताल ॥
तलासुरति बरुनाजति लजत नरायनताल।
ललितनंद वर्द्धन कही, बहुरि लक्ष्मीताल ॥
अड़ताली इकताली पुनि, प्रति ताली सो ताल।
अष्टतालिका चर्चरी पुनि कुंडली पताल ॥
विश्नुताल जतिलग्न, गारूरि ताल विशाल।
अपरताल औरहु अधिक, प्रेम भरी प्रियजान ॥
मोहनलाल महेश्वरी कछुक कही हित मान।

ताल बोल नाम

पहिले कहि आये हैं कि 'पांचवर्ण को उच्चरै एक ताल का होय, इत्यादि अब उसी का भेद इस स्थान पर कहते हैं ताल

मात्रओं से बनती है मात्रा कला से बनती है प्रयोजन यह है कि ताल से गाने का समय परिमिति कर दिया जाता है जो मात्राओं की गिनती के रुप से गीत में रहता है।

कुछ तालों की मात्रा वा कला का रूप और बोल इस स्थान पर लिखकर समझाया जाता है।

बोल पखावज या तबला मृदंग वा ढोलक

इकताल

बारह मात्रा रूप का, कला सु अड़तालीस।
यह इकताला रूप इक, वरना चतुर गुनीस॥

ठेका के बोल ३ ताल १२ मात्रा ४८ कला

धी	तृक	धी ना	धी धी ना तृक	तू ना कत ता
१	२	३ ४	५ ६ सम ८	९ १० ११ १२

तिताला

इस ताल में तीन ताल भरी और एक खाली होती है।

ढेका के बोल

धाधिंधिंता—	धाधिंधिंता—	धाधिंधिंता—	तातिंतिंता
१	२	३	४
	सम		खाली

इसमें १६ मात्रा व ६४ कला होती हैं।

ताल दादरा।

बोल ठेका—धाधिना—धातिता

सम

इसमें २ ताल छः मात्रा और २४ कला होती है॥

ताल रूपक

बोल ठेका—३ ताल ७ मात्रा २८ कला

धी तृक—धें ना—ती तीना

१ २ ३ सम खाली

५ ६ ७

इसमें ७ मात्रा व २८ कला होती हैं।

ताल झूमरा।

बोल ठेके का-मात्रा १४ कला ५६

मात्रा	१ २ ३ ४	५ ६ ७	८ ९	१० ११ १२ १३ १४
बोल	धी तृक धीना	धे धीना	धीतृकधीना	ती ती ना
ताल	१	२	३	४

इसमें तीन ताल भरी और पिछली १ खाली होती है।

ताल चाचर।

४ ताल १४ मात्रा ५६ कला

बोल—	धाधाधीन्	धाधीन्	धाधाधीन्	तातीन्
	१	२	३	४
		सम		खाली

ताल आड़ा चौताला

धुरपद ७ ताल १४ मात्रा ५६ कला

बोल ठेका—

	धीधी	नातृक	तूना	कतती	नाधी	नाधी	धाना
ताल	१	२	३	४	५	६	७
	सम		खाली		खाली		खाली

ताल चौताला।

६ ताल १२ मात्रा ४८ कला

बोल—किट तक गिद् गिन धाधा धिता किट धा धिता
१ २ ३ ४ ५ ६
सम खाली खाली

ताल कव्वाली ।

४ ताल ८ मात्रा ३२ कला

बोल—धागि नाधि तक धिन
१ २ ३ ४
सम

ठेका होली

बोल—१ २ ३ ४
धाधाधीन धाधीन धाधाधीम तातीन्
ब्रह्म सम खाली

ताल

बोल—

गत किड कीडाक्त तक भीरिम धरि किट कुकु रटधरि किड डिग किया तक क्तक किं दुदु गज गक्ति कथ दुर दु कुकु ध डिग तक कु मे०

बिश्नु ताल

ततत्था कि थरि कुंद् कुंद् कुं कुं दं था त क्रु कः क्र क्र जगन गनक कुस्कादि क्रु क्रु क्रु ।

कि कु कुत्पिडि थां क्र क्रु कें कें कु कु टिक किन रट कु कु किजंग टरट कूट क थ्या किट किट तक थिर किट किट ॥

थरि थों किट किट थों थुं थुं किट न किट जाकिट जग जगज क किन ज गिः किन थारिंन कि था ॥

लक्ष्मी ताल।

तक तक कक जग थरि थिरक

इकताली और चाचरी, अड़ताली प्रतिताल

बरनी लक्ष्मी ताल की, तालसु मोहनलाल

इन तालों के अतिरिक्त इन्द्रताल-रुद्रताल-नारदताल पताल कुंडली आदि और भी अनेकन ताल हैं जो संगीत शास्त्र में लिखी हुई हैं।

ताल बोल अरु वाद्य विधि लुद्ध बजावन तान।

बरनी थोड़ी प्रेम इहि, अधिक गुणी लेउ जान॥

अब वाद्य तंत्रियों के समझने के हेतु थोड़े से बाजों के नाम और साधारण बोल और भी लिखे देता हूँ।

पखावज का मृदग बोल

बोल—धा-ता-किट-धुप-धिन्ना-गिध इन ही बोलों से सब ठेकों के बोल बनते हैं।

तबला।

पखावज के ही दो टुकड़े करके बनाया गया है इनके बोल भी पखावज ही के सदृश हैं वर्तमान काल में इसी का अधिकतर प्रचार है।

वीणा बोल।

द्रि—दा—रा—ता—द्रिड़

सितार बोल।

दा—द्रि—रा—ता

सारंगी मयूर कानून आदि

इनमें तार लगे होते हैं परन्तु गज से बजाये जाते हैं इसी से इनमें से स रि ग म प ध नि सा यह शब्द निकलते हैं।

मंजीरा बोल ।

किन, किन,

बाँसुरी शब्द

बाँस की पोई में सातों सुरो के छिद्र होते हैं उसमें फूंक-के द्वारा स रि ग म प ध नि निकलता है ।

इसके सिवाय जल तरंग, नस मुहचंग तरंग वा ढोलक खंजरी, करताल-आदि बहुत से और भी बाजे हैं जो उन्हीं बाजों की रीति पर बजाये जाते हैं ।

अथ नृत्यं विद्या प्रारम्भ

नृत्य प्रबन्ध

दर्शनीय दाता बड़ो, जात जगत को पाल ।
कला कोबिदन सो मिल्यो, बैठा होई रसाल ।।
ताके आगे जाय के, नाच करै लै साथ ॥
बुंद गहत है संग सब, ले संगीत को गाथ ॥

गायन बृन्द नाम

गायक वाद्यक जूथ को, जूथ कहै सब कोय।
सब संगीत के मिल रहै एक मुख्य को जोय ।।
वाद्यक, ताद्यक में जहाँ नृत्य करै बहुभाय।
चारि मुख्य छायक तहाँ, आठै होय सहाय ॥
आठ गायनी होय तहं रस की उठे तरंग।
चारि ताल या रीति वहाँ चारि मृदंगी अंग ॥
चारि बजायें बंस पुनि, ताको बृन्द बखान।
तबहि नृत्य को होइ सुख, सभा सरल रस ठान ॥

नृत्यारम्भ

प्रथमहि नृत्यारम्भ में, मुख चाली गति लेय।
गति निवद्ध, अनवद्ध तहाँ, ये दोऊ सख देय॥
बहुरो शब्द गनेश को, उचरे मंगल काज।
बहुरि मृदंग बजावहीं, कहि मेलापक साज॥

नाच विधि (गति लेन क्रिया)

दोउ पार सम राख के, दच्छिण चरन चलाय।
धरि तिरछो बहुरो करै, बाम चरन इहि भाय॥
अन्तर डेढ बिलाँद को, दोउ पाइन में होय।
चारि पहर अन्यपिका, कहै गुनी जन लोय॥

पुहुप पुट

सन्ध सीर्ष कर जुग मिलें हाथ पुहुप पुट नाम।
सकल गुणी जन यों कहें अगुठहि सूधे बाम॥

नृत्यक की असीस

पहिले नृपहि असीस दै ताको नाँदी नाम।
तो पाछें नृत्यहि करै, ता पाछें अभिराम॥
शंकर की प्यारी उमा, तुमको सम्पति देउ।
अंगीकृट संगीत में, मुदित हास रस सेउ॥

कर सूची क्रिया

ताल निकट सूची कहै, शंकर अर्थ सुगाय।
कर पताक कट जुगन धरि, हिय पर धारी भाय॥

अध मुख भाव

कतियज्ञातक अन्धमुख, बहुरि देउ अरथाई।

कपोत भाव

मुख समीप जु कपोत का, करि अंगी कृत दाइ।

संगीत भाव

हंसा स्याह कार सुपनिक, अरु संगीत बखान।

अठ पल्लव भाव

दिखरावे अठि पल्लवहि, मुदित रीति यह मान।

हृदयार्थ लक्ष भाव

समदेही कर हिय निकट, हृदय अथ पौ होय।
जिन आगे जिय ताप कर, भेद अर्थ को जोय॥

प्रथम लक्ष गति

प्रथमहि दिखराये गतिहि दक्षिण बहुरो बाम।
पुनि आगे बहुरो कहै, सब दिस अति अभिराम॥
अस्त्र और चतुर अगहि, दिखराये बहुभाइ।
लहरी चक्रादिक करै बहुरि बनाइ बनाइ॥

भुज विक्रय भाव

भुज विक्रय कर मन हरे, नाभि निकट कर लाय।
बहुरो कर माथे निकट, धर कर नाच दिखाय॥

रास ताल

रासताल में नृत्यकर, लय तीन्यों जुत नृत्त।
हास्या सहि सोबहुरि हू मान करै सुख रत्त॥

मुखचाली मुखबंध

चौ०—नृत्यलाख अरुविषय विषयपुनि। अरुलघु पेरी निगुड़ीगुनि
अभिनय चार भांति के जहाँ, नाद्यहि कांपै लच्छुत तहां।
नाटक याके अर्थ सों, जुगत देह रस भाव।
न्यट कहै सब ताहि का, करै चित्त में चाव॥

लहरी चक्र

नृत्य मध्य जो चक्कर लेय। लहरी चक्र कहत हैं तेय।
भाँति २ के भाव दिखावे। भाव चर्थ सोय नाम कहावे॥

श्याम कटाक्ष

नक्र भाव सों आहि समाज। श्याम कटाक्ष कहै तिहि साज॥

श्वेत श्याम कटाक्ष।

कबहुं प्रीति जतावहीं, कबहुँ कि रोस दिखाय।
श्वेत श्याम कटाक्ष सो, कहत कबीजन गाय॥

आगीक कटाक्ष।

अंगन कर जु दिखाइये, आगिक सोई होत।
सिर करनादिक सों कहै, सारक जानो प्रोत॥
भृकुटी नैन विकार सो, मुषज रीति या जान।
करलो भृमर विचित्र अति ताकौ साखा मान॥
बचनन करिके जोर जो, जैं सोई वाचक होय।
स्वांग बनावे भूषणन सो आहार्य सुगोय॥
ग्रीबा गुल जुग पीठ अरु, प्रदर उरू जुग जंघ।
कोऊ मन बन्धहि कहै, प्रत्यगहि के संग॥
भौंह नैन नासा चिबुक, अधर कपोलन जान.
येला पगदह में कहै, हिय में लीजै जान॥

नत्याचारी पुरुष नाम।

ब्रह्मा, शिव, नारद, श्रीकृष्ण महाराज।
आचारज हैं नृत्य के कहै गुनी सरताज॥
इन्द्र, गणेश, बखानिये कवि काविद रहे गाय।
नृत्य विश्व प्रगटत भयौ, इन ही के समुदाय॥

नृत्याचारिणी स्त्री नाम

सरस्वती, अरु लक्ष्मी, इन्द्राणी सुकुमार।
पार्वती, और रती कहि, चतुर नृत्य आचार॥

पंच नृत्य नाम

खतक तांडव लासवा, मदन नृत्य बहु भाय।
सांगीत मोहन विमल, कहै नृत्य कवि गाय॥
इमिला, त्रिमिला, कामिला, प्रभिला सुख कर वाय।
काम कला चैतन्य कर, नृत्य नारि समुदाय॥

असुर नृत्यक नामावली

रावण, बाणासुर, नच्यौ भस्मासुर बहु भाय।
नृत्य तपस्या कर कियौ, भाव अनन्य दिखाय॥

नृत्य अधिष्ठाता नृत्य नाम

ब्रह्मा ने नाच्यौ खतक शिव तांडव तति लीन।
नारद नांचे लासुदा, कृष्ण संगीत जु कीन॥
मोहन नृत्य सु इन्द्र का, मोहन ताको जान।
नाच्यौ विमल गणेश ने, प्रेम प्रफुल सख मान॥

स्त्री नृत्य

सरस्वती के नृत्य को नाम सु इमला तत्त।
वीणा ले नृत्यन करत, ज्ञान देय सा सत्त॥
लक्ष्मी जी के नृत्य का, त्रिमिला कहें बुधराय।
न्द्राणी को नृत्य है, नाम कामिला भाय॥
काम देव की प्रिया को, काम जगावनहार।
काम कला चैतन्य नृत, बुधजन कहत विचार॥

मदन नृत्य

नैनन सों बहु भाव दिखावे, पायन सों पुनि ताल बजावे
दो०—प्रथम भावना मैनवी, गजललि पुनि हाय।

कहत तुरंग अरु हस्तिनी, द्दगी बहुर तू जाय ॥
तरुनी बहुत विलास सो, काम भाव दिखराय।
नाचें सोलह कलासों मोहन प्रेम बढ़ाय ॥

नृत्याचार्य्य गंधर्व

करत नृत्य गायन नितहि, स्वर्ग इन्द्र को धाम।
शास्त्र गुणी तिन को कहै, सरब गंधरब नाम ॥

दश नृत्य कृति

आना जाना धरन मुरन अरु लपक झपक कर साल।
कसक मसक अरु चपक दमक कर मोहै सकल समाज।

(१२ गति १२ पल्टन नाम)

प्रथम ठाठ गति मुकट पुनि, पनिहारी को भाय।
ठाड़ी गालन कर धरै, घूंघट गता दिखाव ॥
वक्षस्थल कटि कर गया, पुनि मयूर के अंग ॥
महिला नट गति मल्य गति, नृत्य गतीमय संग।

गति लैन विधि

ठाट बनावे ठाठ सों, माथे कर दोउ लाय।
जावे आगे मुकट गाते, पाछे पलटे धाय ॥
जीवन को है मुकट गति, चन्द्र कला कर लोट।
नृत्य गुणी गति कहत हैं प्रवल प्रेम की पोट ॥
माथ घट धर नृत्य कर, पनिहारी गति सोय।
इक कर अंगुली चिबुक इक, सीस सामु है लोय ॥
ठोढ़ी गात इहि कहत है अपर गाल गति सार।
इक अंगुली धर गाल पै, इक कर कमर सधार ॥
राखै दोउ कर कमर पै, आब्रन की गति एह।
लौटन की गति में कह्यौ, इक कर सूधो लेह ॥
दोउ कर राखे कमर पर, उलट उलट दाउ ओर ॥

छाती दृश्य करावही, छाती गति कहि मोर ॥
केवट कर जिमि बल्मिका, सोइ रूप दरसाउ ।
लौटन में पतवार को, नृत्यक भाव दिखाउ ॥
घूंघट गति मुख ढाप चल, पुनिम यूर गति येय ।
सारी प्यारी युगल कर, पकर सीस तन लेय ॥
कला भाव सो नट गती, मल्ल भाव दिखराय ।
नृत्यक ऐसी भांति नव, मोहन सभा रिझाय ॥
सम्वत नवदश फाल्गुन कृष्ण पक्ष भृगु वार ।
संग्रह मोहनलाल किय सहि संगीत रस सार ॥

छन्द विद्या

दोहा—सिद्ध सदन सुन्दर बदन नंद नन्दन सुख मूल ।
प्रेम रसिक प्रिय सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥

उपक्रम

जासों जग जन परमहित कहत लहत चित चाय ।
सोई विद्या छन्द इह लिखत प्रेम सिरनाय ॥
मान छन्द को गुनिन मन माही सों अधिकाय ।
भाव सरस उपजत महा चित को अति सुखदाय ॥
दूसरा उत्तमता यहै अलकार के संग ।
उपमा कवि वरनत जहां कहत पूर्ण रस रंग ।
सोई सभावत चित में हिय में सुख उपजाय ॥
आवत सूधी समझ में चितसु नतहि हर्षाय ।
यासों पढ़ि संसार को कियो न कौउ उपकार ॥
जन जन के हिरदे बसे, धर्म कर्म व्यवहार ।
श्री पद पद्य बनाय के कह्यौ जाय सुख पाय ॥
हृदय ग्रहण ताकूं करत रहत सोई मन भाय ।

हृदय कमल इक पुष्प है वाणी है मकरन्द ॥
मन भौंरा भरमत फिरत लहि प्रिय छन्द सुगंध ।
प्रेम छन्द मन हरन कौ, रचयौ शेष सुख खान ॥
नर नारिन हित प्रति कियौ तिहि रस रसिक बखान।
प्रेम किये बिनु प्रेम नहिं, प्रेम बिना नहि चाय।
वर्ण बिना नहिं छन्द ज्यों प्रगटत जीको भाय ॥
हिय की गुप्त सुवार्ता प्रगट सताहि जताय।
गद्य गद्य में कहत सब सो नहिं चित ठहराय ॥
रहत सदाँ कण्ठग्र सो सुनत चित हर्षाय ।
प्रेम सोई पद पद्य है छन्द कहत है जय॥
जे विद्या जग जनन को प्रिय अति कहत सलोय।
जासों पावत मान नर जग में जाहिर होय॥
याके अति दृष्टान्त हैं नहीं कहन की बात।
सब ही जिन्हें सराहते हैं, जो कवि विख्यात॥
देखहु पद्माकर कवि पायौ जग में नाम।
निज कवितासो खुश किये भूपति गुण के धाम ॥
सूरदास निज काव्य सों तजो आधि और व्याधि ।
दरशन पायौ कृष्ण को कविता ही को साध ॥
जग के गुणि जन आजलों सूर ही रहे सराय ।
सूर सूर भये जगत में कहत सुमोद बढ़ाय ॥
बहुरि सुतुलसीदास की को नहिं जानत आज ।
रामायण रच के कियौ राम भक्ति को काज ॥
अमर अनेकन कवि भये भले आज लों दीख ।
काव्य छन्द रच यश लह्यौ सबहि सिखाई सीख ॥
कविता में गुण बड़ौ यह जौ कोउ सीखे याहि ।
सबको प्यारा होय वह सबहि सराहि जाहि ॥
यदपि कवी जन होत हैं निर्धन काया छान ।
तदपि मन्त्र सम बल रखहि निर्भय रहैं अदीन ॥

करत दीन पर दया बढ़ि रंकहि जावें अंक।
कहत करत नहिं मुरत सो प्रणतपाल निशंक॥
अब जाको जो बचन दियौ कविने दियौ निभाय।
कवी कभी नहीं टरत हैं जो प्रणकर कहि गाय॥
कवि की समझ विचित्र है कहत सभी यों गाय।
जहाँ न पहुँचत है रवि तहाँ कवि गति जाय॥
कहं लग उपमा काव्य की और कवी की आय।
मेरी मति छोटी अतिहि बरनत अति सकुचाय॥
ऐसे काव्य अनूप को जन मन मोहन हार।
गुनी करत आदर महा जानत हैं सार॥
रसिकन चित आनन्द करत जान जगत उपकार।
मोंसों ताके लिखन कः गुनी कियौ निरधार॥
ऐसे गुनियों को चहै करों प्रगट हों नाम।
जासों कवि गुनि जननकों आदर होय ललाम॥
अग्रवंश अबतंश है चित्त उदार गुरु धाम।
कवि गुनजन आदर करत मुंशी शालिगराम॥
तिन्ह के चित्त नित रहत है करन यही व्यवहार।
ऐसे पुस्तक छापते जासो होय उपकार॥

उन मोसों कही लिखन की, मैं तब कीन्ह विचार।
कहा लिखौं कैसे लिखौं छंद काव्य विस्तार॥

पुनि यह आई चित्त में गण आदिक समझाय।
लिखो नायका भेद को रस शृङ्गारहि गाय॥
नवरस में जेही बड़ौ जन मन मोहन हार।
ताही सों याहै लिखों पिंगल मत अनुसार॥
कवि गुनिमन सों बीनती बहुरों सीस नवाय।
प्रेम छंद विद्या कहत समहु चूक गुनगाय॥

छन्द लक्षण

गिन्ती मात्रा वर्ण की जिहि अन्तर्गत होय ।
चार पाद हों तासु के छंद कहावत सोय ॥
दो प्रकार के वर्ण हैं गुरु लघु रूप विचार ।
इक मात्रा लघु नाम है द्वै मात्रिक गुरु सार ॥
अनुस्वार और विसर्ग यदि, हों लघुता के संग ।
सो लघु लघु नहिं गुरू हो, रीति सपिंगल अंग ॥
जो लघु हो पद अन्त में पूर्व सपद संयोग ।
उनकी हू संख्या गुरू कहै कवी गुरु लोग

गुरू लघु का रूप

लघु की सूधी पाई इक, यों करके दरसाय ।
गुरु की वक्री चिन्ह ये ऽ रहे कवी बतलाय ॥
छंद होत दुइ भांति के, कहत कवी सिर मौर ।
एक मात्रा बृत्ति हैं वर्ण बृत्ति हैं और ॥
वर्ण बृत्ति में रहत है गण को बड़ो विचार ।
वो गण कविता आठ है, तिन्ह को कहूं उचार ॥

गण नाम

'तीन वर्ण' को एक गण कविजन रहे जताय ।
प्रेम छंद पिंगल रचे, रहे गण नाम बताय ॥
मगण नगण और भगण है, यगण जगण कहलाय ।
रगण सगण अरु तगण ये आठों गण हैं भाय ॥

गण स्वरूप

तीन गुरू को मगण, तीन लघु नगण सुजानो ।
आदि गुरू है भगण अन्त लघु यगण बखानो ॥
मध्य गुरू हैं जगण मध्य लघु रगण बतायो ।
अन्त गुरू है सगण अन्त लघु तगण सुनायो ॥

मगण नगण और भगण हैं यगण चार शुभ जान
शेष चार ये अशुभ हैं छंद प्रथम नहिं लान ॥

(गणों का शुभाशुभ स्वरूप)

मगण—S S S	चार	जगण—। S ।	चार
नगण—। । ।	शुभ	रगण —S । S	अशुभ
भगण—S । ।	गण	सगण—। । S	गण
यगण—। । S		तगण—S S ।	

(मात्रावृत के स्वरूप भेद)

छंद मात्रा वृत के गण हैं पाँच सुजान ।
टठडढण कहत मात्रायों कर मान ॥
छः मात्रा को टगण है ठगण पाँच परमान ।
डगण चार है त्रिय ढगण णगण दो मात्रिक जान ।
इनके और हु भेद बहु मोहन करि चित देउ ।
प्रेमदत्त इन सबन को पिंगल में लखि लेउ ॥
कहों सु या लघु ग्रंथ में भेद नायका सार ।
प्रथम कहों रस रसिक हित नवरस नाम उचार ॥

नवरस नाम

कवित्त—पहिलो शृङ्गार रस हास्य है दूजो तहाँ करुण रस नाम
तहाँ तीजो गिनायो है । चौथो है रोद्र रस वीर रस
पाँचवों है छटवों भयानक रस रङ्ग दर्शायो है ।
रस है वीभत्सरत सातवों बतावत जीहे अद्भुतरस आठवों
कवि गुनियन ने गायो है । प्रेमदत्त नवमों है शांति रस
प्रेम कहै मोहन महेश्वरी पिंगल दर्शायो है ॥

(वृत्तों के भेद)

जाके चारों चरण तुल्य हो समवृत ताकी मान ।
युगल चरण सम होंय तासुके अर्धा समबृत जान ॥

चारों चरण नहीं तुल्य हों जाके कहौ विषमवृत जाहि ॥
प्रेम उदाहरण बिनु नहिं आते जासों सुति ये ताहि ।

(समवृत का उदाहरण)

बोलो कृष्ण मुकंद मुरारे । त्रिभुवन विदित काम सब सारे ।
जरासिंध कंकहि प्रभु मारा । त्रिभुवन विदित काम सब सारा ॥

(अर्द्ध समवृत का उदाहरण)

राम राम कहि राम कहि, बालि कीन्ह तन त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठते, गिरत न जाने नाग ॥

विषम वृत का उदाहरण

राम राम भजु राम, बचन अस तन धरि जगत ।
जप तप शाम दम व्रत नियम निकाम, करि करि हरि पद पद्म धरिं उतरि जवैया हो ।

(मात्रा वृत छंद निरूपण)

(१) ३१ मात्रा का सवैया छन्द होता है ।
सवैया में आदि अन्त गुरु लघु का नियम नहीं है ।

(२) १६ मात्रा का चौपाई छन्द होता है (देखो रामायण)

(३) ४८ मात्रा का सोरठा छन्द होता है ।

(४) ४८ मात्रा का छन्द होता है ।
दोहा के उलटने से सोरठा और सोरठा के उलटने से दोहा छन्द बनता है ।

(५) दोहे के पिछले पाद में १३ और दूसरे में १५ मात्रा रखनी चाहिये इस प्रकार एक पाद में २४ मात्रा और पूर्ण दोहे में ४८ मात्रा हुई—इनके उदाहरण की आवश्यकता नही जी चाहे तहाँ देख सकते हो ।

(६) १४४ मात्रा का कुण्डलिया छन्द होता है ।

(सार सूचना)

अब इन छन्द्र भेदों के बताने की इस पुस्तक में आवश्यकता नहीं है इसी से इस प्रबन्ध को इसी स्थान पर छोड़ कर अब मैं शृङ्गार रस सम्बन्धी नायका भेद का वर्णन कर के इसी को सदृष्टान्त कहने का साहस करता हूँ कि प्रेमी पुरुष मेरे इस परिश्रम से नायका भेद को जान लेंगे। बस यही मेरा अभीष्ट है।

मैंने इस छन्द विद्या पुस्तक में अपनी ओर से कुछ नहीं लिखा है विशेष कर पद्माकर महाकवि के काव्य का आश्रय लेकर यह ग्रन्थ रचा है, मेरा अपना इसमें कुछ भी नहीं है. इस पर भी जो कोई दोष या भूल रह गई हो वह क्षमा योग्य है।

अथ नायका भेद प्रारम्भ

नायिका लक्षण

रस सिंगार को भाव उर, उपजत जाहि निहारि।
ताही को कवि नायका, बरनत विविध प्रकार॥
तीन भाँति की नायका, कविजन करत बखान।
प्रथम स्वकीया, परकीया, तीजी गणिका जान॥

स्वकीया लक्षण

निज पति ही के प्रेम मय, जाको मन बच काय।
कहत स्वकीया ताहिसों, लज्जा शील सुभाय॥
खान पान पीछे करत, सोवति पिछले छोर।
प्राण पियारे तें प्रथम, जगी भावती भोर॥
एक स्वकीया की कही, कविन अवस्था तीन।
मुग्धा इक मध्या बहुरि, पुनि प्रौढ़ा परबीन॥

मुग्धा लक्षण

झलकत आये तरुणाई, नई जासु अंग अंग ।
मुग्धा तासो कहत हैं जे प्रवीन रस रंग ॥
यह अनुमान प्रमान युत तिय जन जोवन जोति ।
ज्यों मेंहदी के पात में, अलख ललाई होति ॥
सो मुग्धा दो तरह की, प्रथम जान अज्ञात ।
ज्ञात यौवना दूसरी, भावत मति अवदात ॥

अज्ञात यौवना नायका लक्षण

जब जोवन को आगमन, जान परत नहिं जाहि ।
सो अज्ञात योवन तिया, भाषत सुकवि सराहि ॥

उदाहरण

काह कहौं दुख कौन सों, मौन गहौं किहि भांति ।
घरी घरी यही धांधरी, परत ढीलि पै जाति ॥
दर उकसो है उरज लखि, धरत क्यों न धनि धीर ।
इन्हें बिलोकि बिलोकियतु, सो तन के उर पीर ॥

ज्ञात योवना नायका लक्षण

तन में योवन आगमन, जाहिर जब जिहि होत ।
ज्ञात योवना नायका, ताहि कहत कवि गोत ॥

उदाहरण

आज कालि दिन द्वैक ते, भई और ही भाँति ।
उरज ऊंचो हैं उरू, तन तकि तिया अन्हाति ॥

मुग्धा नवोढ़ा का लक्षण

अति डरते अति लाजते, जो न चहै रति गाम ।
तेहि मुग्धा को कहत हैं, सुकवि नवोड़ा नाम ॥

उदाहरण

नित देखय पिय स्वप्न में, गहत आपुनी बांह ।
नहीं नहीं कहि जगि भजी, तदापि नहीं ढिग नांह ॥

(विश्रब्ध नबोढ़ा लक्षण)

पति की कछु परतीति उर, धरै नबोढ़ा नारि ।
सो विश्रब्ध नबोढ़ तिय, बरनत विबुध विचारि ॥

उदाहरण

दूरहिते दृग दे रहित, करत कछू नहीं बात ।
छिनक छबीले को सुतिय, छुवन देत नहिं गात ॥

(मध्या नायका का लक्षण)

इक समान जब ह्वै रहत, लाज मदन ये दोय ।
जा तिय के तन में तबहि, मध्या कहिए सोय ॥
मदन लाज वश तिय नयन, देखत बनंद इकन्त ।
इंचे खिचे इतउत फिरत, ज्यों दुनारि के कन्त ॥

(प्रौढ़ा नायका का लक्षण)

ललित लाज कछु मदन बहु, सकन केलि की खान ।
प्रौढ़ा ताही सो कहत, सुकबिन का मति मान ॥
तिय तन लाज मनोज की, यों अब दशा दिखाति ।
ज्यों हेमन्त ऋतु में सदा, घटत बढ़त दिनराति ॥
प्रौढ़ा द्विविध बखा नहीं, रति प्रीता इक बाम ।
आनन्द अति सम्मोहता, लक्षण इनके नाम ॥

(रति प्रीता उदाहरण)

करत केलि पिय हिय लगि, कोक कलन अब रेखि ।
विमुद कुमुद लो ह्वैरही चन्द मन्द दुति देखि ॥

(आनन्द सम्मोहा उदाहरण)

भई मगन यों नागरी, सुलहि सुरत आनन्द ।
अंग में भूषन वसन, पहिरावत नंद नन्द ॥
मानस में मध्या त्रिविध, त्रिधा कहत प्रोढ़ाहि ।
धीरा बहुरि अधीर गन, धीरा धीरा ताहि ॥

(मध्या धीरा नायका लक्षण)

कोप जनावै व्यंग सों तजन पति सनमान ।
मध्या धीरा कहत हैं, तासों सुकवि सुजान ॥

उदाहरण

जो जिय में सो जीभ में, रमत रावरे ठौर ।
आज काल के नरन में जीभ कछू जिय और ॥

(मध्या धीर नायका लक्षण)

करै अनादर कन्त को प्रगट जनावे कोप ।
मध्या धीरा नायका ताहि कहत करि घोप ॥
दाहक नाहक नाह मुदि करिहौ कहा मनाय ।
सुबस भये जातीय के ताके परसों पाय ॥

(मध्या धारा धीर नायका लक्षण)

धीर वचन कहै जो तिया, रोय जनावे रोस ।
मध्या धीरा धीर तिय, ताहि कहत निरदोस ॥

कर आदर निज पीय को, देखि हगन अलखानि ।
सुमुख मोर बरसन लगी, लै उसास असआनि ॥

(प्रौढ़ा धीरा नायका लक्षण

उर उदास रति तैं रहै पति आदर की खानि ।
प्रौढा धीरा नायका ताहि लीजिये जान ॥

दरस दौरि पिय पग परसि आदर कियो अधेह ।
तेहि गेह पति जाइगो निरख चौगुनो नेह ॥

(प्रौढ़ा अधीरा नायका लक्षण)

कछु तरजन ताड़न कछू करिजु जनावै रोस ।
और अधीरा नायका निरख नाहको दोस ॥
नेह तरेरे दृगन ही राखन क्यों न अगोट ।
छैल छबीलै पै कहा करत अमल की चोट ॥

(प्रौढ़ा धीरा अधीरा लक्षण)

रति तैं रूखी है जहां उरज दिखावै बाम ।
प्रौढ़ा धीर अधीर तिय, ताहि कहत रस धाम ॥

परकीया नायका लक्षण

होय जु तिय पर पुरुष रति सो परकीया नाम ।
ऊढ़ा प्रथम बखानहीं बहुरि अनूढ़ा नाम ॥

ऊढ़ा नायिका लक्षण

जो व्याही तिय और कों करत और सौं प्रीत ।
ऊढ़ा तासों कहत हैं हिये राख रस रीति ॥

उदाहरण

चढ़ी हिंडोरे हर्ष हिय सजि तिय बसन सुरंग ।
तन भूलत पिय संग में मन भूलत हरिसंग ॥

अनूढा नायका लक्षण

अनव्याही तिय होत जहं सरस पुरुष रस लीन ।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि पण्डित परवीन ॥
कुशल करैं करतार तो सकल शंक सियराय ।
यार क्वारपन को जु पै कहूं व्याहि लै जाय ॥
इक परकीया के कहे षट विधि भेद बखानि ।
प्रथमहि गुप्ता जानिये बहुरि विदग्धा मानि ॥

ललित लक्षिता तीसरा चौथी कुलटा होय।
पंचई मुदिता षष्ठई है अनुसमना सोय॥
कही सुगुप्ता तीन विधि सुकविन हूँ समझाय।
भूत सुरति संगोपना प्रथम भेद यह आय॥
वर्तमान रति गोपना भेद दूसरो जान।
मुनि भविष्य रति गोपना लक्षण नाम प्रमान॥

भूत सुपति संगोपमा उदाहरण

छुटत कम्प नहिं रैन बिन विदित विदारत काय।
अति शीतल हेमन्त की अरी खरी यह वाय॥

वर्तमान सुरति गोपना उदाहरण

चढ़त बाट बिचल्यौ सुपगभरी आन इक अंक।
ताहि कहा तुम तक रहीं यामें कोन कलंक॥

भविष्य सुरति गोपना उदाहरण

कोऊ अब कछु का हुये मती लगाइये दोष।
होन लग्यौ बृज गलिन में हुरिहारन का घोष॥
द्विविधि विदग्धा जानिये वचन विदग्धा एक।
किया विदग्धा दूसरी भाषत विदित विवेक॥

वचन विदग्धा का लक्षण

बचनन की रचनान सों जो साधें निज काज।
वचन विदग्धा नायिका ताहि कहत कविराज॥

उदाहरण

कल करील की कुंज में रह्यो उरझ मो चीर।
ए बलवीर अहीर के हरत क्यों न यह पीर॥
कनक लता श्रीफल फरी रही विजय बन फूलि।
ताहि तजत क्यों बावरे अरे मधुप मति भूलि॥

क्रियाविदग्धा नायका लक्षण ।

जो तिय साधे काज निज कर कछु क्रिया सुजान ।
क्रिया विदग्ध नायिका ताहि लीजिये जान ॥
कर गुलाल सों धूंधुरित सकल ग्वालिनी ग्वाल ।
रोरी मीड़िन के सुमिस गोरी गह्यौ गुपाल ॥

(लक्षता नायका लक्षण)

जा तिय को जिय आनरस जान कहै तिय आन ।
ताहि लक्षता कहत हैं जे कवि कला निधान ॥
घर न कन्त हेमन्त रितु राति जागती जात ।
दबकि द्यौस सावन लगी भली नहीं यह दास ॥

(कुलटा नायका लक्षण)

श्री बहु लोगन सों जुतिय राखत रति की चाह ।
कुलटा ताहि बखान हीं ले कवीन के बाह ॥

(मुदिता नायका लक्षण)

सुनत लखत चित की चाह की बात घात अभिराम ।
मुदित होय जो नायका ताको मुदिता नाम ॥
परखि प्रेम जस पर पुरुष हरषि रही मति मैन ।
तब लगि झुकि आइ घटा अधिक अंधेरी रैन ॥
कही सु अनुसमान विविधि प्रथम भेद वह जानि ।
वर्तमान संकेत के विघटन से सुख हानि ॥

(दूसरी अनुसमना लक्षण)

होन हार संकेत का परि अभाव उर माहि ।
दुखित होत सो दूसरी कहत अनुसमाहि ॥

(तीसरा—अनुसमना लक्षण)

जो तिय सरति संकेत को रमन गमन अनुमान ।
व्याकुल होत सु तीसरी अनुसमना पहिचान ॥
कल करील की कुन्ज ते उठत अतर को बोय ।
भयौ तोहि भाभी कहा उठी अचानक रोय ॥

(गणिका नायिका लक्षण)

करै और सों रति रमण इक धन ही के हेत ।
गणिका ताहि बखान हीं जे कवि सुमति निकेत ॥
तन सवरन सुवरन वसन सुवरन उफति उछाह ।
धनि सवरन में है रही सवरन ही की चाह ॥
प्रथम कही जे नायिका ते सब त्रिविधि विचार ।
अन्य सुरति दुखिता सुइक मानवती पुनि नार ॥
फिर बकोकत गर्बिता यह विधि भिन्न प्रकार ।
तिन के लक्षण लक्ष सब भाषत मति अनुसार ॥

॥ अन्य सुरति दुखिता नायिका ॥

प्रीतम प्रीति पुनीत जो और तिया तन पाय ।
दुखित होइ सो जानिये अन्य सुरति दुखिताय ॥

॥ मानिनी नायिका लक्षण ॥

खान पान शय्या शयन जासु भरोसे आय ।
करै सो छल अलि आपसों तासों कहा वसाय ॥
पिय सो करै जु मान तिय वही मानिनी जान ।
ताको कहत उदाहरण दोहा कवित बखान ॥
और तजे तौरह तजे भूषण बसन अमोल ।
तजन कह्यौ न सुहाग में अंजन तिलक तमोल ॥

वह वक्रोकति गर्विता द्विविधि कहत रस धाम ।
प्रेम गर्विता एक पुनि रूप गर्विता नाम ॥

॥ प्रेम गर्विता नायिका ॥

करै प्रेम को गर्व जो प्रेम गर्विता नारि ॥
रूप गर्विता होत वह रूप गर्व को धारि ॥

॥ रूप गर्विता नायिका ॥

निरखि नैन मृग गोन से उठी सर्व मिलि भाखि ।
पर घर जाय गंवाह रिसि हौं आई रस राखि ॥

॥ दश विधि नायका वर्णन ॥

प्रोषित पतिका खण्डिता कलहांतरिता होय ।
विप्र लब्ध उत् कंठिता बासक सज्या सोह ॥
स्वाधीनहु पतिका कहत अभिसारिका बखान ।
प्रगट प्रवत्यत प्रयसी आगति पतिका जान ॥
ये सब दशविधि नायिका कविन कही निरधार ।
तिनके लक्षण लक्ष सब क्रमने कहत विचार ॥

॥ प्रोषित पतिका नायिका लक्षण ॥

पिय जाको परदेश में प्रोषित पतिका सोय ।
उदित उद्दीपन ते जु तन सतापित अति होय ॥

॥ खंडिता लक्षण ॥

अनत रमे रति चिन्ह लखि प्रीतम के शुभ गात ।
दुखित होय खंडिता बरनत मति अवदात ॥

॥ कलहांतरिता लक्षण ॥

प्रथम कछू अपमान कर पियकों फिर पछताय ।
कलहांतरिता नायिका ताहि कहत कविराय ॥

॥ विप्र लब्धा लक्षण ॥

पय विहीन संकेत लखि जो तिय अति अकुलाय ।
ताहि विप्र लब्धा कहत सुकविन के समुदाय ॥

॥ उत्कंठिता का लक्षण ॥

ताहि संकेत सोचै जु तियरगन आगमन हेत ।
ताहि को उतकण्ठता बरनत सुकवि सचेत ॥

॥ बासक सज्या लक्षण ॥

खोजहि सेज सिंगार तिय पिय मिलाप के काज ।
बासक सज्या नायिका ताहि कहत कविराज ॥

॥ स्वाधीनपतिका लक्षण ॥

जा तिय के आधीन है प्रीतम रहे हमेश ।
जो स्वाधीन पतिका कही कविन नायका वेश ॥

॥ अभिसारिका लक्षण ॥

बोलि पठावै पियहि कै पिय पै आपुहि जाय ।
जाहि को अभिसारिका बरनत कवि समुदाय ॥

॥ प्रवत्स्यत्प्रेयसी लक्षण ॥

चलत चहै परदेश को जातिय को अब कत ।
ताहि प्रयत्स्यत्प्रेयसी कहत सुकवि मतिवन्त ॥

॥ आगत पतिका लक्षण ॥

आगत बलम बिदेश तें हरषित होत जु बाम ।
आगत पतिका नायिका ताहि कहत रस धाम ॥

॥ उत्तमा मध्यमा अधमा का लक्षण ॥

सुपिय दोष लखि सुनि जु तिय धरै न हिय में रोस ।
ताहि उत्तमा कहत है सुकवि सवै निर दोस ॥

पिय गुनाह चित चाह लखि करै मान सनमान ।
ताही पिय को मध्यमा भाषत सुकवि सुजान ॥
ज्यों ही ज्यों पिय हितकरत त्यों त्यों परत सरोस ।
ताहि कहत अधमा सुकवि निठुराई की कोस ॥

नायका निरूपण

सुन्दर गुन मन्दिर युवा, युवति विलोकैं जाहि ।
कविता, राग, रसद जो, नायक कहिये ताहि ॥

नायका के भेद

नायक तीन प्रकार के, कहै कबिन ने गाय ।
पति उपपति वैसिक यथा, सुनों भेद चित लाय ॥
जो विधि सों व्याह्यौ तियन सोई पति कहवाय ।
सो अनुकूल दच्छिण तथा सठ और धृष्ट बताय ॥
तीन तरह के औरहू नायक कहे विचार ।
बचन चतुर मानी बहुरि क्रिया चतुर है सार ॥

॥ दर्शन भेद ॥

श्रवण चित्र दर्शन कहे, स्वप्न सुदर्शन जान ।
है प्रत्यच्छ दर्शन चतुर, दर्शन भेद बखान ॥
जब शृङ्गार रस कहन को जी में उपजैं चाव ।
प्रथम नायका देखिये पाछे काव्य बनाय ॥

॥ उद्दीपन भाव कथन ॥

जब जिय चाहे करन को काव्य सुरस, शृङ्गार ।
भाव उद्दीपन को करहु प्रथम सुरुवी विचार ॥
कबहु काव्य करिवौ नहीं, भाव बिना सुज्ञान ।
ताहीं सों अब सबन को, लच्छण कहों बखान ॥

(उद्दीपन विभाव लक्षण)

जिनहि विलोकतही तुरत रस उद्दीपन होत ।
साई भात है उद्दीपन कहत कविन के गोत ॥

उद्दीपन के हेतु

सखा सखी दूती सुवन उपवन षट ऋतु पौन ।
उद्दीपनहि विभाव में वरणत कवि मति मौन ॥
चन्द चान्दनी चन्दनहु पुहुप पराग समेत ।
योंही और सिंगार सब उद्दीपन के हेत ॥
कहे जु नायक के सबै प्रथम सुविधि प्रकार ।
अब वरणत हो तिनहिकै सचिव सखा जो चार ॥

॥ नायक सखा ॥

पीटमर्द विट वेट पुनि, बहुरि विदूषक होय ।
मोचे मान तियान की पीठ मर्द है सोय ॥
सुविट बखानत है सुकवि चातुर सकल कलान ।
दुहुन मिलावे में चतुर वहै चेट उर आन ॥

॥ विदूषक का लक्षण ॥

स्वांग ठान ठानै जु कछु, हांसी वचन विनोद ।
कह्यो विदूषक सो सखा, कविनमान मन मोद ॥

॥ सखी लक्षण ॥

जिनसों नायक नायिका, राखें कछु न दुराव ।
सखी कहावे ते सुधड़ सांची सरल स्वभाव ॥
काम सखिन के चार ये मण्डन शिक्षा दान ।
उपालम्भ परिहास पुनि बरनत सुकवि सुजान ॥

मण्डन तियहिं सिंगारियो, शिक्षा विनय विलास।
उपालभ सो ठरहनो हंसी करन परिहास॥

॥ दूती लक्षण ॥

दूतपने में सदा जो, तिय परम प्रवीण।
उत्तम मध्य अधम है, सो दूती विधि तीन॥

॥ उत्तम मध्यम अधम दूती लक्षण ॥

हरै सोच उचरे वचन, मधुर मधुर हित मान।
सो उत्तम दूती कही, रस ग्रन्थन में जान॥
कछुक मधुर कछु कछु पुरुष, कहै वचन जा आय।
ताही को कवि कहत हैं मध्यम दूती गाय॥
कै पियसों कै तियहिं सो कहै पुरुष ही बैन।
अधमी दूती कहत हैं ताही सो मति ऐन॥

॥ दूती कर्म निरूपण ॥

दो दूतिन के काम हैं विरह निवेदन एक।
संगठन दूजौ कह्यौ सुकवि न सहित विवेक॥
विरह विथान सुनाय के विरह निवेदन जानि।
दोउन को जु मिलाइवो सो संघठन मानि॥

॥ स्वयं दूती लक्षण ॥

आपुही अपनो दूतपन करै आपुने काज।
ताहि स्वयं दूती कहत रस ग्रंथन कविराज॥

॥ रस निरूपण ॥

मिल विभाव अनुभाव पुनि संचारिन के वृन्द।
परिपूरण थिरभाव यो सुर स्वरूप आनन्द॥

ज्यो पय पाय विकार कछु ह्वै दधि होत अनूप ।
तैसोही थिर भाव को बरनत कवि रस रूप ॥
नाम सु नव रस के प्रथम दीन्हे तुम्हें सुनाय ।
अब लक्षण गुण कहत हों सबही को समुझाय ॥

॥ श्रृंगार रस लक्षण ॥

जाका थायी भाव रति सो श्रृंगार सु होत ।
मिल विभाव अनुभाव पुनि संचारिन के गोत ॥
रति कहियत जो मन लगत प्रीति अपर पर जाय ।
थायी भाव श्रृंगार के भल भाषत कविराज ॥
परि पूरण थिर भाव रति सो श्रृङ्गार रस जान ।
रसिकन को प्यारो सदा कवि जन किया बखान ॥
आलम्बत श्रृङ्गार के तिय नामक निरधार ।
उद्दीपन सब सखि सखा बन बागादि विहार ॥
हाव भाव मुसक्यान मृदु इमि औरहु जु विनोद ।
है अनुभाव सिंगार नव कवि जन कहत प्रमोद ॥
उन्मामिक संचरत तहाँ संचारी है भाव ।
कृष्ण देवता श्याम रंग सो सिंगार रस राव ॥
सो सिंगार दो भाँति को दम्पति मिलन संयोग ।
अटक जहाँ कछु मिलन का सो सिंगार वियोग ॥

॥ हास्य रस लक्षण ॥

थाई जाको हास है वहै हास्य रस जानि ।
तहं कुरूप कुदव कहव कछु विभाव ते मानि ॥
भेद मध्य अरु ऊंच स्वर हंसि वाई अनुभाव ।
हरषत चपलता औरहू तहं संचारी भाव ॥
श्वेत रंग रस हास्य देव प्रथम पति जासु ।
जाको कहत उदाहरण सुनत जो आवै हासु ॥

।। करुणा रस लक्षण ।।

आलम्बन प्रिय को मरण उद्दीपन दाहादि ।
थाई जाको शोक जहं वहै करुण रस पादि ॥

।। रौद्र रस लक्षण ।।

थाई जाको क्रोध अति वहै रौद्र रस नोम ।
आलंबन रिपु रिपु उमड़ उद्दीपन तिहि ठाम ।।

।। वीर रस लक्षण ।।

जा रस को उत्साह शुभ है इक थाई भाव ।
सुरस बीर रस है सोई कहत सभी कविराज ॥

।। भयानक रस वर्णन ।।

जाको थाई भाव भय वहै भयानक जान ।
लखन भयंकर गजब कछु ते विभाव उर आन ॥

।। वीभत्स रस वर्णन ।।

थाई जासु गलान है सो वीभत्स गिनाव ।
पीव मेद मज्वा रुधिर दुर्गन्धादि विभाव ॥
नाक मूंदिवो कंप तनु रोम उठन अनुभाव ।
मोह अनूपा मूर्छा, दिक संचारी भाव ।।

।। अद्भुत रस वर्णन ।।

जाको याही आचरज सो अद्भुत रस गान ।
असंभवति जेते चरित, तिनको लखत विभाय ।।
वचन विचल बोलति कंपनि रोम उठत अनुभाव ।
पितरक शंका मोह ये तहं संचारी भाव ।।

जासु देवता चतुर मुख रंग बखानत पीत ।
सो अद्भुत रस जानिये सकल रसन को मीत ॥

॥ शान्ति रस वर्णन ॥

थाई जाको शान्त है सब विकार सों दूर ।
सोई शान्त रस कलिन मत सब सुख सों भरपूर ॥

७ विद्या

हरि बड़े कि हरिना बड़े शकुनी बड़े कि श्याम ।
अर्जुन रथ को हांकिये भली करेंगे राम ॥

॥ शकुन विद्या प्रभाव ॥

जाहि जान कर मनुज करहि आपत्ति निरवान ।
निज तन रक्षा करहि वृद्धि धन अरु नर नारन ॥
लहि आरोग्यता सिद्धि कार्य्य अनरथ सब नासैं ।
पर उपकार को करहिं भविष फल मुखसों भासैं ॥
पक्षिन की बोली समझ होनहार जो कहै नित ।
राम प्रेम पूरब बिना, नहीं ज्ञान ये लहै सत ॥
करमन वो फल सभी काल में होय सुपरघट ।
लखि न परत सो कभू जाय जबलों तन मरघट ॥
बन्यो कर्म सों देह, कर्म की ही करतूती ।
कर्महि सों होइ रंक, राउ की बजती तूती ॥
कर्महि एक अलीक है अमिट न कबहूं सो मिटत ॥
भुगतत प्राणी तासु कों, काहूं सो नहिं है घटत ।

प्रिय पाठको ! शुभाशुभ कम का फल सदैव काल होता है । वह अदृश्य है, लक्ष में नहीं आता, उसके जानने के लिए भी

महर्षियों ने मनुष्यों पर अत्यन्त कृपा की है और उन के लिये शाकुनिक शास्त्र बनाया है । उसमें पक्षियों की बोलियों को लिखा है । कारण यह कि पक्षी परोपकारी हैं उनमें यह स्वाभाविक गुण है कि वह मनुष्यों के देखने पर उनके भले बुरे को अपनी भाषा (बोली) में प्रगट कर देते हैं । अब जो मनुष्य उनकी भाषा को जानते हैं वे उनकी बोली समझ कर अपना कार्य साध लेते और जो नहीं जानते हैं वह उसका विचार न कर आपत्ति में फंस जाते हैं इसी कारण शकुन जानना आवश्यक है ।

॥ शकुन प्रकार ॥

दो प्रकार के शकुन हैं चरु, अरु अचर कहाय ।
चर तत्कालै फल करै, अचर सुकालहि पाय ॥
अपर और हू शकुन हैं, तिनको छांड़ विकार ।
पक्षि वाणि से शकुन को, करत सुयहाँ विचार ॥
इन शकुनन को देखिये, फल सु यात्रा काल ।
शकुन शास्त्र अनुसार सोई, भाषत मोहनलाल ॥
प्रथम पक्षि भाषा कहूं ता पाछे फल जान ।
ता पाछे यात्रा विषय, शकुन कहूँ परमान ॥
अपने अपने काज हित सब निज कारज साध ।
तजहु अशुभ कारज करो, प्रेम साधना साध ॥

(पक्षियों की बोल की संख्या)

कौअन की बत्तीस हैं, बोली सुनो सुजान ।
समझ तिन्हैं कारज करहु, भलो बुरो पहचान ॥
श्यामा के दस शब्द हैं, दस फल के दातार ।
सदा जतावत हैं हमें, भलौ बुरौ निरधार ॥

काक भाषा चक्र

कौओं की कवोस बोलियां का चक्र फल सहित

काक भाषा	फल	काक भाषा	फल
कौल कौल	धान्य प्राप्तीहो	कोरं कोरं	धन धान्य बढ़ावै
कुं कुं कुं	लाभ होय	कुरुटं कुरुटं	राज्य मिले यशबढ़े
कोयं कोयं	नृपकी मृत्यु हो	करकं करकं	प्रिय दर्शन लाभ करावे
केयं केयं	हानि करै		
कुरलूं कुरलूं	कल्याण करै	करको करको	लड़ाई करावे
काः कुं कुं	लाश दिखावै	केतं केतं	रत्न की हानि
क्लेन क्लेन	नाश दिखावै	कुरुटं कुरुटं	मिलाप करावै
कुरुतं कुरुतं	लड़ाई करावै	कुल कुल	वस्त्र लाभ करे
कुयं कुयं	पराये धनसे मृत्यु	कैंकंके	कोई आवे
कोधु कोधु	शरीरकी हानि	का का	प्यारे से मिलावे
कै कै	स्त्री मिलाप	क्री क्री क्री	स्त्री मिलावें
कां कां	लाभ करे	कोव कावं	धन पशु का नाश करै
कः कः	अनर्थ करै		
कुल कुल	मृत्यु करै	कुलं कुलं	कल्यान करै
कव कव	मंगल करै	क्लेतं ल्लेतं	पानी बरसे
क्रें क्रें क्रें	द्रव्यका लाभहो	क्रौं क्रौं क्रौं	मंगल करै
कौं कौं कौं	घोरयमदिखावे	केक केक	खेतीका नाश करै

(समय)

कोये की बोली का सखुन प्रातः काल की बोली का लिया गया है। यदि प्रातःकाल के समय कौआ पूरव मुख करके शब्द

करे तो स्त्री, धनादिक मिलै और चित्त की चिन्ता सब दूर होवें अग्नि कोण में बोले तो शत्रु का नाश, दक्षिण में बोले तो दुःख दिखावे, पश्चिम में बोलै तो स्त्री लाभ और वायव्य में बोले तो अन्न दे, नैऋत्य में बोलै तो दंड, उत्तर में बोले तो भय दिखावै और धन की हानि करावै ॥ जो प्रातःकाल ईशान दिशा में बोले तो पराये घर को रोय को सुन पड़े और अपना कोई प्यारा मिलै।

श्यामा बोली चक्र

श्यामा की बोली	फल	श्यामा बोली	फल
चिली चिली	लाभ करावे	अखंड	कार्य सिद्धि
शूल शूल	धन प्राप्ति करावे	चिची	भय दिखावै
जुचि कुचि	पानी बरसे	चिलकु	धन दिखावै
कुचिकु	महमान आवे	चिर चिर	रोग होगा
कीतु कीतु	कार्य सिद्ध हो	चीकु चीकु	मंगवावे

॥ यात्रा काल का शकुन विचार ॥

प्रियवर शकुन शास्त्र की महिमा सुनो न देर लगाओ।
पशु पक्षी की लखहुँ चेष्टा, इष्ट अनिष्ट मिटाओ॥
यात्रा काल मांहि इन सबका, कर विचार चित लीजै।
जो होवैं प्रतिकूल शकुन, तो गमन कबहुँ नहिं कीजै॥
शकुनन को फल सदा यात्रा कालहि में बतलाया।
घर में बैठे लखो नहीं फल, जो ईश्वर की माया॥

पशु पच्छी बतलाते हम को, बुरा भला जो होना।
इन पर ला विश्वास कार्य कर, नही पड़ेगा रोना।
यात्रा काल आय मृग दाहिन, बांयें को चल जावै।।
आदर होय अधिक नर बहु धन धान्य घनेरौ पावै॥
जो आवे बांयें ते दाहिन, धन सो भेट करावे।
चलो जाय नर रुके नहीं, तो माल घनेरो पावे॥
सायंकाल दाहिने ते बांयें, मृगमाला की आवै।
यात्री को सुख होय छेम से रुके नहीं चल जावै॥
श्यामा बोलै दाहिन ओरी, मुख दिखरावे नाग।
गोह मिलै मारग में जानों, दुक्ख गये सब भाग॥
गीदड़ बोलै बांई ओरी, मन मानी हो सिद्धी।
जो दाहिन हो आगे बोले करे अशुभ की बृद्धी॥
रोगी रीछ सुनार ये जो सन्मुख ते आवें।
जो इनके विपरीत होय तो यात्री सुख नहिं पावें॥
नीलकंठ कौ दरशन दाहिन, यात्रा काल जु पावे।
कुशल छेम सों वांछित फल मिले, यात्रा काल सुहावे॥
जो बोलै खरगोस दाहिनो, यात्रा काल प्रसन्न।
करौ यात्री यात्रा सुखकर पावोगे धन अन्न॥
जो मच्छी को लिए चौंच मध रूपारैली आवे।
यात्री जाउ मिलै धन प्रातहिं, जो ऐसे दिखरावे।।

।। स्वान (कुत्ता) चेष्टा फल ।।

पाँव दाहिने से जो कुत्ता, दाहिने अंग खुजावे।
यात्री को शुभ शकुन चेष्टा, कार्य सिद्धि बतरावे॥
वाम पाँव सो बाँए अंग को जो कुत्ता खुजियावे।
ता मति जाव काज बिगड़े, यह सत्यानाश जतावे॥
यात्रा काल स्वान जो अपने कानन को फटकारे।

देत सूचना काम न होगा शकुना शकुन विचारें ॥
जो गदहा सन्मुखते आवै, लड़ैं बिलैया दोय।
तो मतजावो यात्रा को, हानी होय सो होय ॥
चलते समय यात्रा के जो ऐसे शकुन दिखावें।
शुभ हो यात्रा करौ अशुभ लख कबहुँ न घरसे जावें ॥
पशु चेष्टा फल काल मात्रा को तुम को बतलाया।
शकुन शास्त्र से लिखा मोहन करहु जो मनको भाया ॥

यात्रा काल अन्य शकुन फल

यात्रा काल तुम्हारे जो नर स्वच्छ बसन तन धारे। मधुर बचन बोलै हंसमुख हो कारज हों शुभ सारे ॥ जो सन्मुख से आवे ऐसा, नर डाढ़ी बिनु मूंछ। गमन करै तो कारज होगी नहीं किसी से पूंछ ॥ नंगा सिर या अङ्ग भंग जो नकटा सम्मुख आवै ॥ बनो काम हू बिगड़ जायगा जो नर करिवे जावै ॥ चढ़ो ऊंट, भैंसा गदहा पै रोवत सम्मुख आवै लौटे तुरत आंख कर नीची घर सों कबहुँ न जावे। कारौ मुख और केश बखेरे लड़त सामने आवै। अथवा कोई नपुंसक हिजड़ा मारग काट सुधावै ॥ सन्यासी जोगी ललाट सूना ब्राह्मण चलि आवै। तो घर लौट जाय, मत कबहूँ जय तौ दुख अति पावै। रण्डा नारी सम्मुख आवै अशुभ वेष कर धा ॥ नहीं यात्रा करहु समुझ नर होंय दुःख अति भारै ॥ जो तेली सम्मुख आवे तेल लिप्त हों देही। कारज कबहूँ नहीं होयगा ऐसे जान सनेही ॥ जो तेली सिर धरे तेलका भरा पात्र चल आवै। तो कर यात्रा अवशि यात्री बिगड़ा काज बनावें ॥ नारी हो गर्भिना रजस्वला उनमत दृशा दिखावै। सन्मुख से आ जाय तो मत जावना काज नसजावै ॥ जो यात्रा के समय पुरुष स्त्री समेत चाल

आवै । तौ यात्रा को जाउ यात्री सुख से काज बन जावैं ॥ यात्रा काल सामने आवे पुरुष नारि फल लीये । कारज बिगड़ा बने यात्रा जाउ यही धर हीये ॥ क्वारी कन्या और वेश्या जो सन्मुख से आवे । मोहन कहै यात्री तेरा बिगड़ा काम बनाये ॥

[गमन समय अन्य पदार्थ शकुन]

दो०—जब यात्रा करिवे चले, घर सों बाहर जाय ॥
प्रथम सामने आय जो, ताको फल चितलाय ॥

जो यात्रा करते समय, सम्मुख से दही आवे । बिगड़ा काज बना जानो नर, निश्चय ही चला जावे । दूर्वा घृत शाली पकवानों, मच्छी मलय बखानों । शङ्ख वीणा भूषण पुष्पासन पुष्प कमल सिंहासन । गोरोचन, घर काँच शस्त्र, गागरवेली घर बाहन । ध्वजा छत्र और लिये पताका सम्मुख से चल आवे । तो यात्रा को जाउ यात्री मन बाँछित फल पावे । योवन सों भरिपूरि सुन्दरी कामिन कर सिंगारैं । होय सुहागिन भूषण युत दो बिगड़े कारज सारैं । कपिला गाय गायको गोबर शहद, देव की प्रतिमा । व्यंजन पक्के फल कवली के बनस्पती की उपमा ॥ औषधि जलती अग्नि रतन, सोना, चाँदी, ले आवै । जाउ यात्रा काम बने नर शकुन शास्त्र बतलावे ॥ ब्राह्मण धरै तिलक भाल हो शुक्ल वरण हंस मुलिया ॥ सुख अति ही मिल जाय थारमन कैसा ही हो दुखिया ॥ चले वाम दिश संग २ जो जलघट भरा सुनारी । काम बनावे करहु यात्रा, मन में धीरज धारी ॥ सन्मुख सो भंगिन जो आवै, भरा टोकरा लीये । तो चलि जाउ काज कर मनको सिद्ध होय लखहीये । ऐते शकुन

वस्तु के तुमको, हैं जो यहाँ बताये, शकुनी इनके भेद जान कर करते काज सवाये।

(यात्रा समय अशुभ पदार्थ शकुन)

बिना धुंआ के आग रख सम्मुख जो आवे। कंडा सूखे सीस धरै और मूत्र कोच लपटावै॥ कर्र, कपास अस्थि बल्कल बोझा लाड़ी सिरधारै। तिबवा तिलका बना पदारथ आवै काम बिगारै॥ नारी आवे खुले केश नट नंगे सीस झुकावै। मत कर गमन बैठ जा चट में नहिं दुख यात्री पावै॥ लोहा, काली वस्तु, कोयला, काला नर, कलही का। गमन करो नहिं काल यात्रा होय न कारज जी का॥ गुड़ और तेल पदारथ सन्मुख आवे तो बड़िहानी। विष्टा प्रथमहि मिलहि मार्ग में है यह अशुभ निशानी। मज्जाः चाम मास, लोहू और लवण सामने आवे। फूटो घड़ा देख कर यात्री कबहु न घर से जावै। ध्वजा पताका गिरी लखावै अथवा कोई गिरावै। तो भी शुभ कारज को करिबे प्राणी कभी न जावै। चलती समय बिलया आगे काटे दहिने आवै। लड़ती लखैं विलाय अशुभ है पांव न फेर उठावे। पाछा घर फिर जाय करहिं जप, चलै सुसमय बहोरी। ईश्वर करहि काज बन जावे उलट हानि हो थोरी॥ चलती समय वस्त्र अपना जो अटक कहूँ फट जाये। तो यात्री मत जाउ शकुन है अशुभ शास्त्र बतलाये॥ जो सन्मुख से ल्हाश जुआवै संग में रोते आवै। यात्रा को मत जाउ काज नहीं बने बिगड़ने पावै। अपर शकुन हैं बहुत शास्त्र का भेद न जाना जावै। कहाँ तक लिख यह भेद महेश्री तुमको भला बतावै॥ शुभ शकुनों में करहु यात्रा यात्रा काल, सुनाया। शकुन शास्त्र में लिखा भेद सो 'प्रेम' यह तुम्हें बताया॥

अथ ज्योतिष विद्या प्रारम्भ

जय जय जय शिव शिवा जय, जय गणपति महाराज ।
प्रेमसरन चरनन परत, पूण करहु शुभ काज ॥

प्रिय पाठको—यह ज्योतिष विद्या अपार है इस छोटी सी पुस्तक में किसी प्रकार भी नहीं आ सकती इसी कारण इस पुस्तक में एक अत्यन्त आवश्यकीय प्रश्न प्रकरण की उपयोगी बातें लिख कर अन्त में दिशा शूल योगिनी चन्द्रमा और मुहूर्त आदि को कह कर समाप्त करूंगा यह प्रश्न प्रकरण श्री वराह मिहिर की अङ्ग विद्या के अनुसार लिखा गया है ।

(अंग विद्या)

पूर्व आदि दिशा प्रश्न करने वाले आदि का बचन स्थान, लाई हुई वस्तु, इनको देखता हुआ दैवज्ञ (ज्योतिषी) शुभ अशुभ फल को कहै ।

(शुभाशुभ दिशायें)

पूर्व, उत्तर और ईशान कोण को मुख करके प्रश्न पूछे तो वे दिशायें शुभ हैं । वायव्य पश्चिम, दक्षिण आग्नेय और नैऋत्य अशुभ—

(प्रश्नहेतु शुभाशुभ काल)

मध्यान्ह के पहिले प्रश्न पूछे तो शुभ और मध्यान्ह पश्चात्, दोनों संधि और रात्रिकाल ये प्रश्न करने वाले को अशुभ ॥ प्रश्न के समय प्रश्न कर्ता पैर के अंगूठे को स्पर्श करै या हिलावे तो प्रच्छक के नेत्रों में रोग होय उङ्गली को स्पर्श करे या हिलावे तो कन्या का शोक हो । प्रच्छक यदि छाती को स्पश करे तो

उसको किसी प्यारे का वियोग होता है। अपने शरीर से वस्त्र उतारे तो उसके लिए अनिष्ट होता है। पृच्छक वस्त्र लेकर अपने एक पैर को दूसरे पैर से मिलावे तो उसको प्रिय वस्तु का लाभ हो। जो पैर के अंगूठे से भूमि पर लिखे तो खेत की चिंता। जो प्रश्न करते समय ताड़ वा भोज पत्र दीख पड़े तो पृष्टा को वस्त्र की चिन्ता हो। केश तुष अस्थि, भस्म, इनमें से कोई देख पड़े तो पृष्टा
पड़ता है। पीपलमिव साठ माथा कूट बल्व नेत्रवाला जीरा आटामांस सौंप तगरये वस्तु प्रश्न समय देख पड़ें अथवा कोई इनका नाम लेवे तो पृच्छक का क्रम से स्त्रपोष पुरुष दोष रोगी। गर्व, नाश पुत्री नाश, धन, धान्य, पुत्र, द्विपद, चतुष्पद और भूमि इनके नाश की चिन्ता करनी चाहिए।

धान्य से पूर्णमात्र और पूर्ण कलेश देख पड़े तो कुटुंभ की वृद्धि करते हैं। हाथी गौ और श्यान की विष्टा देख पड़े तो कम से कम धन स्त्री और मित्रों का नाश होता है।

प्रश्न के समय पशु देख पड़े तो पृच्छक को भेड़ के ऊन का बना कम्बल मिलता है। इस भाँति हाथी, कलश चाँदी भैंस, बाघ के दर्शन से धन, वस्त्र, चन्दा रेशम के वस्त्र और भूषण समूह पृच्छक को मिलते हैं।

वृद्ध श्रावक या जैन, सन्यासी प्रश्न करते समय देख पड़ें तो मित्र या दूत की चिंता पृच्छक के मन में कहना चाहिए।

प्रश्न के समय शाक्य, उपाध्याय, अर्हत, निरग्रथ निगम और धाबर देख पड़ें तो क्रम से पृष्ट के मन में चार। सेनापति वणिक दासी, योद्धा, दुकानदार, और बन्ध करने के योग्य इनकी चिंता होती है।

प्रश्न के समय तपस्वी देख पड़े तो विदेश में गये की चिंता होती है। केलाल देख पड़े तो पशुपालन की चिंता होती है।

जो पृच्छक यह वाक्य कहै कि पूछना चाहता हूं। कहा, आप देखें। आज्ञा कीजिये। तो क्रम से संयोग, किसी से मिलना, कुटुम्ब लाभ, और ऐश्वय की चिंता, पृष्ठा के मन में होती है। निदेश कीजिए यह वाक्य पृष्ठा कहै तो जय और माता की चिंता होती है। विचार कर मेरा मनोरथ कहो यह वाक्य कहे तो बन्धु चिंता और सब मनुष्यों के बीच में बैठे हुए दैवज्ञ को पृष्टा यह कहे कि शीघ्र देखो तो चोर की चिंता उसके मनमें कहनी चाहिए।

(चोरी प्रश्न)

यदि पृष्ठा उदर का स्पर्श करे तो माता चोर होती है। माथा स्पर्श सगुरु, दाहिनी बांह के स्पर्श से भाई, बाईं बांह के स्पर्श से भाई की पत्नी, ये चोरी करने वाले हैं।

जो प्रश्न करने वाला भीतर का अङ्ग स्पर्श करे तो घर का मनुष्य ही चोरी करने वाला होता है। बाहिर अङ्ग स्पर्श करे तो बाहिर का चोर होता है। इसी भाँति पैर का अंगूठा उङ्गली, जंघा, नाभी, हृदय, हाथ का अंगूठा, उङ्गली समूह इनमें से किसी को पृष्ठा स्पर्श करे तो क्रम से दास, दासी, सेवक, बहिन अपनी स्त्री, पुत्र, और कन्या, चोर होते हैं। इस भाँति अङ्ग स्पर्श से चोर ज्ञात होता है।

॥ चोरी में गई वस्तु न मिले ॥

यदि पृष्ठा अन्तरङ्ग, अङ्ग, को छोड़ बाहिर के अङ्ग को स्पर्श करे उर्फ मूत्र विष्ठा को त्याग करें, हाथ में स्थित वस्तु को गिरा देवें, शरीर को बहुत झुकावे, आलस्य में आकर शरीर को

तोड़े, किसी मनुष्य के हाथ में खाली पात्र देख पड़े, चोर देख पड़े, अथवा प्रश्न के समय हरि लिया, गिर गया, कट गया भूल गया, खो गया, टूट गया, चोरा गया, मर गया इत्यादि बुरे शब्द सुन पड़ें तो प्रश्न-कर्ता को चोरी में गई वस्तु प्राप्त नहीं होती।

भोजन ज्ञान प्रश्न

जो पृष्टा ललाट का स्पर्श करे और उस समय शूक धान्य, यंत्र आदि देख पड़ें तो प्रश्नकर्ता ने उत्तम चावलों का भात खाया। छाती स्पर्श करे तो साठी चावल और ग्रीवा स्पर्श करे तो जौ की रोटी आदि भोजन की है।

गर्भिणी प्रश्न

जो प्रश्न के समय में स्त्री अपने पेट पर हाथ रक्खे वह गर्भवती होती है। जो उस समय बुरा निमित देख पड़े तो उसका गर्भ गिर जाता है, पीठ वा बैठने का पट्ठा आदि उसको दबाकर अपने पेट को खोवे वा एक हाथ में दूसरे को रख कर पूछे तो भी उसका गर्भ पात हो जाता है।

गर्भस्थिति होने का प्रश्न करे और नासिका के दक्षिण छिद्र को स्पर्श करे तो एक महीने के अनन्तर गर्भ रहता है। बाल छिद्र का स्पर्श तो दो वर्ष के अनन्तर गर्भ रहता है। इसी प्रकार दक्षिण बाम कर्ण स्पर्श से भी जानो। जो दहिने कर्ण के छिद्र का स्पर्श करे तो दो महिने में और स्तन का स्पर्श करे तो चार महीने में गर्भ स्थित होता है।

जो स्त्री प्रश्न के समय चोटी के मूल का स्पर्श करे उस के तीन पुत्र और दो कन्या होती हैं कान का स्पर्श करे तो पाँच पुत्र

हाथ का स्पर्श करे तो तीन पुत्र, कनिष्ठा से लेकर अंगुष्ठ तक के स्पर्श से क्रम पूर्वक एक आदि पाँच तक पुत्र हैं अर्थात् कनिष्ठा को स्पर्श करे तो एक पुत्र इत्यादि।

दहिना उरू स्पर्श करे तो दो कन्या, और बांई उरू स्पर्श करे तो दो पुत्र उत्पन्न होते हैं। ललाट का मध्यम भाग स्पर्श करे तो तीन पुत्र और ललाट का अन्त भाग स्पर्श करे तो चार पुत्र उस स्त्री के उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न प्रकार

धातु, मूल और जीव तीन प्रकार के प्रश्न होते हैं।

स्वच्छाया प्रश्न

अपनी छाया को तीन गुनी करके उस में १३ मिलावे फिर उस में आठ का भाग दे, जो १ शेष बचे तो लाभ, २ से हानि, ३ से सिद्धि, ४ शेष बचे तो शोक, ५ बचे तो वृद्धि, ६ बचे तो मृत्यु, ७ बचे तो वृद्धि।

पथा प्रश्न

तिथि वार प्रहर नक्षत्र सब को जोड़ कर योग में सात का भाग दे शेष का फल इस प्रकार बतावे। १ बचे तो चल दिया, २ बचे तो माग में है, ३ बचे तो आधी दूर पहुँचा, ४ बचे तो गांव के पास आगया, ५ बचे तो मार्ग से लौटा यानी पीछा गया, ६ बचे तो पन्था रोगी।

नक्षत्र नामावली

नक्षत्र २७ हैं उनके नाम इस प्रकार हैं।

१ अश्विनी	१० मघा	१६ मूल
२ भरिणी	११ पूर्वा फालगुनी	२० पूर्वाषाढ़

३ कृतिका	१२ उत्तरा फालगुनी	२१ उत्तराषाढ़
४ रोहणी	१३ हस्त	२२ श्रवण
५ मृगशिर	१४ चित्रा	२३ धनिष्ठा
६ आर्द्रा	१५ स्वाति	२४ शतभिषा
७ पुनर्वसु	१६ विशाखा	२५ पूर्वाभाद्रपद
८ पुष्य	१७ अनुराधा	२६ उत्तरा भाद्रपद
९ अश्लेषा	१८ ज्येष्ठा	२७ रेवती

तिथि योग

तिथि पांच प्रकार की होती हैं जिन से सिद्ध और मृत्यु दो प्रकार के योग बनते हैं वे तिथियां इस प्रकार से हैं।

सिद्धयोग			मृत्यु योग		
नन्दा	१।६।११	शुक्रवार	नन्दा	१।६।११	रविवार
भद्रा	२।७।१२	बुधवार	भद्रा	२।७।१२	चन्द्रवार
जया	३।८।१३	सोमवार	जया	३।८।१३	बुधवार
रिक्ता	४।९।१४	शनिवार	रिक्ता	४।९।१४	गुरुवार
पूर्णा	५।१०।१५	गुरुवार	पूर्णा	५।१०।१५	शनिवार

फल—सिद्ध योग में कार्य करें तो काय सिद्ध हो जावै।
मृत्यु योग में कार्य करै, तो दुःख घनेरा पावै॥

दिशा शूल विचार

दोहा—सौम, शनीचर पूर्व दिशि पश्चिम रवि, भृगु वार।
उत्तर मंगल बुद्ध गिन, दक्षिण को गुरुवार॥

योगिनी वास

दोहा—पड़वा पूरब, दैज को, है उत्तर में बास।
अग्नि कोण है तीज में नैऋत चौथ सुपास॥

पांचें को दक्षिण रहें, छट पश्चिम जान ।
सातें वायव कोण लखि, आठें को ईशान ॥

योगनी फल

दोहा—शुभफल दायक यौगनी, बांय पीछे पीठ ।
दहिने सन्मुख शुभ नहीं, कारज पहिले दीठ ॥

चन्द्रमा विचार

दोहा—सवा दोय दिन रहत है, इक राशि पर चन्द्र ।
जब होवे जोदिशा में, तभी देख शुभ मन्द ॥
घटिका सो पैंतीस में, आठों दिशी में जाय ।
काल चन्द्रमा की चतुर, प्रेम कही दरसाय ॥

चन्द्रमा घड़ी भाग चक्र

दिशा	भोग घड़ी	दिशा	भोग घड़ी
उत्तर	१५	ईशान	१४
दक्षिण	२१	अग्नेय	१५
पूर्व	१७	वायव्य	१६
पश्चिम	१८	नैऋत	१६

राशि नाम

दोहा—राशि सु बारह होत हैं, सुनिये तिनके नाम ।
ज्योतिष मत फल कहत हों, नहीं और से काम ॥

मेख, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन ।

राशि चन्द्र चक्र

चौ०—मेष,, सिंह, धन, पूरब जान । मिथुन, कुम्भ, तुला, पश्चिम मान ॥ कक, मीन वृश्चिक दिश उत्तर, वृष कन्या और मकर दक्षिण कर ।

यात्रा करण सिद्ध योग

दिशा शूल बायों लहै, राहू योगिनी मूट ।
सन्मुख जो चन्द्रहि लहै, लावे लक्ष्मी लूट ॥

जन्म कुण्डली का विचार

जन्म कुण्डली में रहें बारह कोष्टक जान ।
नाम कोष्टक कौ कहों ज्योतिष के परमान ॥
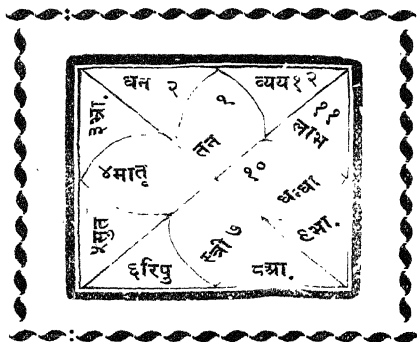
मुहूर्त कर्म विचार

खेती करने का मुहूर्त

मृगशिर, स्वांति, मघा, पूर्वा ३, हस्त, कृतिका, भरणी उत्तर,

चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, पुष्य, इन नक्षत्रों में खेती का प्रारम्भ करे तो लाभ हो।

विद्यारम्भ मुहूर्त

अश्विनी, हस्त, रोहिणी, पूर्वा ३ उत्तरा, मूल, रेवती, इन नक्षत्रों में बालक को विद्या पढ़ाने बैठावे।

धन्धा करने के मुहूर्त

रेवती, मृगसिर, चित्र, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में धंधा व दुकानादि करे।

ज्योतिष शास्त्र में और भी अनेक उपयोगी बातें हैं वह इस में नहीं लिखी गईं हैं, यदि ज्योतिष शास्त्र का अधिक लक्ष करना हो तो, ज्योतिष ग्रंथ मंगाकर अवलोकन करो ॥ इति ॥

कोख विद्या

प्रथम प्रकरण—शारीरिक समाधान

नारी के जा अङ्ग में गर्भ धारणा जान। ताही को पण्डित गुनी कोख बहुत निर्मान ॥ गर्भाशय हूं कहत हैं वैद्यक साहि विचार। ताकी अब रचना कहत गुनि जन चित्त लेउ धार ॥ प्रथम शरीरी भेद सब कहूँ ग्रंथ मत गाय। पाछे रजना कौख कहुं ब्यौरे बार सुनाय ॥ रज वीर्य से बनी यह काया कर्म कमाल। कारीगर करनी सुघड़ भला रचाया जाल। पंच तत्व का पूतला भाषत हैं सब कोय। तत्व मिला खेलन लगा तत्प विसारी होय। रज वीर्य तिय उदर में पड़ा गर्भ मध जाय। बना सकल नव मास में प्रगटा सोई आय। काया में भर रहा ऐता और विकार। सप्त धातु त्रिय दोष दश इन्द्री छिद्र निहार ॥ उदर मांहि अंतड़ी बनी जटर

अग्नि को जन्त्र। कूप कलेजा कूख अरु हृदय कमल को तन्त्र॥ वृक सुतागें पृष्ठ में इन्द्री गोलोक एक। वीर्य कोष इक न्यार ही रचा गया सुठि भेष॥ नस्य जाल फैलाय यन अस्थि तीन सौ साठ। घर बांधी सब थान पर तब राचा यह ठाठ। वैद्यक मांही देखलो याका सब ही काम। अब में रचना कहत हों कोख कला सुठि धाम॥

कोख रूप

मत्स्य समान अकार है रहन उदर के माहि। मार्ग योनि आका रहा वैद्यक शास्त्र सुनाय। तोन चक्र जामें रहे तींजे अन्त विचार। कोख मत्सस्य आकर यह रही उदर मध सार॥ चक्र समीरण प्रथम है चाँद मसीपुनि जान। तीजा गौरी चक्र है जान चतुर सुजान॥

चक्र स्वरूप

चक्र स्मीरण सब के ऊपर ढक्कन सम तेहि जाना।
चन्द्रमसी रजधानी रजकी नारि अंग पहचानो॥
गौरी गुन भरभूर वीर्य की कला तिया तन भारी।
तीनों चक्र विशाल काल करते हैं बारी बारी॥

चक्र गुण—प्रथम चक्र गुण हीन है दूजा गुणसों न्यून।
तीजा गुण भरिपूर है, सुनिये इनके गून॥

चक्रवीर्यगुण—सुघड़ स्मीरण पहिला चक्कर रज वीर जे बहावे। ताके नीचे चान्दमसी रज अधिक सुवीर्य मिलावे। ताते कन्या प्रगट होत है स्वल्प वीर्य का अंशा। चाँदमसी गुण चन्द्र देख लख कहा करूं प्रशंसा। चन्द्र तीय को एकहि चाला घटन बढ़नगति जोय। पखवारा चांदनी विमल पक्ष अन्धेरा होय॥

गोरी कला वीर्य की वरनी गर्भाशय के माय। वीर्य भाग बढ़ि रज की कमती पुत्र देय हित जियरी ॥

कोख बन्द।

चौदह दिन प्रतिमास कोख रह बन्द सुनो सुज्ञानी।
तिन्ह दिन रति वर्जित कहि शास्तर सुनो सकल गुणखानी ॥

रजकाल—मास मास प्रति नारि अंगसों बहै रक्त सो जानी।
रज का काल कहा सुन रसिको, कर्म्म बड़ी हानि ॥

रज के दिन।

तीन दिना रज के कहियत हैं नारि धर्म्म सों रहये।
जो कुचाल कछु करै आपदा आयु भर फिर सहये॥
रक्त श्राव रहता है इन दिन करो बड़ी होशियारी।
रखा नारी को टार अलगहो दीजै स्वल्प अहारी॥
प्रथम दिवस की रजकी संज्ञा दूजे दिन चण्डाली।
तीजे दिन की पापिन ऐसे ज्योतिष कहा सुचाली॥
चौथे दिन होय शुद्ध कार्य तब बात करै पति सेती।
मन इच्छा फल लेय कभी निष्फल नहिं जावे रेती॥

रजारंभ काल

आरम्भ बारह वर्ष से रजका हो तिय अंग।
पूर्ण वर्ष पंचास पर बहुरि न जगे अनंग॥

प्रथम ऋतु तिथि निर्णय

दोहा—अष्टमी नवमी, द्वादशी तेरस पूरन मास।
उत्तम भरी सुहाग से संतत सुख चहुँ पास॥
दोज, तीज, सातैं, चवथ, दशमी चौदस तीस।
मध्यम फलं रज त्याग का भाषा है अवनीस॥

पड़वा पाँचें छट कहीं, एकादशी सुजान ।
अतिनिकृष्ट रज त्याग की नारी विधवा मान ॥

प्रथम ऋतु त्याग काल—प्रात:काल, मध्यम कहा, सायंकाल निकृष्ट । रात्रिकाल उत्तम कहा, रजत्यागे लहि सृष्टि ॥

सन्तानोत्पन्न योग रज लक्षण—शशा रक्त सम जानिये रज उत्तम है बोल । निश्चय ही सन्तान को, कर उत्पति सबकाल ॥

उत्तम वीर्य के लक्षण

श्वेत स्फटिक मणी सम चिकना पतला होय ।
चेप युक्त भारी विमल, उत्ताम वीरज सोय ।।

गर्भ योग

शुद्ध वीर्य रज रक्त शुभ, बार तिथि अरु काल ।
चित्त प्रसन्न तिय पुरुष दोउ, गर्भ योग तत्काल ॥

केलिकाल निर्णय

चौपाई

सोलह नारी पुरुष पचीस । केलिकाल बरना जगदीश ।
पुरुष सवया कामिनी ओछ । उत्पत संतत रहे न पोच ॥
युवा काल सबसे ही अच्छा । वा जब सों मन दो न रच्छा ।

केलिकाल निषेध

बाल काल तिय रजन दिखाया । केलि करत सो पाप कमाया ।
कच्चा वीर्य अकारथ जाय । रूप रंग बल बुद्धि गंवाय ॥
युवा आयु भये सो पछताय । जो बालापन वीर्य्य बहाय ।
दोहा—कली टूट नहीं फूट हो, बिगड़ा बीज न ऊप ।
बोय अकारथ खोय श्रम, रक्षा करहुँ आप ॥

वीर्य के गुण

सार पदारथ उनके माहीं वीर्य एक गिन गिन लीजै । ताके गुण अद्भुत सुन सुन्दर बृथा न किंचित दीजै ॥ बल का बल है तन के माहीं, शक्ति एक चमकावे । विद्युत आकर्षण कहि ताको खेंच और को लावे ॥ जब धीरज रुकता है तन में तब देखो मन लाई । सुन्दर रूप तेज की मूरत सूरत लगे सुहाई ॥ काला रंग होय तिस पर भी, जोवन छटा जमावे । देख युवा सबका मन ललचे, कामिन काम सुहावे ॥ देखत ही खेंचत है चित को अति ही चाह बढ़ावे । अंग २ युत शोभा सुन्दरी सरस अनंग दिखावे ॥ कल कपोल मृदु गात मधुरता ओष्ठन रस अधिकावे । ऐन मैन कन्दर्प रूप धर मन इच्छा सुख पावे बन बलवान पुष्ट रख काया, माया सभी कमावे । यश प्रताप आदर ले सबस धन अरु धाम बनावे ॥ विद्या आवे सकल कला को, भेद अनुपम पावे । रहै निरोगी बना, नींद आलस मद नहीं सतावे ॥ ढाँचा ढीला पड़े न तनका, नहीं बुढ़ापा व्यापै । वीय रोक तन ऐते गुण को, पावे मानुस आपै प्राणायाम करे फिर तापर सत योगी बन जावे । आसन मुद्रा लगा समाधी, सिद्ध जन्म फल पावे ॥ एक वीय में गुण हैं ऐते, अपर अनेक न जानों । सकल कला चेतन्य करै निश्चय तन भूप पिछानो । जिमि पौधा सद्बीज पाय के पुष्ट वृक्ष बन जावे । मूल वीज यह बीज देह का तस ही देह बनावे ॥ जो यह करे अकाल नाश, अपने कर आपही मारे । सत्यानाश करें सन्तति को निर्बल मुख हीं कारे । सन्तत रोगी रहै प्रमेही, अति आलस के राजा । मरें अकाल वीर्य को व्यय कर नष्ट करें सब काजा ॥ याही ते वीर्य की रक्षा सबही सब विधि कीजै । अल्प काल ही में लख चेटक, चित्त प्रेम सो दीजे ॥

रज की प्रशंसा

जिमि पुरुषन के अंग वीर्य है, नारिन में रज जानों । अंग अनंग बढ़ावे सुन्दरि, तेज रूप गुण खानो ॥ पुष्ट काय सुन्दरी बनावे सन्तति अति उपजावे । प्रसवकाल का दुःख न व्यापे जो रज शुद्धि पावे । पुरुष जु सुख बीरज रख पावे, रज ते तितनेहि नारी ।। यामें संशय नहीं करहु रज रक्षा है पिय प्यारी ।

चेतावनी

रज बीरज रक्षा करहु सदा पुरुष और नार ।
शिक्षा नित प्रति बालकन करहु प्रेम हिय धार ॥

स्त्री पुरुष सनातन वीर्य्यावस्था

स्त्री सोलह वर्ष की, पुरुष बरस पच्चीस ।
होवे वीर्य्य समान दोऊं, भाषत चरक मुनीश ॥

गर्भ धारण काल

जब तिय हो तिय धर्म्म सों, तीन दिना तब टाल ।
चौथा दिन सुनिये भला, जिही गर्भ को काल ॥

पुत्रोत्पन्न के दिवस

ऋतु से चौथा छटा आठ दस बारह चौदह सोलै ।
पुत्र होने के दिवस बतावत कोख वाणि सुत बोलै ॥

कन्या उत्पन्न के दिवस

पाँच सात नौ ग्यारह, तेरह पन्द्रह जान ।
कन्या होने के दिना, कोख कहे परमान ॥

अन्योक्ति

अधिक वीर्य सों पुत्र हो, रज सों कन्या मान । रज वीरज सम होत ही, सहज नपुंसक जान ॥ धन्वन्तरि का बचन यह, सभी करो प्रतिपाल मोहन सोई बरनन कथ्या, कभी न चूको चाल ॥

गोलयुक्ति

गर्भ स्थापन काज पुरुष अपना स्वर दाहिन राखे । नारि वाम स्वर होय जन्म पुत्तर का शास्त्र भाखे । वाम वाम दोउ मिले जन्म कन्या का होय सुखारी । दाहिन दोउ मिल करें लोग उपजायें नपुंसक भार ॥

विचित्रियोग

पुरुष अंग आधी तिया पुरुष तिया अधिवान ।
वाम दाहिने ति पुरुष ऐसे वेग पिछान ॥

गर्भ परीक्षा

दाहिने अंग जो तिया का चेतन मोट दिखाय । पुत्र जनेगी सो तिया निश्चय कहिये ताय ॥ बांया अंग उज्जल लखा कन्या कहु तत्काल । मध्य उदर लखा जने नपुंसक बाल ॥

गर्भ लक्षण

ऋतु का बन्द हो जाना स्तन तलपट, आकृति बढ़ाना ॥ मंडप श्याम, युगल रतन तन गभ के लक्षण ऐसे पढ़ना ॥

गर्भ रक्षा

गर्भिणी को चाहिये सदा, करें नहीं दुष्काम । रहै प्रसन्न चितही बनी, तजकर वाणी वाम ॥ ऊच नीच आवागमन त्यागन करै विचार । तेलांजन भयभीत सों रहे सदाही न्यार ॥

प्रसव प्रयत्न

अब परे भये, प्रगट गर्भ का काल । गर्भिणी दुख पाछे अती, महीने होय दयाल ॥ जो प्रसूति त्यागे नहीं, दर्द अति होय । तेल अरंड सूनाभि पर, मलो प्रसव सुख जोय ॥ अथवा कचल साँपकी, मरुवा धूनी देय । खैच निकारै तत छिन प्रसवणि सुक्ख सुलेय ॥ यन्त्र चकाबू काढ़ कर, कास्य थालिका मांय । दिखा पियावे घोलकर प्रगट प्रसन्न है जाय ॥ ऐते यत्न सु वेग कर, दुख नहि देवें बाल । प्रथम रहस्य पूरन कियो, गुप्त सु मोहन लाल ॥

द्वितीय प्रकरण नारी जाति भेद लक्षण

चार तरह की नारि जन, कहीं चतुर मति गाय । पद्मिनि, चित्रणी, शंखिनी, हस्तिनि गति समुदाय । डाकिन शाकिन राक्षसी, कर्कश, नागिन साँच । पतिका परपतिका कही कुलटा नव विधि बांय ॥ और अनेकन नायिका भेद सु अंश दिखाय । सबके गुण लक्षण कहों, सबहीं विधि समुझाय ॥

पद्मिनी लक्षण

रूप रंग उज्जल महा चित्त दया की खान । पूजा रत भक्ती सहित, केवल प्रीतम प्रान ॥ अंग सुबास अनग रुचि, न्यून महा सुख दैन । भागभरी पति सुख करी, खरी जगावे मैन ॥ केवल पति सों हेत नित, पति अज्ञा प्रतिपाल । भाग जगावे पीय को, देय राजसुख बाल ॥ लाज भरी नहिं लखे और को पति सों प्रेम बढ़ावे । मोहन पद्मिनि नारि जगत में बिरवा ही नर पावै ।

चित्रिणी लक्षण

सकल शरीर बनो अति सुन्दर, साँचे कोसो ढारो।

लखसुख उपजै ताहि चित्त आकषण करवे वारो। दया चपलत संग काम मृदु हास्य सुबात बनावे। पति सों राखे प्रेम नेम नहि नरपति नेह बढ़ावे॥ हास्य विशेष नेह उपपतिसों पद्मिनिसों यह कामिनि। बनी चित्र सम सुन्दर सुख दे रहवै सदा सुहागिन। प्रेम सगन्ध बात तन याके कमल सरीखी आवे मोहन चित्रिन नारि जगत में भागवान नर पावे॥

शंखनी लक्षण

दीरघ भुजरान विमल रूप को रेख देख मन चाली। हास्य करी सुठी खरी अनंगन, अंगन बहु मत वाली॥ करत मसखरी लज्जा परि हर पति सों नेह न राखे। प्रेम करे इच्छित पुरुषन सों कली २ रस चाखे॥ भूषण चीर बनावे नित प्रति, काम कबासु प्रबीनी। सत्यानाश करे सब घरका, पति गति नेह न चान्हा। कपट स्वभाव क्रूर चित चंचल, कपट स्नेह ना मानहि। आलस मद सों भरा रहत अपनी ही नित २ ठानहि॥ ऐसी नारि मिले जा पति के भाग फूट गये जानो। देश देश बदनाम नक दे, अन्तसु यहि पहिचानौ॥

हस्तिनी लक्षण

मोटो तन भुज दण्ड कटि, निपट निलज की खान। बतकट मुंह चिढ़ प्रीत हर, पति सौं रहै रिसान। जाके चित में रहन नित, क्रूर कर्म्म की बान। जात पांत कुल कान की, ताके तनक न कान॥ कुलटा बन उल्टा करे, सभी धनी का धन्ध। मोहन हस्थिन नारि अति बुरी रहत मद अन्ध॥

डाकिनी—स्वारथ रत जाने सही, करे और सौं हेत।
कुल घातिन चित चांगलों, यह डाकिन को खेत ॥

शाकिनी—अपने मतलब के लिये, सोहें खाय हजार।
काम बने फटकार दे, शाकिन विकट कुनारि ॥

राक्षसी—जार पुरुष के हेत सों, पति को डारे मार।
ताहि राक्षसी जानिये, याके तनक न प्यार ॥

जोगिनी—जोग मिलावे जुक्ति सों, बातें रखे छिपाय।
मुख से नहिं भाषें कबहूँ योगिन कहिये ताय ॥

स्वपतिका—निज पति ही सों रमे नहिं परपति सों काम।

परपतिका—निजपति परपति दोउन सों रह परपतिका बाम।

कुलटा—बहु लोगन सों जो रमें ताको कुलटा जान।
मोहन लक्षण तियन के ऐसे करे बखान ॥

तृतीय प्रकरण-पुरुष लक्षण

शशक लक्षण

दोहा—सतभाषी भक्ती भरा खरा दया प्रतिपाल।
सुरत न्यून सदा पुरुष, शशक सु मोहनलाल ॥

शशक शरीर महा अति कोमल, दया मया की खान। शीलवन्त गुन आगर नागर, धर्म कर्म लहि मान। बागविलास चतुर हितकारी, पुरुषकार रत भारी। स्वल्प सुरत आहार सु बोलन हरत सु पीर महारी॥ बचन रचन दृग मृग सम सुन्दर, रूप सरूप खरौसो। चितवन चारू हसन मृदु बोलन जादू जोर करोसो॥ सुन्दरता शुचि अंग रुचिरता, सुख देवे की बान। अतर अरगना लेपन सो हित, करत नित्त सुख बान॥ कमल गंध तन केलि खेल में, आवत अतिहि सहावन

शशक पुरुष के लक्षण ऐसे, कहत शास्त्र मन भावन बरन प्यार रखत सब ही सो, सबही प्रीति सुमाने। विद्यावन्त गुनी ज्ञाता बड़ि कलबज छल नहि आने। लग्न प्रबल ग्रह केन्द्र विराजै अष्ट सिद्ध से दाता। रहै असवारी खरी द्वार पै, चाकर चतुर सुहाता॥ सब कोई सुख पावै जासों, लाभ अनेकन लावै। तीय पीय लगि हीय अबर नारी को कबहुं न सेवै। भाग्य बुलन्द होय नर ऐसो, सौ में एक सु जानो। जा घर जन्म लेय ता घर की, चेरी बसुधा मानो॥ पूर्व पुन्य सो शशक पुरुष जन्मे है घरमें आई। मोहन बरने कहाँ तलक कुछ मित्र मुख्य बरनाई।

मृग पुरुष लक्षण

सिठ बोला लज्जा भरो, चपल चित्त मत वीर।
हंस मुख सुठि कामी घना, बचन पाल अति वीर॥

मृग पुरुष के लक्षण ऐसे, सनो सकल चित लाई। सुन्दर गात सहात कनक सम, तापर छटा सवाई॥ सकल अंग अत्यन्त सु सुन्दर सांचे को सो ढारो। नासा दसन ग्रीव सुठि शुचि अति, स्वच्छ चपल हित कारो॥ बुद्धि विशाल हंसन मृदु बोलन, वशीकरन मत बारो। मन मोहन रस रंग संग बस काम कला उजियारो॥ लज्जा भरो खरो मन मोहत, सोहत नेह न भारो। चित्त उदार धरम की मूरति कर्म न रेख करारो। काम कला कल बलहि स साधत, समय सुरत रस खानी। वशीकरण मन मोहन तियकर, मृग की चाल सुजानी। अल्प बोल नहिं करत ठटोली, हंसमुख मृदु मुसकावै खल्प चलन भलन रस रीझ खोज प्रिय हास्य सुबैर जतावै॥ सुरत लहनार पराई बाल न तकत खरो सो। रस नी बात न

जान करत नहिं प्यार प्रवीन परोसो। सुन्दर नारि प्यार जाही सों, कुरंग पुरुष जो मानें। काम कला का गुनी अधिक, याही को तिय पहिचानें॥ रूप अनूप लवण द्युति भारी, छटा छबीली मोहै। पंच बान शर तान लगावत बलि बिलाक रहि कोहै॥ नारि पियार करत तिह भारी, ताके उर अधिकावैं प्रीति नारि की रचैन कछु हूँ, निज तीय प्रेम बढ़ावे॥ बचन जु बोले कबहुँ न टारे पन पारे सब टारी। बीस बिसे का पुरुष मिरग है, कहं लग कहों पुकारी॥ भले भाग जाके हैं ताको कुरंग मिला वर प्यारा। मोहनलाल धन्य अबला, सोई जन्म जगत महं धारा॥

दोहा—नाद बाद संगीत शुभ सकल कला करबीन। धनी गुनी चातुर महा, कुरंग पुरुष परबीन॥ गात दूबरो ऊजरो दयामय को रूप। शशते दूजो मिरग वर, पुरुष नरन में भूप॥

वृषभ पुरुष लक्षण

क्रूर स्वभाव उतावला, निर्लज महा दुख देत। कपटी कच लंपट हठी कामी कठिन कुखेत॥ बात कहे नट जाय सो, कबहु न पूरे पार। मोहन ऐसे पुरुष को, दूरहि रखिये टार॥ क्रूर स्वभाव कपट की मूरत सूरत लगैं न प्यारी। तन स्थूल नेत्र छोटे से करण जु लघु विस्तारी॥ रस विनोद लवलीन गात्र रूखो सूखो द्युति कारी। स्वारथ रत मदमत्त लंपटी, छैल-मैल उर धारी॥ परतिय गामी पुरुष बृष की जात रहत कवि ओई॥ प्रीति रीत नहिं रखत काहु सों, दुर्मति सत मत खोई। मैलो गात भेषहु मैलो करत नीच सों प्रीत। बुध विवेक नहिं कला कुशलता अरि समगत रतरीत। मोहन द्रोह सदाही राखत, तके पराई नारी॥ दुष्ट भ्रष्ट मत कुटिल कुकर्मी कलह प्रिया रुचि रारी। चित चंचल रुचि रार मचावत, नित्त स बातें मारे। निज मतलब के काज

आतुरो परको काज बिगारे ।। इन्ह सों प्रेम करे भले नाही, अरि- ते सख वरु पावे । अहि सम करनी जासु मनहुं पय प्याय सुविपहि बढ़ावे ॥ जे परकाज नाश के कर्त्ता, भर्त्ता दुकव सुरैना। मोहन बृषम पुरुष जगमाँही, खोटा खरा न कहना ॥

सो०—बदनीयत बदकर, बद्क्रर बदी करत सो।
प्रेमन सुरत विचार, मोहन बृषभ गंवार बढ़ ॥

अश्व पुरुष लक्षण

अश्व सुमूरत झूठ की सांच मांच नहिं और। कामी खोटा चोर अति स्वारथ चित दौर ।। घातक हित मारत सदा अपनी दाव विचार। मोहन ऐसे पुरुष सों कबहुँ न कीजे प्यार ॥ अलस की सुरत बनी कुटिल कला के रूप। बृष के बाबा अश्व थे, बने भले कुल भूप ॥ तन दीरघ भुज दण्ड दीघ सो कटि जंघा सब मोटी। चंचल महा नींद मद मातो, बात करत अति खोटी ॥ जे नहिं प्रीति रखत काहूं सो घात करे सब सेती। मित्र मार नहीं प्यार दुमती रखेन रंचक रेती ।। वासों करत मित्रता पावे दुख नहिं सख लवलेशा। बचे भाग सों अपने नहिं रह निश दिन मरन अन्देशा। पापी पूर्ण प्रीति न जानत नहिं रस खानी। इनसों नेह करो नहिं कबहूं, नेह करै बड़ि हानी ।। कच लंपट कुल कुटिल कामिनी बिनु नहिं ताकों चैन । रहै निसवासर काम पगोसों दुरत मीत दुख दैन ॥ क्रूर चित्त तनक न दया, अपुन भले की चाह। पति पितु पत्नी प्रीति न जाने अश्व पुरुष अवगाह कहाँ तक कहों कुटिलता इनकी एते में लेउ जानी। पर बंचक रंचक नहिं लज्जा कर्म करे दुख खानी।

पुरुष प्रकृति

बात पित कफ तीन हैं, प्रकृति पुरुषन मांहि। बाचाली अरु शुष्क तन बातल पुरुष दिखाहि ॥ चित्त प्रकृती के मनुज, क्रोधी केश सफेत। बुद्धिवान गम्भीर बुध, कफल मनुज को खेत ॥

स्त्री अवस्था भेद

सात वष की कन्या जानो, आठ वर्ष की गौरी मानो। तेरह सोले २० सुआय, वेस किशोरी कहिये ताय ॥ तरुणी तीस वर्ष तक जान, प्रोढ़ा सो चालीस बखान। फिर बृद्धा वपु कर तन ध्यान, कबहूँ न रत रस की मन ठान।

चतुर्थ प्रकरण

स्त्री सामुद्रिका

पगतली ममि नहीं छुयें जासु। मरजाय पति ब्याहत ही तासु ॥ दीरघ सु मध्यमा जाकी देख। कह बरस दोय में राँड वेख ॥ गंभीर नाभि जाकी दिखाय। रहे श्रवण सूप सम तासु छाय ॥ नृप को केहु गेह में बास पाय। तबहुं दरिद्रता संग रहाय ॥ निद्रा नित जाको अति सुहात। अरु क्षुधा लगी नितही दिखात ॥ जिव्हा कठिनाई जासु पेख। नहिं सुक्ख लहहि कह मुख्य देख ॥ कुच ऊंच एक छोट जान। अंग अंग छोट बड़ नहिं समान ॥ वतरात ग्रीव जावे सु फूल। तज तीय प्रीति कर नहीं भूल ॥ जो रोम होय सब गात जान। दुर्बल तन रहसी सदा मान ॥ जाके कपोल पर कहत बात। होय प्रगट कूप सम सो दिखात ॥ निश्चय ताकी तू कर पिछान। मरजाय मातु पितु बरतमान ॥ हो अधर श्याम तालू सुजान। नख दंत अपर रसना सुमान। पढ़ कोक कहो चातुर सुजान ॥ रहिसी दरिद्र करै सुक्ख हानि ॥ गमन के समय जो धुरि उड़ाय। तुम देउ कलंकिन तिहि बताय ॥ अति उदर बड़ा जाको तु जान। कहो बाज तीय चातुर सुजान ॥ सुन गोल नेत्र जाके तू देख। कहो कुलटा ताकू मत विशेख ॥

पुरुष सामुद्रिक १

सुजा हथेली मध्य मीन की रेखा सूधी जावे। धनी गुणी सम सुखी सर्वदा यश कीरत नर पावै ॥ जौ का चिन्ह अंगूठा मध्धे जा नर के जु दिखावे। बस भी सुख से रहूँ जगत मैं भाग्यवान कहलावे। पद्म कोण षट अष्ट छत्र अरु ध्वजा खड्ग शुभरेख। नामी नर कहदे जा जासों परा हथेली देख॥ कर में रेखा अधिक जासु के अंगुरिन बीच दिखावे। निश्चय वह कंगाल रहै नर विद्या ओछा पावे॥ कटि मर्कट सम जाकी देखहु निर्धन ताकू मानों। केरि कटि सुन्दरी पियरा राजा ताहिं बखानों॥ जाके नेत्र अरुण हों प्यारे मिलत सुमुख मुस्कावै। सदा तिया का पिया हिया लगि जिया किया जस पावे॥ रक्त नेत्र में डोरे जाके भोहें तरेरी जानों। दाँतन मध्य बीच हो ताको अति गुनियाँ पहिचानो॥ गोरे रंग का शूद्र लखो तेहि जानों नटखट भाई। बामन श्याम रंगका समझो कुटिल गती कमनाही॥ कल कपोल पर तिल हो जाके गुप्त अंग पर सोहे। तिय ताकी चेरी निर्बेरी सबहिन को मन मोहे॥ कोत गर्दन वार न छाती कंजी आँखसु न्यारा। छली प्रपञ्ची मतलिबिया अति क्रूर करम मतवारा॥

पञ्चम प्रकरण

❀ मिश्र वार्ता—अर्थात् जोड़ा मिलान ❀

चार भांति के पुरुष कहे वर चार तरह की नारी। तिनही के संयोग योग तें रति हों तीन प्रकारी॥ समरति उच्च नीच रति कहिये गुन ताके सुन लीजे। रसिक रहस कर चित्त बात पर ध्यान हमारे दीजे॥ सम रसि में रहे प्रीति परस्पर सुख सन्तन हो भारी। उच्च रती में प्रियतम बल नि ल तिय

❀ यह ज्योतिष का गूढ़त्व है इसी के अनुसार वर्तमान काल में विवाह होने के प्रथम ही वर कन्या के जोड़े मिला लिये जाते हैं

आन महारी ।। नीच सुरत में सुख नहीं तनकहु, रहै परस्पर रारी।
तातें सुभ जोड़ा मिलाय बर, रचहु ब्याह सुख कारी ।।

समरति

पद्मिनी शशक मिरग चित्राणी शंखिन बृष हय हस्तिन ।
पति पावें सुख सन्तत हो अति प्रीति रहे नित दोउ तन।।

उच्चरति

पद्मिनि हिरण चित्रनी घोड़ा शंखिनि गज वर पावे ।
योम वली सुख सन्तत कर्ता पाछे कष्ट जनावे ।।

नीचरति

चित्रनि शशक शंखनी मृग वर अश्व हस्तिनी पावे ।
सदा रार रहे बनी सुक्ख सगरा मट्टी हुई जावै ।।

कोक शिक्षा

नर नारिन को चाहिये अपना सतत काज । बर कन्या जोड़ा सुमग मिला करें सुख साज । स्त्री घोड़ा रत्न को राशि मान कर वर्त्ते । नातर दुख भोगे महा गुप्त मारि कहि शर्त्ते ।

जोड़ा मिलान फल

शशक पद्मिनी का जु मिलान। उत्तम पुत्र होय सन्तान ।
मृग चित्राणी जोड़ मिलाउ । संतत का सख नीका पाउ ।।
शंखनि वृषम श्रेष्ट है जोड़ा । पुत्र सुक्ख अति जान न थोड़ा ।
हस्तिनि अश्व पति को पावे । निश्चय जग में नाम बढ़ावे ।।

अन वन

तिय नागर पिय मरख जोय । पिय नागर तिय क्रूर जु होय ।
कभ सुक्ख नहिं वे दोउ लये । अनबन सदा बनी ही रहे ।।

शरीर सुगन्धी करण

चन्दन श्वेत अगर अरु पात। खस वाला कपूर सुहात॥ केशर नाग समींगी बेर। तोल प्रमाण समान सुहेर॥ सब सों आधो लेय कपूर। रस गुलाब में कर चकनाचूर। लेप अङ्ग में कर निर्धार। हा सुगंध दुगन्ध निवार।

अति सुख पाओ यहि पढ़ि हे चातुर नर वाल।
भोग भोग संसार का, भाषत मोहनलाल॥

सुन्दरता वर्णन

मृग दृग शुक नाशा अधर, बिंबा फल सम जोय। ग्रीवा शंख कोपत उर, उरज सु श्रीफल दोय॥ कच कारे लांबी लटन फवत सु गोरे गात कटि केहरि गज गति चलन अङ्ग अनंग सुहात॥

स्त्री सृंगार

कर स्नान लगावे उवटन सुथरे वस्त्र सधारै। पगन महावर रंग मांग सिन्दूर तल कच डारै॥ भाल विशाल विंदका साजै चिबुक श्याम सुख कारी॥ तिल समान विंदी बर देवे मेंहदी कर बर सारी॥ अतर तर बतर वदन करै बर भूषण पुष्प सजावे। खावे पान अधर अरुणारे मिस्सी बहुरि लगावे॥ रेख देख हिय पेख कजरबा मीन मेख नहिं भावे। मोहन यह शृङ्गार कामिनी करन महा सुख पावे॥

पुरुष शृंगार

उत्तम स्वच्छ बसन वर भूषण अंग २ परधारै। दानव मन अनुराग रागनी छिन २ पर उच्चारै॥ कनक माल उर हंसन केस

लांचे धारे श्रुति वाला। चित उदार गम्भीर विमल अति आनन्द सुख सुविशाला। राखे राग सो प्रीति सुगंधिन सो अति नेह जतावे। मोहन मृदु मिठबोले पुरुष शृंगार सुकोक बतावे।

परशिष्ट—दम्पति धर्म्म निरूपण

पुरुषन को चाहिये सदा जिन तिय को अनुराग। तसही तियन को उचित है अनत पुरुष बैराग॥ पति परमेश्वर जान करे पति आज्ञा प्रतिपाल। कबहुँन बचनन परिहरै, हरै पाप को जाल पति सेवा हित सों करै जैसी विधि संयोग। भाग सराहे धरम गहि पावे सुख मत भोग जो पति के प्रतिकूल हुई चलत जु बामा बाम। ते ही दुख संसार मही पावत आठों जाम॥ पति सों पिरथम जोत्रिय भोजन लेवें पाय सो पतिव्रत नियम सो रहत महा दुचिताय। पति सो पति बिनु बिपत पति पावत पति राख। परपति पतिपर पत न सत सरपति जिमि तज साखै सदा सराहे स्वपति को सहवे करुए बैन। तेई कामिनि विश्व महुँ पावत यश सुख चैन। सीता ने पति हित तजौ राज सुक्ख परिवार। बनबस दुख पाये अमित, यश गावत संसार॥ सती कहन मानी नहीं गई पति बचन मिटाय। लह्यौ निरादर पितु भवन दीन्हे प्राण गंवाय॥ पति आज्ञा मानत नहीं, जे तिय निज मत ठान। तेही दुखी संसार महि निश्चय लीजिये मान॥ जो तिय पति को प्रिय रखे वे पावत सुखमूल। खान पान भूषण बसन, सुत सम्पति अनुकूल॥ जाहि लक्ष्मी चाहिये करहि निज तिया प्यार। मनुके बचन न कानधर करहि सदा सुविचार॥

पतिहू को चाहिये सदा, निज पत्नी सो नेह । पर पत्नी सों प्रीति नहिं करे समुझ अघ देह ॥ जो नर परनारी रमत, नित तिय धामहि छांड । ते पामर सठ नाश कर सुख संपत दें डाड़ । जो चाहो सत काम सुख, आनन्द युवा विलास । तो परतिय स्वप्ने तजो रुचिकर निज तिय पास ॥ निज तिय रूठे तबहु पति लेवे मान मनाय । सब ही भांति सो ताही सुखदे सुख लेव सवाय ॥ दम्पति ही को चाहिये रखहिं परस्पर हित्त ॥ तो सुख सम्पति सुत, सुमति लहहि सवायो चित्त ॥ यही कोख सिद्धान्त भल प्रबल प्रेम की चाल । मोहन गुप्त महेश्वरी कहत करहु प्रतिपाल ॥

अन्तिम शिक्षा

जब लग यौवन तन नहिं आवे रज सज नहिं हो नारी । तब लग रति रस रसिक न लीजो, हाय पाप अति भारी । रोग शरीर भोग छिन पावत, सदा सुदम्पति प्रानी । तारत प्रान आपुने ही करमों, मूर्ख निपट नादानी ॥ क्वारी तिय सों कबहुँन कीजै कर्म्म शास्त्र विधि जानी । सत्यानाश धर्म कर मूरख पावे नरक निशानी ॥ एक मास महि एक बार रंज त्यागन काल सुकरमहिं । बली प्रबल पखारा साधे राखे बल सत धरमहिं ॥ पशु समान सहवास न कीजे, निसवारस मद अन्धा । करत सुपावत खेद महा, निबल दुख तज अन्धा ॥ जो प्राणी निस बासर रमते, सो सन्तानन पावहिं । जिनके सकल कार्य मूरख सम वृथा जगत महंजावहि ॥ दिवस माहिं जे रमण करत नर अन्धधुन्ध मद माते । दुष्ट महा पापी पशु प्रेमी शास्त्र तिन्हें बतराते ॥ लख कूकुर क्वार मास बिनु करत न काम किलोली । तिहि लख है कामी नर शरमो, तजहु जु बरबस होली ॥ शिक्षा करत कोखविद्या यह सुन्हु रसिक नरवाला । चलहु नियम अनुकूल सुरत लहि भाषत मोहन लाला ॥

अथ वैद्य विद्या प्रारम्भ

मंगला चरण

जाकी कृपा कटाक्ष मात्र से अनंद मंगल पाते हैं। सो धन्वन्तरि करहु कृपा हम चरनन सीस नवाते हैं। रहैं रोग निरोग देह हो दुमत हर देउ ज्ञान खरो, प्रेम प्रेम लहि परत चरन प्रभु इनहूँ का कल्याण करो ॥

आश्चर्य

वह कोई बड़ा हिक्मती है जिन जगत जाल फैलाया है। ऊपर धर आकाश पवन विच पानी तरे लगाया है ॥ ऊपर धरती साथ अजब उस पर संसार रचाया है ! अग्नि रूप चेतन्य सभी में चमत्कार दरसाया है। तरह तरह के पुतले नित नये मेटे और बनाता है। प्रेमदत्त मैथिल भी पहिले उस को ही सीस नवाता है ॥

भूमिका

वद्य अताई नहीं सही मैं हिक्मत ही में रहता हूँ ! रोगीजन के हित की हिक्मत चित्त से सुनो यह कहता हूँ होगा भला तुम्हारा जो तुम कहना मेरा मानोगे । परिचय पाके मेरी शिक्षा तब ही तुम सच जानोगे ॥ शारीरिक मस्तिष्क निर्बलता जिसने तुम्हें सताया है। प्रवल प्रमेह नपुंसकता ने करी निकम्मी काया है ॥ अग्नि कला पाचन शक्ती की घटी हाज्मा बिगड़ गया। पुरुषारथ रति कला काम की साहस नष्ट तुम्हारी है। हाय हाय हो गये निकम्मे रोवें नर अरु नारी है। काया माया सुख दोनों ही सब के सारे नष्ट भये। लगा रोग तन भोग

जोग के मारग सबरे भ्रष्ट भये। जन्म लिया जब ही सों आपत भोग भोग मर जाते हैं। जन्म लेने का सुख कोई प्रानी जग बिरले ही पाते हैं। बाल अवस्था युवा बुढ़ापा तीनों पन यों ही जाते हैं। सच्चा काया सुख क्षण भर हूँ भारत वीर न पाते हैं। यह भूमी है वही कि जिस में योधा बली जमाना था। विद्या कला कुशल पुरुषारथ जन का नहीं ठिकाना था॥ जान २ सुख भोग जोगकर आनन्द मौज उड़ाता था। स्वारथ परमारथ जोतये के सच्चे सुख को पाता था। आज जमाना आया कैसा निर्बल सभी दिखाते हैं। भोग रोग लहि फंसे पिरानी रोते अरु चिल्लाते हैं॥ भलेमानस नहीं कहें किसी से घुनैं सो भीतर जाते हैं। गरज हिन्द के बासी सब ही रोग भरे घबराते हैं॥ लखा चित्र यह हिन्दु बिन्दु का न नहीं धीरज धरता है। बिनु उपदेश किये वैद्यक का अब नही कारज सरता है॥ आओ बैठो सुनो समझलो अब नहीं प्रिय घबराओ तुम। राम करेंगे भली, भली के भले गुनों को गाओ तुम॥ अपना भला भला औरों का करे वही नर वाला है। जिस पर महरबान हो जावे मोहन नन्द का लाला है। पूर्व ऋषि कृत सुख साधनिका छुपी सो सब ही सुनाऊंगा। काया सुख बल बुद्धि हीन की हिक्मत तुम्हें बताऊंगा। पैसा खर्च न महनत करना दोऊ दाँव तुम्हारे हैं। सुन लो हिक्मत वैद्यक की तुम जिसने काज सधारे हैं। प्रेमदत्त रुपया खर्चकर तबहूँ कुछ नहीं पाते हैं। आज वही हिकमत हम तुम को मोहनलाल बताते हैं। धन्य धन्य सरकार हमारी प्रजा को सुख देती है। हिकमत सेती हरे दुःख कुछ नहीं किसी से लेती है। जब जग अवनि अकाश शशी नभ सूर ज्योति चमकाते हैं। स्वदेशी भारत की जय हो, हृदय से हम चाहते हैं॥

प्रथम प्रकरण

हे प्रवीन सुख साज राज होय चाहें जेते। सम्पत सन्तति अलंकार मन्वाने तेते ॥ विद्या बनिता विजय विश्व कीरति प्रभुताई॥ ज्ञान धर्म वर योग जुक्ति जहं तक सुखदाई ॥ विनु एक शरीर निरोगता फीके लागत साज सब। ताहि ते निज देह की रक्षा हिकमत कहत अब ॥ हे प्रवीन सुन औरहुँ तोसों कहूँ विचार। हिकमत से यह बन तनो हिकमत से आबार ॥ नित मित भोजन भोग की हिकमत नीकी साध। मिथ्या भोजन भोग कर मनुज लेहि तन व्याध ।। जो चाहें सुख सदा ही भोजन भोग बिहार। प्रेम कभी उनसे कहै इनका करो बिचार ॥ हे प्रवीन सुन करी बड़ी ऋषियन ने दाया। सुख शरीर के हेतु रची हिकमत सों काया ॥ ताहू में नित कर्म करन की हिकमत भाखी। धन्वन्तरि भगवान देत अत्री मुनि साखी ॥ जाके नित नित करन ते सुख बल प्राणी नित सहत ।सो दिन चर्या रैन ऋतु हिकमत तोसों अब कहत ॥

स्वस्थ रहने का नित्य कर्म अरु शिक्षा

ब्रह्म मुहूरत प्रातःकाल जनि सुमिरन प्रभु को कीजै। जो सुर चल्यो हाय प्रथम पग वाही धरनी दीजै॥ उठ शय्या से शौच जाय अंग शुद्ध करै नित प्रानी। दांतुन करे मले दांतुन पैसे धव सोंठी सुजानी ॥ जीरो भुनो तासु में तारै मवै रोग नहिं होवे तेल मले नित देही ऊपर चरम रोग सब सोवे ॥ कसरत करै नित्य बल माफिक न्हावे नीर निमानो। संध्योपासन करे दान सम्मान देय सन्मानो ॥ भोजन करैं फेर या विधि सों कहूँ सभी सुन लीजै। अदरक सेंधव मिला प्रथम ही खाय काय सुख दीजै अन्न दाल शुभ शाक पदारथ आधे उदर भरावे। बीच बीच

में पानी पीकर नीके तिन्हें पचावे ॥ भोजन अन्त दूध को पीवे बात कहि दी नीके। सदा स्वास्थ्य रहे प्रानी सुन्दर खटका मेटो जीके ॥ पुन दो घड़ी पिछारी पानी ठण्डै प्यास बुझावे ! या हिक्मत सों चले हमेशा रोग पास नहिं आवे ॥ भोजन करके उदर ऊपरे फेरे हाथ सुखारी। पाँच नाम लै चले कदम सौ सुमिरन करता भारी। भीम अगस्त्य बाड़बानल शनि कुम्भकरण बलधारी। उदर माँहि को भोजन मेरो पचिवो शरण तिहारी ॥ भोजन करके सूधौ लेटे बैठे अपची पावे। भाजे तो नित मौत बुलावे प्रेम सू यों बतरावे ॥ भोजन करके पहिले सूधे आठ स्वांस भर लोटे। सोलह स्वाँस दाहिने करवट ३२ बाँय करौटै ॥ पुनि उठि कारज करै आपनो जो धन्धा नित करते। सायंकाल होतही त्यागहि यौंहि वैद्य उच्चरते ॥ भोजन निद्रा मैथुन पढ़िवो संझा समै न करिये। हो दरिद्र सन्तान दुष्ट क्षय आयु रोग लहि मरिये। स्वास्थ्य हेतु ऋषि जन जो करते नित्य कर्म सुखदाई। मोहनलाल महेश्री न सोई कर्म क्रिया बतलाई ॥ अब प्रवीनू सुन कृत्य रात को बड़ो सुगम सुखदाई। प्रथमहि प्रहर करै ब्यारू या पीवे दूध मलाई। सोय रहे दस बजे तलक निज भवन स्वच्छ में जाके। भामिन भोग जोग निशि आधी परे लहैं सुख पाके ॥ तिय सम्भोग आदि कारण है काया सुख यों मानौ। अधिक विषय निर्बल करे काया हरै प्राण सब जानों ॥ है सम्भोग भोग संसारी याते बढ़ि सुख नाहीं। दुखहु नांहि बरोबर याके सब सुख नाश कराहीं ॥ याही ते सम्भोग भोग को कर विचार अति करिये। बृथा खोय राजा तन बीरज बिनु आई नहिं मरिये ॥ तमक छनक को सूक्ख जंम भर दुःख घनेरे देवे। ज्वानी माँहि दिवानौ छैला ताहि मोलकर लेवे ॥ यह है काम बड़ा साध का काया पुष्टि करावे। प्रेम प्रेम सों अब तुम को सोइ विधि सम्भोग बतावे ॥ तब तिय होय धरम सों अपने

१६ दिन तक मानो उन्हीं दिनन के मांहि होत सन्तान साँच ये जानों ॥ या का विधि लिखी सब मोहन कोक शास्त्र के मांही जो सुख चाहो तो मंगाय कर पढ़हु परिश्रम नांहीं ॥ एक मास हैं एक बार तिय धर्म कर्म शुभ जानो । अपर कर्म है विषय तासु को फल अधिकहिं विष सानो ॥ दूध मसालेदार पीयकर तिथ के निकटहि जावे । तासों पुनि ज्यों करै वार्ता काल सु काक जगावे ॥ यह आनन्द कोक में देखो प्रेम परस्पर लहिये । अन कहनी कहनी नहीं कहनी कहनी कहनी चहिये ॥ हिमऋतु शिशिर शक्ति भर नित कर ऋतु बसन्त दिन तीसरे। ग्रीष्म १५ वें दिवस रती कर लहि आनन्द सुख रसरे ॥ मैथुन करि पुनि दूध मसाला डार तुरन्त पीजावे । घटो भयो बल उपजे तुरतहिं रति रुचि घटन न पावै ॥ जा विधि सों संभोग करै तो काया रहे बल दाई । कोक वैद्यक में जो लिखी विधि सो तुमको बतलाई रोगिन रजस्वला वृद्धा उपदंश गर्भिणी तीजे । सुघड़ वैद्य कहि इनसों प्यारे रति कबहूं नहि कीजे ॥ भूख प्यास अरु रोग भयातुर दशा अधीर तुम्हारी बालक बृद्ध वेगपुत हो तो मैथुन करी विचारी । अति मैथुन कर रोग शूल खांसी क्षय विषम सुपावे । मोहनलाल प्रेम वैद्य की युक्ति तुम्हें बतलावे ॥ जब गड़बड़ हो पेट में मल खुश्की तन अंग । पीओ अड़ी तल को गरम दूध के अंग ॥ दिन ऋतु चर्या नित्य कर्म कृत स्वस्थ्य होन सुखदाई है । मोहन लाल महेश्री कवि ने वैद्यक लिखी बताई है ॥

द्वितीय प्रकरण

पदार्थ के अजीर्ण पचाते वा पुष्टी करने को

हिक्मत की लागें

गेहूं खाकर ककड़ी खावे, केला खाकर घी पी जावे । घी पी

करके नींबू खाय, तो अजीर्ण इनको पच जाय ॥१॥ आम चूस-कर दूध पीजे, खरबूजा खा शरबत लीजे। तरबूजा खा नमक लगाय, तो अजीर्ण इन को पच जाय ॥२॥ गऊ दूध पर मांडी खावे, शिखरन पै त्रिकुटा पिलावै। भैंस दूध पर नौंन पियावे। तो अजीर्ण होने नहिं पावै। ॥३॥ नारंगी पर गुड़ को खावै सभी मांस खा कांजी पावै। आलू पर कोदों खा जावे तब अजीर्ण होने नहिं पावे ॥४॥ ककड़ी खीरा आम्र्यी पेठा सेंधा फूट। नौन मिर्च कंजी मिगी करे अजीर्ण झूंठ ॥५॥ पिये शराब के नशा पर पानी शहद मिलाय। पिये जो अफीम पर नीके सो पच जाय ॥६॥ सलगम लहसन प्याज अरु अन्नपान की बाय। धनिया मोथा इलायची घी खाकर के खोय ॥७॥ जो चाहो नित सुख मिले काया रहै निरोग अन्नपान सों भोज कर भोगो भारी भोग ॥८॥ याको विविध विधान भले मोहन लाल सुज्ञान। चैतन्य चिकित्सा में कह्यो लखि तहाँ बुधवान।

भोजन विरुद्ध भोजन की विधि निषेद

दूध और मछली संग न खावे। खावे तो निश्चय मर जावे॥ भाग दौड़ पानी पिये दही रात को खाय। प्रेमदत्तशर्मा कहै मरे नहीं पड़ जाय। बथुआ कुलफा साग को शहद दूध के संग। खावे तो निश्चय मरे यह भोजन वे ढंग॥ जामुन केला की फली इमली कैथ जंभीर। पनस बिजौरा नारियल लकुचि करौंदा बीर॥ मूली दही मिलाय कर एक संग जो खाय। मोहन कवि कहे तासु को कुलंज रोग है जाय॥

षठरस खान पान के गुण

मीठा खट्टा चरपरा कटु कषाय नित खाते हैं। इन में तासीर गरम तर गरमी कफकर बादामार खट्टा है तर सर्द रक्त

त नाश बढ़ावे आदि विकार ॥ नमक क्षार सब खुश्क नरम रक्त पितु तन करते हैं। प्यास लगावे अधिक रोग बादी खांसी करते हैं। घर पर सरद खुश्क बादी हर रक्त रोग नुसरता है। कड़ आ रस तर खुश्क रोग पितवात अनेकन :ता है। है कषैल रस सर्द तरी तन बादी रोग बढ़ाता है। हन कवि है कहता इन को जो कोई ज्यादै खाता है ॥

हर्र खाने की विधि

भोजन पहिले हर्र खाय अग्नी चेतन्य करावे। भोजन पीछे ाय अन्न का वेग ही हर्र पचावे ॥ भोजन पर हा वमन हर्र त दोष नसावे। भोजन जीर्णजीर्ण खाय इर पाक बनावे ॥ ्वाशय शोधन निमित सुख हित सदा सुहाइये। सुपथ हेतु वा थलन नित हड़ पानी संग खाइये।

तृतीय प्रकरण

तन्दुरुस्ती बिगाड़ने का शौक

चाल ख्याल

जो चाहे बीमार सदा ही रहै न चोला मरदाना। मोहन कवि ़ता है तब तू नित्त नशा कर मनमाना ॥ भाँग चरस गाँजा फीम को जो नर नितहि खाते हैं। मोहन कवि कहता है के मिजाज बिगड़े जाते हैं ॥ है शराब का नशा निराला पी ाते हैं ॥ भाँग चरस ग जो को पीकर भंगड़ी यों चिल्लाते हैं। ग करावे भोजन रुचि सों यों गंवार बतलाते हैं ॥ इक है नशा ाकू पीना इस बिन काम न सरते हैं। ये हो है महमानी चाखी ़ चाव से करते हैं ॥ कोई पीता खाता कोई व्यसन तमाकू या है। जो इस से बच गया पुन्य कुछ उसने पूरा पाया है ॥

इसका पीना है दुखदाई उमर घटाने वाला है। करै भूख की कमी खून की चाल मन्द बेहाला है ॥

दिल दिमागमें जौफ जिगर कामेंद्री सुस्ती पाता है। आँखों को कमजोर दरों को यह डरपोक बनाता है ॥ आज कल के बालक इस को पीते समझ न लावेंगे। वह अक्कल के कोल्हू पीछे रोवें अरु पछतावेंगे ॥ सभी नशा का काम कि गरमी लाकर खुश्की करते हैं। इसी सबब से नशे बाज नहिं खुराक मिलती मरते हैं। रोग पड़े पर औषधि करके नशा जो प्रानी पाते हैं। उनके रोग जाग हिक्मत सों चंगे भी होते हैं ॥ थोड़ा खाना अमल समल हो जो नर ज्यादे खाते हैं। आदत पड़ी छूटे नहीं कबहूँ मिले नहीं घबराते हैं ॥ है सब नशा खराब कि यह काया का नाश कराते हैं। मोहन कवि कहे उनको देखा जो कोई खाते हैं ॥

अथ चिकित्सा प्रकरण

चिकित्सा का लक्षण

धातुओं की विकृति होने पर उनकी समानता प्रतिपादन करने के लिये भिषगादिक प्रशस्त चारों पादों की प्रवृति को चिकित्सा कहते हैं।

चिकित्सा के चार पाद

वैद्य, औषधि, रोगी और सेवक ये चिकित्सा के चार पाद हैं यदि यह चारों गुण युक्त हों तो रोग की शान्ति होती है।

स्वास्थ्य और विकार के लक्षण

शरीरस्थ धातुओं की विषमता के विकार और उनकी समानता को स्वास्थ्य अर्थात् तन्दुरुस्ती कहते हैं आरोग्यता अर्थात् स्वास्थ्य को सुख तथा विकार को दुख कहते हैं।

वैद्य के चार गुण

आयुर्वेद में पूर्ण अभ्यास-बहुत से रोगी, बहुत सी क्रिया और चिकित्सा का देखने वाला-कार्य्ये कुशलता और पवित्रता ये वैद्य के चार गुण हैं।

औषधि के चार गुण

बहुत (थोड़ी सी औषधि बहुत सा गुण) योग्यत्व (रोग के अनुसार) अनेक विधि कल्पना (अनेक रति से कल्प-काय सत्त इत्यादिक कल्पना) और सम्वत्, (घुनी सड़ी न होना औषधियों के चार गुण हैं।

परिचारक के चार गुण

जो मनुष्य रोगी की खबरदारी में रहता है उसको परिचारक कहते हैं। औषधि के बनाने तथा देने में कुशलता चतुराई, उस रोगी में शक्ति पवित्रता ये परिचारक के चार गुण हैं।

रोगी के चार गुण

स्मरणशक्ति, आज्ञा पालन (वैद्य की आज्ञानुसार चलना) निडरता, कड़वी औषधि और शस्त्र क्रिया से निडर, रोगों का बताना, औषधि लेने के पीछे रोग की कमी वेशी, नये उपद्रव का पैदा होना, रोग का घटना बढ़ना बताना, ये रोगी के चार गुण हैं।

ये सोलह गुण वाला पाद चतुष्ठय रोगों के विजय करने में कारण स्वरूप है। वैद्य, रोगी, परिचारक और औषधि ये चारों ऊपर कहे हुए चारों चारों गुण वाले हों तो रोग निसन्देह जाता रहता है, परन्तु इन सब में वैद्य ही प्रधान है क्योंकि यह रोगी को निदान करने वाला है, रोगों में शिक्षा का देने वाला और गणवती औषधि का प्रयोग करने वाला है।

वैद्य की प्रधानता में दृष्टान्त

जैसे रसोई के बनाने में रसोइया पात्र ईंधन और अग्नि यह चारों कारण हैं परन्तु रसोइया प्रधान है क्योंकि यह तीनों बातें रसोइया के आधीन हैं। और जैसे मृतिका, दंड कुम्हार और सूत्र के होने पर भी बिना कुम्हार के घड़ा नहीं बन सकता इसी प्रकार, रोगी औषधि, परिचारक होने पर भी बिना वैद्य के कुछ नहीं हो सकता। घोर तर विकारों के उपाय शीघ्र नाश हो जाते हैं या उग्र वे बढ़ जाते हैं इनमें कुशल और अज्ञ [मूर्ख, वैद्य ही कारण है]

मृत्यु को प्राप्त हो जाना अच्छा है परन्तु मूर्ख वैद्य के हाथ से चिकित्सा करना अच्छा नहीं है।

वैद्य के गुण

जिस वैद्य में विद्या विचार विज्ञान, स्मरण शक्ति, तत्परता क्रिया ये छः बात हैं उसको कुछ भी असाध्य नहीं है अर्थात् वह दारुण से दारुण रोग को भी जीत लेता है। जो वैद्य शास्त्र को विचार अपनी बुद्धि बल से चिकित्सा करने में परिश्रम करता है। वह अपराध का भागी नहीं होता।

वैद्य के कर्तव्य

शस्त्र, शास्त्र और जल इन तीनों के गुण दोष की प्रवृति पात्र के आधीन है। शास्त्र यदि बुद्धिमान के पास होगा तो संसार को लाभ पहुँचेगा, यदि दुर्बुद्ध के हाथ में होगा तो हानि पहुंचावेगा। इस कारण वैद्य का कर्तव्य है कि प्रथम अपनी बुद्धि को सुधारने और बड़े विचार के साथ चिकित्सा करे।

चिकित्सा करने की प्रणाली

श्री आत्रेय भगवान उपदेश करते हैं और कहते हैं कि यह हमारा प्रत्यक्ष अनुभव है, हम रोग-ग्रस्त रोगी की ऐसी औषधि से चिकित्सा करते हैं जो रोग के विरुद्ध गुण रखती है अर्थात् शुष्क रोगी को अशुष्क औषधियों से, कुश और दुर्बल की तर्पण द्वारा स्थूल पुरुषों की अपतपण से चिकित्सा करते हैं उष्णता से अभिभूत रोगी की शीतोपचार से, शीता भिभूत की उष्ण से, न्यून धातुओं को पूरण करके, व्यतिरिक्त धातुओं को ह्रास करके इसी प्रकार हम रोगों की उनके हेतु के विपरीत औषधि देकर चिकित्सा करते हैं जिससे रोगी की प्रकृति समता को प्राप्त होवे हमारे इस रीति से अनुष्ठा करने पर हमारी प्रयोग की हुई भेषज अभिलषित फलका प्रतिपादन करती है।

अभिप्रात—आत्रेय के इस उपदेश से चिकित्सा का सिद्धांत प्रगट होता है, श्री महाराज स्पष्ट रूप से आज्ञा देते हैं कि—

'रोगी की रोगों के हेतु के विपरीत चिकित्सा करो'

अर्थात्—सरदी की गरम और गरमी सरद औषधियों से चिकित्सा करना तुरन्त चमत्कार दिखाता है क्योंकि मनुष्यों के रोग दूर करने में मनुष्य की विकृति धातुओं को समानता में लाना है यह आत्रेय के मत की चिकित्सा प्रणाली है।

अग्नि के ऊपर जल पटकने से अग्नि का दाहत्व शान्त होता है और अग्नि से तपायमान करने से जल शीततत्व नष्ट होता है इसी सिद्धांत पर वह चिकित्सा है।

नोट—कोई २ चिकित्सक 'विषस्य विषौधम्'—के सिद्धान्त पर चिकित्सा करते हैं।

रसायन चिकित्सा—यह भी आत्रेय के मत के विपरीत है क्योंकि इसमें रस की मात्रा से चिकित्सा की जाती है जो प्रायः अग्नि का पुज होते हैं परन्तु यह चिकित्सा भी आत्रेय की चिकित्सा से कुछ कम प्रभाव शाली नहीं है। शाताभिमूत रोगी की उष्ण औषधि से चिकित्सा करना आत्रेय का मत है, इस वाक्य से यह चिकित्सा भी एक अंश में आत्रेय के मतानुसार ही सिद्ध होती है।

वैद्य की शिक्षा

वैद्य को चाहिए कि चिकित्सा करने के प्रथम ही रोगी की साध्यसाध्य की परीक्षा अपने बुद्धिबल से करले, क्योंकि जो वैद्य एसा विचार कर चिकित्सा करता है वह निश्चय रोगी को जीत लेता है।

जो वैद्य अज्ञानता वा लोभ के वशीभूत हो असाध्य रोग की चिकित्सा करता है उसको स्वार्थ-हानि, विद्या-हानि, यश-हानि निन्दा और अपकीर्ति प्राप्त होती है।

रोगप्रकार

साधारणतः रोग तीन प्रकार के होते हैं।

शारीरिक, आगुन्तज और मानसिक॥

शारीरिक रोग—जो शरीर के बात पित्त कफ दोषों के बिगड़ने से होते हैं उनको शारीरिक रोग कहते हैं।

आगुन्तज रोग—जो रोग भय, विष खाने, वायु, चोट लगने, अग्नि प्रहारादि शब्द से, कील, कांटा लट्ठादि लगने से वा गिरने से होते हैं उनको आगुन्तज रोग कहते ह।

मानसिक रोग—अभीष्ट वस्तु के न मिलने अथवा अनिष्ट वस्तु के मिलने से जो रोग उत्पन्न होते हैं वह मानसिक रोग कहाते हैं।

रोग विचार

तन पड़ी बहु भाँति की रोग कहत हैं ताय। सो काथिक और मानसिक दो प्रकार कहवाय ॥ काथिक काया में रहै मन मानसिक सु विचार। कुपथ करै जे होत हैं हरत देह को सार ॥

सर्व रोग परीक्षा

सब रोगन की परीक्षा तीन भांति सों होय। प्रथम नाटिका मूत्र पुनि तीसर गाथा जोय ॥ करै निदान सुरोग का कर परीक्षा सत्त। जस जाकी जस अवस्था कहै सु वैद्यक मत्त ॥

नाड़ी ज्ञान

पुरुषन के कर दाहिने स्त्रिय के कर बाम। देखे चतुर सु नाडिका धरै सु इहि विधि नाम। तीन दोष जे देह मधि

नोट—मानसिक रोगों का उपचार धर्म, अर्थ काम का अवलम्बन करना ही है तथा देश, काल, बल, शक्ति, और ज्ञान इनका अनुसरण करने से मानसिक रोग जाते हैं।

नाड़ी माहि विचार घटत बढ़त रोगन करत रह समान सख भार ॥ गरमी सरदी तुरत ही नाड़ी देख बताय। गति नाड़ी की कहत हों जासों भेद लखाय ॥ गरमी की नाड़ी चपल क्षुधावन्त की होय। सरदी की धीमी चलै अंग शिथिलता जोय ॥

नाड़ीस्थान

मूल अंगूठा में रहै नाड़ी सुमत विचार।
ताहि देख कर सो चतुर या विधि कर निरधार॥

नाड़ी देखन विधि

तीन आंगुरी आपुनी धरहु अंगूठा मूल। चाल नाटिका लख कर कहो चतुर हस फूल॥ प्रथम आंगुली के तलै वायु पित्त मध मान। अन्त आंगुरी के तले कफ प्रधान पहिचान॥

नाड़ी गति

चलै बात की नाटिका तिरछी टेढ़ी जान। सर्प जाक की चाल की कर चित्त में अनुमान॥ चपल कुदकती सी चलै काक कुलंक गति देख। सो नाड़ी कहि पित की या में मीन न मेख मोर कबूतर हंस गति मुर्गा बतक विचार। कफकी नाड़ी चलत है मन्द जीव अनुसार॥ दादुर अहि मिश्रित चलै बात पित कह ताप। सर्प हंस गति जो चलै कहो बात कफ राय॥ बानर मैंढक हंस गति पित कफ नाड़ी मान। चलत २ रहै पुनि चलै सन्निपात तिहि जान॥ अति स्थूल सूक्ष्म अति नाड़ी डारै मार। चल समान सुख करत बहु गुन जन करौ विचार। तन में रुधिर विकार हो नाड़ी भारी चाल। उदर आव भारी अति नाड़ी लखी सम्हाल॥ भूख लगे नाड़ी चले निर्बल चपल दिखाय। भोजन कर हलकी चले अति भोजन गरुआय॥ मन में व्याधि विचार की चिंता लागी होय। नाड़ी चले उतावली भगवत की गति होय॥ सखी पुरुष की नाटिका धीरी बलयुत चाल। कर विचार यहि विधि चतुर कहत सो मोहनलाल॥

मूत्र परीक्षा

चार घड़ी के सवेरे काँच पात्र के मांय। मूत्र वैद रोगी लहै सूर उदय लख ताय॥ पानी सम बहुमूत्र हो लघु इक नीच दिखाय। बात रोग रोगी तनै देय वैद बरताय॥ कुसुम २ सम पित कछु गरम अल्प पुनि होय। पित व्याधि रोगी लहत वैद जतावे सोय॥ स्वेत चीकको अधिक तर ठण्डी पड़ै लखाय। तन में कफ को रोग है मूत्र भलो दरसाय॥

साध्यासाध्य विचार

चार घड़ी के सकारे मूत्र चार घड़ि राख। तेल बुन्द तामें पटक कहि विचार कर साख॥ बूंद फैल जावे सही रोगी साध्य बखान। तल पट सामें कष्ट अति चक्र बैठ मृत जान॥

साध्यासाध्य तिथिविचार

रवि शनि मंगल चौथ छठ द्वादश तिथि जो होय। सो रोगी निश्चय मरे यामें झूठ न कोय॥ आद्रा स्वाती. शतभिषा भरणी पूर्वा तीन अश्लेष। नक्षत्र लहि रोग रोगि कर हीन।

चतुर्विचार

चारु चिकित्सक चतुर मत करना चिकित्सा चाल। करे न चाल विचार कर चित भरै उचाल॥ औषधि देश विचार कर काल अवस्था अर्थ। शकुन सभी सांचे मिलें नांहि तू जाने व्यर्थ

अन्य अष्ट विचार

तीन कर्म्म पंचाग्नि पुनि इनको करै विचार।
साध्यासाध्य सुव्याधि को कर विचार मन धार॥

असाध्य रोगी परीक्षा

नींद न आवे रात को नाड़ी मन्द लखाय।
इन्द्री छोड़े धर्म निज तो रोगी मर जाय॥

साध्य रोगी परीक्षा

अग्नि तीव्र प्रकृति सुधर बुद्धि ठिकाने होय।
सो रोगी हो चांगलो दिना चार में जोय॥

रोगों के भेद

काया के अन्दर रहै व्याधि कहीजे ताई। सो हैं चौदह भांति के सुनो सकल मन लाई॥ सहज रोग गर्भज पुनः जात जात की व्याधि॥ काल जनित पीड़ा जनित जनित स्वभाव सुसाध॥ जनित प्रभाव सुदेश कहि आगे तक कर जान। कायिक अन्तर दोषज कर्म्मन कर्म्म बखान॥

रोगों की उत्पत्ति लक्षण

मात पिता के वीर्य दोष से सहज रोग हुई आनो। बवासीर अरु कोढ़ कही जे अपर नपुंसक जानो॥ कुबड़ा पंगुख छंगुल रावण खजल रोग बखानो। गर्भज रोग कहते हैं तिनको चातुर यो पहिचानों॥ रतुआ बुरो शरीर बाल गूंगापन दरसावे। इन दोषन को देख तुरन्त ही जात रोग बतरावे॥ लगे शस्त्र पीड़ा होवे तन में पीड़ा रोग बताओ। ग्रीषम शीत काल में अधिकै कालज रोग जताओ॥ गुरु देवता कोप श्राप ग्रह हो प्रतिकूल सुजानो। रोग प्रभावज तन में बाढ़े शांती कर सुख आनो॥ क्षुधा तृषा अरु तरुण बुढ़ापो रोग स्वभावज गाये। काम आदि भूतादिक लागे रोगांगु तज पाये॥ ज्वर विष व्याधि श्वांस खांसी सों तन जो पीड़ा पावे। चतुर वैद्य अस दशा देख के कायिक रोग बतावे॥ हौलदिली विक्षिप्त मूछ

आन्तर रोग बताओ। आयुर्वेद को लेख देख कर चतुर भेद बतलाओ ॥ काले काले वर्ण अरुण पुन भूरे रंग लखानों। देशज रोग कहावत येही मन में सकुच न मानो ॥ पूर्व जन्म की हत्या कृत सों जो व्याधि हुई जावे। कर्म रोग नहीं औषधि ताकि यजुर्वेद बतावे! मात पिता कफ दोष बिगड़ कर जो व्याधा तन आवे। दोषज रोग कहावत सोई करहू यत्न नस जावे ॥ रोग अनन्त पार नहिं पावै परमेश्वर ही जाने। पै सद्वैद्य कुशल कर अपने बुद्धि बल सो पहिचाने ॥ चौदह भांति रोग की उत्पति संज्ञा लक्ष बताई। मोहनलाल महेश्वरी बरनी जो वैद्यक में पाई ॥

रोगी की उत मान्य कारण

जो प्राणी रहे सावधान नित पीड़ा पास न आवे। रोके वेग वेग पीड़ा तन सो नर निश्चय पावे ॥ चौदह वेग शरीर पाहिं नित साधन सुख उपजावे। रोकन सो दुख होवे तन में वैद्यक शास्त्र बतावे ॥

चौदह वेगों के नाम

अधोवायु अरु सौच है वेग सु मूत्र डकार। छींक जमाई तृषा लही नींद क्षुधा तनसार ॥ स्वेद अरु स्वांस स्वांस पुनि स्वांसा वमन सुनेग। काम देव कहिये वहुरि ये 'है चौदह वेग।

वेग रोकने में व्याधि उत्पत्ति

लगे दिशा जो पुरुष न जावे सो अति ही दुख पावे। पीड़ा लहै शरीर मध्य सों कब हूं सुख नहिं पावे ॥ हाथ पैर में हड़फूटन हो पीनस मस्तक भारी। बायु बद्धगति अधोगमन हो पीर हृदय हो प्यारी ॥ पीड़ा उदर पेट फूलन हो मन्द अग्नि पड़जावे। दिशा रोक नर सुनहु सुजन जन एत रोग न पावे।

मूत्र रोकने का रोग

अंग मांहि हड़फूटन सन्धि पीड़ा चमक जनावे ।
लिंगेन्द्री में पीर कठिन पथरी ताके पड़ जावे ॥

डकार रोकने का रोग

अरुचि अंग कम्पन हो भारी हिचकी अफरा खांसी ।
हृदय रुके रोके डकार लहि रोग पुरुष तम खाँसी ॥

छींक रोकने के रोग

इन्द्री सब दुबल पड़ें अरु होवे मथ बाय ।
गर्दन मुड़े न तासुकी मुख टेढ़ो पड़ जाय ॥

तृषा (प्यास) रोकने के उपाय

मुख सूखे सवङ्ग में हड़ फूटन हुई जाय ।
होय मोष श्रम बधिरता तृषा रोक तन आय ॥

क्षुधा रोकने के रोग

अरुचि अङ्ग टूटे सभी वस्तु गिलानी होय ।
कृश शरीर शिथिलेन्द्री विनु श्रम श्रमता जोय ॥

नींद रोकने के रोग

नेत्र और मस्तक भारी हो तन आलस्य सु आनों ।
अङ्ग ज्वासी पीड़ा भारी नींद रोक तन आनों ॥

बास रोकने के रोग

स्वांस कांस खांसी अरुचि हृदय जाय ।
हिचकी मिचकी बृद्ध तन स्वांसा रोग कराय ॥

श्रम के स्वांस रोकने के रोग

हृदय रोग गोला उदर मोंह सुदशों प्रमेह ।
रोक स्वांस श्रम रोग लहि छोड़स्वांस सुख देह ॥

उबासी रोकने के रोग

मस्तक पीड़ा इन्द्री दुर्बलता तन पाय ।
गर्दन मुख की बक्रता रोक उवासी आय ॥

आंसू रोकने के रोग

पीनस मस्तक नेत्र में पीड़ा हो अति भार ।
गोला भ्रम अरुची लहैं आँसू रोक गंवार ॥

बमन रोकने के रोग

रतुआ पित्ती कोढ़ अरु खाज पाड़ ज्वर स्वांस ।
खांस शूल मुख काल लहि बमन रोक सुख नास ॥

कामदेव रोकने के रोग

जी में इच्छा काम की उत्पति हो जो काल । रोके जा नर पावही एते दुखन कराल ॥ लिंग शीथ पीड़ा सुलिग मूत्र कच्छ परमेह । चिन्ता भोजन में अरुचि रोग बिसावे देह ॥ चौदह बेगन रोक दुख जा पावत नर नार । वैद्यक शास्त्र सों सही मोहन कह्यौ विचार ॥

चिकित्सा खण्ड

राज सब ही रोग को प्रथम ज्वरहि लै मान। ताहीं सों प्रथमहि कहत तासु चिकित्सा जान॥ तन तत्ता प्रस्वेद नहि अंग जकड़ता होय। क्षुधा जाय शिर पीर हो ज्वर कहिये सब कोय॥ सो ज्वर आठ प्रकार को कहौ वैद्यक मांय। बात पितु कफ आंगुतक सन्नित दुखदाय।

सामान्य ज्वर मात्रा का यत्न

गरम नीर प्यावो नित प्रानी लंघन पथ्य कराओ। तीन दिना तक ज्वर के माही औषधि नहीं खवाओ॥ चौथे दिन दो माशे शुंठी धनियों ले दशमाशे। करके क्वाथ पियाओ ज्वर हरि योग होंय तन खास॥

बात ज्वर का यत्न

लंघन नहीं कराना इसको यह औषधि दे देना। नीम गिलोय सितावर समल क्वाथ मांहि गुड़ लेना॥ पुनि छदाम भर गुटिका करके पाँच दिना जो खावे। बात व्याधि की पारा सों सुन प्राणी दुख नहिं पावे॥

हित ज्वर का यत्न

नागर मोथा पित पापड़ा छिलका नीम धुमासो।
लै चिरायतो नेत्तर वाला भोग समान सुखासो॥
काढ़ो कर ले देउ पीर तन ज्वर की सभी नसाओ।
मोहनलाल यत्न जल्दी सो कर नहि देर लगाओ॥

कफ ज्वर का यत्न

सोंठ गिलोय नीम की छाल। पुष्कर मूल कटेरी डाल॥ कुटकी और कचूर मिलाय। पीपल सिता अड़ूसा लाय। करहु कायफल क्वाथ बिचारी। कफ ज्वर पीर हरी तन भारी॥

दाह का यत्न

सहस्त्र बार धोये दूध सों कर मालिस दाह नसाओ। सुन्दर सुगम जोग यह बरना दूसर अवर न पाओ॥ मनमानी प्यारी का कर आलिंगन दाह नसावे। रैन समैं धनियाँ पानी में छान जो प्रात पियावे॥ तो सच माने कहूं मैं तासों अन्तर दाह नसावे॥

अरुचि का यत्न

बीजपुर रस सैंधव निश्चित जो कोई नर खावे।
वा अनार दोनों पाकरके अरुचि वेग नसावे॥

सन्निपात ज्वर का यत्न

आकमूल संभालू पल्लव देवदारु बच अरनी। सोंठ जवासो देवदारु लै सहजन मिरच सुवरनी॥ लय पीपलामूल पीपली चीता भंगरा खासा। मैंल अतास सन्न में दवे देखो लोगतमासा॥

एकतरा ज्वर का यत्न

बांसे के पत्ता पटाल के पत्र सुत्रिफला लीजै। अमलतास अरु छाल नीम का मिला मुनक्का दीजै॥ मिसरी शहद मिला कर सुन्दर जो प्रानी को प्यावे। साँची जान सुन्दरी तुरतहि ज्वर की पीर नसावे॥

तिजारी का यत्न

धनियां सोंठ और खस पीपर नागर मोथा लावै।
शहद खाँड काड़े में देकर पार तिजारी नसावे॥

चौथैय्या ज्वर का यत्न

रस अगस्त पल्लव लहै चढ़ा नासिका मांय ।
चौथैय्या ज्वर की दवा ऐसी कोऊ नांय ॥

ज्वरातीसार का यत्न

सोंठ चिरावत इन्द्र जौ नागर मोथ अतीस ।
कर गिलोय काढ़ा सलहि अतीसार कर खीस ॥

ग्रहणी रोग (दस्त) का यत्न

सोंठ गिलोय अतीस अरु नागर नाथ समान ।
काढ़ा करदे शीघ्र हर ग्रहणी रोग निदान ॥

श्वांस खांसी का यत्न

देवदारु पद्माख रास्ना त्रिफला त्रिकुटा आने । खरी खिरैठो वाय विडङ्गी चूरण कर मधु साने ॥ यह चिंतामणि चूरण खाँसी श्वांस व्याधि नसावे । चारु चिकित्सा चिन्ता मणि कर जात माँहि यश पावे ।

खांसी की अन्य औषधि

मूल कटेरी पीपल चूरण मिला जु नर वर पावे ।
वह खांसी की व्याधि सुन्दरी शीघ्रहि सकल नसावे ॥

श्वांस रोग की उत्तम औषधि

उत्तम औषधि श्वांस का काढ़ो सोंठ सुजान ।
हरे रोग सब भांति सों होय परम कल्याण ॥

अजीर्ण अपच दूर करने की विधि

अजीर्णस्य औषधि चार । हर्रा पंथ निद्रा वार ॥

दूसरी विधि

जब अजीर्ण है जाय पियारे तब यह हिक्मत कीजै । प्रात-काल शय्या से उठकर कूप नीर सद पीजै ॥ अथवा घर से उठे सवेरी जंगल में चल जावे । पन्थ करै पच जाय अजीर्ण प्राणी सुख अति पावे ॥ जो यह बनै नहीं तो सुनिये हिक्मत एक अनोखी । तान दुपट्टा शय्या ऊपर सोय नींद ले चोखी ॥ हर खायकर पानी पीवे वेग अजीर्ण पजावे । मोहनलाल महेश्वरी चोखी हिक्मत तुम्हें बतावे ॥

विशूचिका (हैजा) दूर करने की हिक्मत

यह अजीर्ण का भेद सही है व दिकया बतरावे । वर्तमान ही भाल की हिक्मत सच्च समझ में आवे ॥ अर्क कपूर बताशे में धर बारम्बार खिलावो हैजा है जाय बन्द पिरानी अच्छी है सुख पावे ।

मस्तक पुष्टि विधान

हे नवीन तन्मांहीं श्रेष्ठ मस्तक यह जाना । मस्तक बल सों बली चतुर विद्वान बखानां ॥ मस्तक पुष्टि रखे ज्योति नैनन की आला । मस्तक करै विचार सभी इन्द्रिन पर वाला ॥ जेते विचार संसार के स्वारथ परमारथ सब विद्या विलास अरु चातुरी मस्तक ही सों होय सब ॥

मस्तक में तरावट रखने की विधि

सर्शप तेल बाल में मलकर सिर धोवे तत्कालै । तरा होय सिर माही वेगही मोहन सूधी चाले । बेला तेज चमेली मीठा डारै नित प्रति सिर में । रखै तरावट सदा सीस में संग्रह कर घर २ में ।

मस्तक की गरकी दूर करने की औषधि

नहिं औषधि नहीं अर्क है नही खान नहीं पान ! नहीं महनत नहीं खरच है हिक्मत इसको जान। मोटो कपड़ा खरखरी वस्तु कोऊ ले आवे । तलवा खुजवावे पांवन के गरमी दूर करावे ॥

मस्तक के चढ़े अवखरे उतारने की विधि

पट्टी बांधो तिली पर मस्तक हो आराम ।
बिनु कौड़ी की दवा यह हिक्मत या को नाम ॥

नेत्र दुखते बन्द होने की विधि

हल्दी पाठा ग्वार फिटिकिरी पानी पीस बनावे ।
धर कपड़ा में बना पोटली दुखती आंख लगावे ॥

दूसरी विधि

जो लोहा हो लगा काठ में ताकी लीजा जंग । दो दाने कद्दू के तामे मेल कीजियो संग ॥ कपड़ा ऊपर लगा उसे फिर कनपटियों पै धरना । सूखे तब पानी से तर कर आंख पीर सब हरना ॥ जो लाली हो नेत्र में काहू विधि नहिं जाई । तब यह हिक्मत कीजिये तुरन्त फायदा पाई । इमली पत्र मंगाय के टिकिया पीस बनावे । बांध गुदा पर रात को लाली सब मिटजावे ॥

सब प्रकार के पत्र लेय कर सम्पुट भस्म बनावे ।
नींबू रस में घोट सात दिन आंखिन मांहि लगावे ॥

नाक की फुन्सी दूर करने की विधि

सूंघो फूल सुहावना चोआ चुपड़ लगाओ ।
फुन्सी नाक मिटे जल्दी सों देर करा दुख पाओ ॥

नकसीर छूटी बन्द करने की विधि

फूला फिटकरी श्वेत कर मिसरी उतनी डार ।
पिये दूध संग बेग ही दुख नकसीर निवार ॥

होंठ फटे रोकने की विधि

घृत अरु सेंधो नोन ले नाभी लेप करावे ।
होंठन को फटिवो मिटे हिकमत भली दिखावे ॥

फोड़ों के लिए नीम का मरहम

नीम पात रस शहद संग फेट कान में डारे ।
दर्द कान को रोगी रोतो हंसे विथा निरवारे ॥

कमल वायु अर्थात् पीरिया दूर करने की विधि

पीवे अर्क गुलोय को शहद मिला मन भाय ।
वा गामा बूंटी मिलै अंजन नेत्र लगाय ॥

कान के दर्द दूर करने की विधि

यह सब प्रकार के फोड़ों के शोधन व भरने का अक्सीर है

नीम पत्र रस काढ़िके घी संग अग्नि चढ़ाय ।
पानी जर जावे जभी मरहम समझो ताय ॥
मुरदासन कापूर अरु कत्था देउ मिलाय ।
फाहा रस फोड़ा धरहु पीड़ा सभी नसाय ॥

सुफेद मरहम

राल मोम मुरदासंख आधा गौ घृत में पकवावे ।
कांसे थाल में रगड़ पानि संग मरहम श्वेत बनावे ॥

व्रण पीड़ा कर दूर जोग ये सुगम सुभांति दिखावे।
कर औषधि लहि नाम जगत में मोहन यह बतलावे॥

दाद दूर करने की एक पुरानी कहावत

अमरबेल अरु कमल गटा, गाम को ठाकुर गाय को मठा।
नगर सुहागिन लेय मिलाय, दाद खाज अरु छाजन जाय॥

बाल चिकित्सा प्रकरण

बाल ज्वर का जतन

नागर मोथा हर की छाल नीम की छाल।
ले पटोल कालौ करैं बालक ज्वर दे टाल॥

बाल ज्वरातीसार का यत्न

नागर मोथा पीपली सिंगी और अतीस।
शहद मिलाय चटाय हरे व्याधा बिस्वे बीस॥

बालक के दस्तों के यत्न

बेलगिरी धव फूल ले लोध अरु नेत्र बाला।
गज पीपल मधु मिला चटाकर कीजे बाल निहाला॥

आम रक्तादि सब प्रकार के अतीसार का यत्न

सोंठ अतीस इन्द्र जौ नेत्रबाला मोथा लावे।
घोट छानकर देय बाल की पीड़ा सभी नसावे॥

बालक के ऐंठा का जतन

चावल खील मुलहटी महुआ शहद मिला चटवावे।
ऐंठी जाय तुरत सब तरियां बालक सुख अति पावे॥

बालक की खांसी का जतन

मोथा पीपर काकड़ासिंगी समहि अतीस मिलाव ।
शहद अडूसा रस चटनी दै खांसी तुरत मिटावे ॥

बालक को छर्दि का जतन

चावल खील आम की गुठली सैंधव लवण पिसावे ।
मिला शहद में दे बालक को उल्टी पीर नसावे ॥

बालक के दूध गिरने का जतन

चित्रक चव्य पीपलामूली पीपल सोंठ स लेवे ।
कठहेली के डोडों का रस शहद मिलाकर देवे ॥

बालक के शूल व पेट फूले का जतन

सैंधो नोन सोंठ भारङ्गी हींग सेक कर डारे ।
पुनि इलायची गरम नीर संग दे अफरा निरवारे ॥

बालक के लार बहुत पड़ने का जतन

गौरी सर तिल लोध ले मधु के संग पियावे ।
अधिक लार पड़ती थम जावे मोहन जोग बतावे ॥

बालक का नाभि पके का यत्न

हल्दी लोध प्रियंगु पुष्प ले मधु के संग मिलावे ।
लेप करे नाभी के ऊपर पीरा तुरत नसावे ॥
पीरी माटी जला लाल कर पथ संग लेप करावे ।
नाभी की सूजन बालक की तुरंहि दूर हटावे ॥

बालक के दांत सुगमता से निकलें

धाय फूल पीपल सु लै आंवल रस मिलवाय ।
दांत मलै निकसैं मलै सुख बालक अति पाय ॥

स्त्री रोग चिकित्सा प्रकरण

सोम रोग यत्न

पाके केला फलन में मिसरी चूर्ण मिलाय।
लगा खाय कर तुरत ही सोम रोग भग जाय॥

रक्त श्वेत प्रदर का यत्न

.ढाई टंक रसौत टंक दो चौलाई की जड़ का रस।
शहद मिलाय सात दिन पीवे जाय प्रदर की व्याधा नस॥
गूलर फल सुखवाय टका भर मिसरी बहुरि मिलावे।
गोली बना सात दिन खावे प्रदर पीर नस जावे॥

स्त्री धर्म नहीं होय ताको यत्न

जाके धर्म होय नहीं स्त्री मांस अरु मछली खावे।
बंधो धर्म हो ता स्त्री को सो शीघ्रहि खुल जावे॥
कांजी वा तिल अथवा उड़दी निस्य खाय जो बाला।
होय धर्म से बेगहि सो प्रिय हरै पीर ततकाल॥
विजयसार अरु माल कांगनी राई बचसम पावै।
शीतल जल से पाँच दिना पी नारि धर्म खुल जावे॥

बांझ के पुत्र होने का यत्न

गंगेरन की छाल खिरैटी महुआ अंकुर बड़ के।
मिला नाग केसर पय संग पी १५ दिन तक तड़के॥
पीवत पाँच टंक मधु तामें डार पियो हे प्यारी।
निश्चय पुत्र होय भल तेरे बन्ध्य दोष निवारी॥

स्त्री के गर्भ रहने का यत्न

पीपर सोंठ नाग केशर ले तामें मिरच मिलावे।
तीन दिना ऋतु समय घीय संग खाकर गर्भ जमावे॥

गर्भ न रहने की औषधि

पीकर बायबिडङ्ग सुहागा भाग समान मिलावे।
पांच दिना ऋतु काल पिये तौ निश्चय गभ न पावे॥
अथवा एक टका भर गुड़ को देख पुरानी लावे।
पन्द्रह दिन ऋतु काल पिये तो गर्भ न जमने पावे॥
दिन पाँच जो तेल निबोलो फाहा अङ्ग मध धारै।
भाव मिश्र ने कहा गर्भ जम बिथा नारी निवारै॥

समस्त योनि रोगों की औषधि (फल घृत)

कूट मुलहटी मंजिष्ठा मिश्री त्रिफला अरु चंदन। अश्व गंध मेदा अजमोदा युग हरदी असगंधन॥ गुठली सम खिरहटी द्राक्षा कमल मूल सुख दैनी। धेला धेला भर ले गौ घृत पाव सेर पिक बैनी॥ पुनि इक सेर सितावर रस ले मधुरी आँच पकावैं। घृत रहि जाय शेष ताको बाला तरुणी पावे। योनि रोग सब भांति नसे सुख मिले पुत्र प्रिय पावे। पुरुष नपुंसक पुंसवान बनकाम कला सुख लावे॥

गर्भिणी स्त्री का यत्न

ढाभ कास एरंण गोखरू मूल मंगावे। ताकों नीके भाँति दूध गौ संग पचावे। पुनि भल विधि सों छान नारि पीवे जो कोई गिरत गर्भ रुक जाय शूल हर बाधा जोई।

बालक न होता होय तो सुख पूर्वक होवे

सांप कांचली मरुवा धूनि योनि लगावे प्यारी।
प्रसव होय तत्काल पीर नस जाय तरुणि की भारी॥

चक्र व्यूह को मन्त्र काढ़ थाली में नीर पियावे ।
बालक जल्दी जने स बाला कष्टी कष्ट मिटावे ॥

उत्तम आवश्यकीय औषधि

बालक जन्मै पाछे ही दश मूल क्वाथ पिवाय ।
सरदी सों नारी बचे रोग रोग प्रसूति नसाय ॥

प्रसूत पर सुहाग सोंठ

धनिया पीपर नागर मोथा सोंठ बिडङ्ग बखानी । काली मिरच नाग केशर ले दस २ टंक सुजानी ॥ सौंप सोचकर पाँच टंक से पुनि या विधि करवावे ॥ सतुवा सोंठ सेर आधे ले सम घृत में मकार वे ॥ पांच सेर ले खाँड चाश्नी करके औषधि डारे । मेवा सभी रुचि के अनुसार तामें अधिक प वारे ॥ पाँच टंक ले सार पांच टंक अभ्रक कृष्ण मिलावे । सुन्दर बने सुहाग सोंठ भर टका नित्य जो खावे । स्त्री तन की सब ही व्याधा सूति प्रसूति निवारे । सभी जने जाने हैं याकूं ये ही नाम उचारे ॥

पुरुष रोग चिकित्सा खण्ड

प्रमेह का जतन

पुरुष अङ्ग में रोग यह बैरी के सम जान । ताकि औषधि करने को करत सु सभी विधान ॥ त्रिफला चूरण नीर सङ्ग जो प्राणी नित खाय । कबहुं होय प्रमेह नहीं होवे तुरत नसाय ॥

(चन्द्रकला गुटिका) सर्व प्रमेह पर

ले कचूर नागर मोथा बच हर्द पीपरा मूल । दारु हल्द त्रिफला अतीस सब चित्रक धनिया फूल ॥ जवा खार गज

पीपर सज्जी पाँचों नोंन करारे। पुनि चिरायता मिसरी लाव शिलाजीत हू डारे। गूगल शोधी तामें डारे पारद गंधक नीकी। अभ्रक सार मिला गुटिका कर इच्छा पूरण जी की। दू० औषधि॥ मिसरी अर्क गिलोय संग मंडल भर पी जावे तन प्रमेह रहवे नहीं हिक्मत भली बतावे।

मूत्र कृच्छ (सुजाक) का यन्त्र

जवाखार दो टंक गऊ के मठा सङ्ग जो पीवे। पथरी मूत्र कृच्छ की पीड़ा सब ही बेग नसावे॥ शिलाजीत सङ्ग शहद के जो कुछ दिन ले खाय। सत्त मान बानी जिही पीर सुजाक नसाय॥ राल फिटकिरी बड़ी इलायची बीज इकठोर मिलारे। लेके सभी बराबर कूटो पीस छान कर प्यारे॥ सब सामान मिसरी ले लीजो पानी सङ्ग पिवाना। हरे पीर सुजाक सवेरी हिक्मत के गुन गाना॥

बवासीर के दूर करने की परिचित विधि

अख जो नाम सिद्ध बूटी है जाने उहू नर नारी।
ताकूं लावो तोड़ पीस कर गुटिका कर तैयारी॥
मधु सङ्ग ताकूं दिन ग्यारह जो प्रातकाल में खावे।
मोहनलाल मल्ल यह परिचित सिद्ध दवा बतलावे॥

उपदंश (आतिशक) का यन्त्र

प्रथम लेय जुलाब को पीछे यत्न कराय। नित्य सुपारी पीसकर व्रण पर देय लगाय॥ जोंक लगाकर रुधिर का नीके दे कढ़वाय। फस्त फुलावे···कि तो उपदंश नसाय॥ कर त्रिफला के क्वाथ सों—को धो डाल। पीर रुस चित चैन हो दे उपदंश निकाल। नीला थोथा १ भाग ले कत्था दुगुण सुमाना। मुरदा सङ्ग दो

भाग सुपारी भस्म भाग २ दो जानो। पीस सबै इकठोर बनावे बुरकी अति ही नीकी॥ सकल पीर उपदंश जाय होय इच्छा पूरन जी की॥

बवासीर का जतन

सूरण हलुआ खाय नित बवासीर मिट जाय।
कांधे पर रख बोझ नित कसरत खरी कराय॥

नपुंसक चिकित्सा

वानरी गुटिका

कौंच बीज ले पाव सेर भल दूध माँहि औटावे। छिलका छील तिन्हें सिल ऊपर नीकी विधि पिसवावे॥ उसन दूध में तिनकी वटिका घृत माँ ही तलवावे। पाक चाशनी मिसरी मांही शहद मांही डुबवावे॥ नित दस टंक साठ दिन लो जो पुरुष नपुंसक खावे। वैद्यक बचन प्रमान सच नामरद मरद हुइ जावे। लेय बिदारी कंद में ताकी पुट करवाय। मिसरी शहद मिलाय के खाय नपुंसक जाय॥

मदन मंजरी गुटिका

त्रिकुटा चतुर भाग लै नीको पारद भाग सु एक। भंग भाग दो लेय सितावर सब सामान कर टेक॥ तज पत्रज अरु लवण इलायची जावित्री पुनि लावे। लेय जायफल जुगल भाग तब घृत और शहद मिलावे॥ मिसरी मेल बनावे गोली पाँच टंक अनुमाने। पीवे ऊपर दूध खाय गोली होवे मस्ताने॥ बूढ़ो पुरुष खाय बल बाढ़े कठिन नपुंसक जोवे। मदन मंजरी गुटिका सों नर काम कला निधि होवे॥

लिंगार्जु गुटिका

ले चीनी कपूर सहागा सम पारद मिलवावे। रस अगस्त में भली भांति सों इक दिन खरल करावे ॥ करै अंग पे लेप पहर इक पीछे धोडारे। करै संग मन की उमंग नहि व्याधा सभी निवारे ॥

नपुँसकता को पट्टी

श्वेत कनेर मूल ले सुन्दर अकरकरा अजमोद। श्याम धतूर बीज जायफल पानी संग कर मोंद ॥ मिरच प्रमाण बनावे गुटिका मनुज मूत्र संग लेपन। करै अंग हो जाय मर्द नामर्द सत यह लेखन ॥ पांच टका भर घृत लेपन कर सबुल पीत लगावे। बाती बना तप्त गज ऊपर चढ़ा ताहि टपकावे ॥ धारण करै तेल का अंग पर नामर्दी सब जावे। होय मरद नामद झूठ नहि सत्य वचन वर भाखे।

नपुँसकता पर खाने की औषधि

जावित्री असगंध जायफल दारचीनी सुख देनो। लवंग समान मिलाय श्याम तिल पाव शहद पिकवैनी। दिन इकीस खवाय सुन्दरी जाय-नपुंसक भारी। कर रस रहस न संशय या में वैद्यक कहत पुकारी ॥

तिला हथलस सुस्ती का

लेय वाफ्ता वस्त्र पावगज अर्क दूध में आने।
तसही थूहर दुग्ध मांहि पुनि भली भांति सो साने ॥

स्तम्भन

केशर एक दूनी लबंग तीन जायफल लेय। श्यामा चार मिलाय जुग रत्ती सू मृगमद देय ॥ मधु से गोली टंक की बांधे

खाय सुजान। स्तम्भन बहु अधिक हो काया भीतर आन ॥ रूमी मस्तंगी छः माशे उतन लवंग मिलावे । बीज इलायची छः माशे ले अर्द्ध जायफल लावे ॥ मधु संग पीस सु बांधे गोली बेर प्रमाण जु खावे । तो बंधेज होत अति नीको वैद्यक जोग बतावे ॥ तीसरी औषधि······

लवंग जायफल जाविञ्री अरु गट्टा कमल सु लेवे । भांग अफीम इलायची छोटी नागर रस मकरावे । दो माशे की गोली खावे स्तम्भन बहु लावे । जब लग नाहिं खटाई खावे तब लग घुटन न पावे ॥ जड़ कन्नेर अफीम ले अदरक को रस डार। गोली रख मुख चतुर नर करहु केलि खिलवार ॥ जिमीकंद तुलसी की मूल । ले समान कर तन कन भूल ॥ नागर रस संग गोली बाँध स्तम्भन सुखले काया साध ॥

स्तम्भन को पारद की गोली बनाना

श्याम रंग को तीतर लावे पारद ताहि खवावे । ऊपर कछू भोजन नहि देवे केवल दूध पियावे ॥ तीन दिना के पीछे तीतर पारद बंध्यो गिरावे । ताकू धोय नीर सों, अपने पास चतुर रखवावे ॥ रति के समय मेल मुख गोली बोली कढ़ी सुनावे । मन मोहन कर तरुणी को नर नाम घनेरी पावे ।

शरीर पुष्टाई का विधान

सैमर बीज सेर आधे ले दूध मांहि औटावे । पीछे तिन्हें निकास भली विधि छाँया में सुखवावे ॥ युगल मूसली पाव सेर ले गुर्डा बहुर मंगावे । निगुण्डी मुंडी भारंगी भ्रंगराज हूँ लावे ॥ टका २ भर तिन के रस को तांमे बांटि सखावे दो पैसा भर बांधे गोला सोते समय जु पावे ॥ धातु पुष्ठ अरु अधिक बृद्धहु तरुण पुरुष हुई जावे । राजयोग यह वैद्य शास्त्र का लटका तुम्हें बतावे ॥ अथवा······

कन्द बिदारी आध सेर ले तुलसी रस भिजवावे। तीन बार करके या तरियाँ छाया मांहि सुखावे॥ पुनि पय पाँच सेर जौ को ले नीक ताहि अवटावे। शेष रहे दो सेर तभी तिहि नीचे पुनि उतरावे॥ कंद बिदारी चूर्ण तासु में डारे देर न लावे। अर्द्ध सेर ले चोखी चीनी ताही समें मिलावे॥ सात भाग कर सात दिवस लों जो प्रानी कोउ खावे। सप्त नारि सों भोग भोग कर धातु पुष्ट हुई जावे।

धातु क्षीण दूर करने की विधि

पीपल अर्क निकास के पिये शहद संग जोय।
धातु क्षीण चोखो हरै कर हिक्मत हित होय॥

नवयुवक शौकीनों के शौक

बदन साफ रखने की विधि

साबुन मल कर न्हाय जो बदन साफ हो जाय।
उबटन कर दुर्गन्ध सब ही देत नसाय॥

शरीर को सुगन्धित करने की विधि

अर्क बेल पत्री को लेकर मलवावे अंगन में।
जाय देह दुर्गन्ध सुगंधी होवे भारी तन में॥

चेहरे को चमकदार करने की विधि

चना चून तिल तेल ले नीकी भांति मिलाय। मल मुख पै स्याही मिटै रंग चोखो खिल जाय॥ लै मसूर की दाल पीस के दूध संग अंग धारे। खुले रंग अंग अचम्भा कर हैं देखने वारे॥ बीज बादाम चिरोंजी सम ले चंदन दुगुनों आने। केशर तीजे भाग लाय कर गुलाब जल में साने॥ करै अंग पर लेप रंग खुल चमक चमक है जाई। वाह वाह जी मोहनलाल यह हिक्मत खूब बताई॥

मुंहासे दूर करने की विधि

सेमल के पक्के कांटे ले पानी पीस लगावे ।
होंय मुहांसे दूर चमक चेहरा की ज्योति जगावे ॥

शरीर का रूखापन मिटाने की विधि

नित २ तेल मले देही पर सप्त दिवस के अन्दर ।
एक दिवस उबटन करवावे पीवे दूध निरन्तर ॥

सफेद बाल काले करने की विधि

इंद्रायन के बीज का तेल लेय निकसाय ।
धवल केश पर मलत ही सो कारा पड़ि जाय ॥
नहिं बाधन को काम कछू नहिं बैठन को काम ।
केश कल्प बढ़िया यहै हिक्मत याको नाम ॥

बाल बढ़ाने की विधि

कोमल पत्र लाय बेरी के नीक सो पिसवावे ।
छान महीन तिन्हें बारन में चोखी भांति लगावे ॥
कारे बार होंय अति चिकने लम्बे लटकें भारी ।
प्रेमदत्त मैथिल की हिक्मत है ये सबसे न्यारी ॥

बाल दूर करने की विधि

शंख भस्म अरु मैनसिल युगल टंक मंगवावे ।
सज्जी छार हरिताल ये दोऊ घुन इक २ टंक मिलावे ॥
पानी पीसे बालन ऊपर नीका लेप करावे ।
सूख जाय तब काढ़े तिनको बरि राम गिर जावे ॥
लगै न अंग में दाग कड़ा नहिं चमड़ा होने पावे ।
बाल उमर भर उगें नहीं यह प्रेम जोग बतलावे ॥

बाल सफेद करने की विधि

बकरी दूधै तिलन भिजोवे ताको तेल निकारे।
कालेबार सफेद होय तू गुन हिक्मत गारे॥

सिरकी जूँ लीक—दूर करने की विधि

पारा रस में पान के मिला बाल में डाल।
मरैं लीक जुऐ तुरत हिक्मत बड़ी कमाल॥

नींद आने की विधि

मलवा तलवा पाँव के काढ़े कंघाबार, जोड़ दबावे देह के आवे नींद सुखार। सोंफ भाँग संग दूध से पीस लेप कर सीस गई भई निद्रा फिरै हिक्मत विस्वे बीस॥ धर सिराहने सोइये लहि सोया को साग। आवे गहरी नींद भलि यह हिक्मत बे लाग॥

नींद न आने की विधि

सीस कनपटी मस्तक ऊपर अर्क लौंग को धारै। अथवा गंध कपूर सँघावो नीद जरूर निवारे। सिरका राइ पोदीना के पात मिच ले कारी। कूट पीस सूंघे जो कोई जावे नींद सुखारी॥

नशे की खुमारी दूर करने की विधि

जो खुमार हो नशे का मर्द होय चकचूर। फूल लाव सुँघाय दो होय खुमारी दूर॥ अथवा शर्बत कन्द का दो गुलाब जल डार। वा नींबू को रस पिये देय खुमारी टार॥

बिच्छू के दूर करने की विधि

आँधा झारा मूल मंग वे ताकूं तुर्त सुँघावे।
रोतो आवे हस्तो जावे हिक्मत भली बतावे॥

सांप के विष दूर करने की विधि

आंगा की जड़ आधे इंची राखे नाक दुआरों में ।
रोगी होगा चेतन हिक्मत कहता लाख हजारों में ॥

कुत्ता का विष दूर करने की विधि

लाल मिरच को पीस लगावे पैसा बांधे खुलन न पावे ।
कुचला वा कूकर का विष्टा, कुत्ता को विष कर है नष्टा ॥

कांतर चिपटो छुड़ाने की विधि

असल तेल सरों का लेकर काँतर ऊपर डारे ।
कट काँतर गिर पड़े अचम्भा कर है देखन वारे ॥

मकरी फरो दूर करने की विधि

ले चाखी अमचूर लेप कर लीजिये ।
अथवा चूना नीबू रस मलि दीजिये ॥

ततैया का विष दूर करने की विधि

खाने का चूना मिले या नौसादर लेय ।
कछू न मिले तो कागज हि भिजा डंक रख देय ॥

अफीम का विष उतारने की विधि

हींग घोल पानी में प्यावे । मक्खी पीता वमन करवावे ।
अथवा फिटकरी चूर्ण चटावे । चौलाई का रस पिलवावे ॥
रोगी को नहिं सोवन देय । हिक्मत कर भारी यश लेय ॥

शिल्प विद्या

साबुन बनाने की विधि

साबुन दो प्रकार का होता है एक नहाने का दूसरा कपड़ा धोने का—यह दोनों ही बड़े काम के होते हैं और इनका बड़ा

भारी खर्च है। उसी प्रकार इसकी बिक्री भी है। यद्यपि इसके बनाने के बड़े २ कारखाने हैं तथापि प्रत्येक पुरुष इस बात के जानने का इच्छुक है कि यह किस प्रकार से बनाया जाता है। इसी कारण इस कृत्य को सर्व साधारण के लिये विशेष उपयोगी समझकर इस स्थान पर साबुन बनाने का कुछ वृतान्त लिखा जाता है।

प्रत्येक प्रकार के साबुन बनाने में क्षार और तेल यह दो पदार्थ हैं तेल के स्थान में चर्बी से भी काम लिया जाता है।

क्षार बनाने का क्रम

इसी को कास्टिक सोडा कहते हैं चूना अनबुझा, सज्जी या सोडा और रेह। सोडा या सज्जी १०० पौंड चूना अनबुझा २५ पौंड पानी १८०० पौंड में मिलाकर रख दो २४ घन्टे बाद रस की रेनी चढ़ाकर रस का अर्क टपकालो। यह कास्टिक सोडा कहलाता है इसी को लाई भी करते हैं। यही साबुन बनाने की मुख्य वस्तु है, जब यह काम अधिकतर किया जाता है तो इस कार्य के लिये इस प्रकार के हौज बना लिये जाते हैं।

पानी

सज्जी चूना इत्यादि

॥ । ॥ ॥

मोरी दूसरी हौज में जाने की शुद्ध क्षार

साबुन बनाना

लाई (कास्टिक सोडा) और तेल इनको मिलाकर आग पर चढ़ा कर चलाओ यहाँ तक यह दोनों खूब मिल कर लेई सा हो जाय उस समय उतार कर साँचों में भर लो या इसी प्रकार इसके डले २ चकते जमे रहने दो । यह साबुन कपड़ा धोने के काम का होता है ।

इसमें चरबी और कास्टिक जो बनाया है इस पानी का हिस्सा बराबर रहता है । यदि चूना अधिक होता है तो साबुन कड़ा हो जाता है और झाग कमती देता है इससे द्रव्य को तोल कर मिलाना चाहिये । यदि वह कमती बढ़ती हो जायगा तो साबुन काम करने योग्य नहीं बनेगा । इस बात का खूब ध्यान रहे कि यह साबुन मनो की तोल में बनाया जाता है और उसी प्रकार बिकता रहता है । इस साबुन के बनाने में तेल के स्थान पर चरबी से काम लिया जाता है जिसके बनाने की रीति यह है ।

चरबी की साबुन

एक हजार पौंड चरबी लेकर उसको धीमी आँच से पिघलालो । जब पिघल जावे तब उसमें ७५ गैलन लाई कास्टिक सोडा का पानी जो बनाकर तैयार किया है वह मिलादो यदि चरबी ऊपर आजाय तो ३५ से ४० गैलन और मिलाओ और थोड़े समय तक उसी पानी को थोड़ा और मिलाओ यह सब मिलकर यह पदार्थ लेई सा वा साबुन सा हो जायगा । उस समय पानी अलग करने के साधारण नमक मिलाओ । जब पानी छोड़ने लगे तब इसमें ६ गैलन एल-कली (कास्टिक सोडा) एक दम मिलाकर आग तो तेज करदो

और चलाते रहो। फिर बारह घण्टे बाद हलका पानी और मिलाओ जब तैयार हो जाय आग बुझा दो और ठहरा रहने दो और खारी पानी जो कढ़ाव में मौजूद हो निकाल लो। जब नमक डालने के बाद अर्क जुदा हो तब थोड़े घण्टे ठहरा कर पानी निकाल लेना चाहिये, फिर वही कास्टिक और भी मिलाना चाहिये। इस क्रिया से साबुन जो बनेगा ऊपर तैर आवेगा उस समय कढ़ाई से निकाल कर लकड़ी के बक्स में भर दो और खूब दबाओ कि चरबी की बू जाती रहे। इसके पीछे जो खुशबू पसन्द हो मिला दो और सात दिन पश्चात् साँचों में भर कर टिक्की काट लो।

(नारियल के तेल का साबुन)

यह साबुन साफ और अच्छा होता है इसके बनाने की रीति यह है कि यदि बराबर का तेल और कास्टिक सोडा रक्खा जाता है तो साबुन बहुत अच्छा तैयार होता है।

वारनिश का काम

बहुत अच्छी वारनिश चन्दरस से बनाई जाती है और सब से खराब बेरोजा की होती है परन्तु बाजार में टीन बन्द वारनिश भी बहुतायत से बिकने आती है उसको कोपटा वारनिश कहते हैं।

वारनिश के बनाने में नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना आवश्यक है कि वारनिश जल्दी सूखे, कड़ापन हो, चमक हो, धूप वा पानी में खराब न हो।

चन्दरस की वारनिश बनाना

चोखी चन्दरस लो बाजार से साफ करो घर आई। एक देग में चढ़ा आग दो तेल बने अतिकाई ॥ कड़ी आग दो उसके नीचे

ढांक पात्र को दीजे। इस में आग होयगी पैदा बहुत ध्यान ये कीजे। बार बार खोलो इसको फिर बन्द। करो घर वारी तेल वारनिश रूप होयगा तार देय अति भारी॥ चिपकन चमक होयगी तामें अधिक स्वरूप कड़ी सी। लो उतार ठण्डा कर लीजे वारनिश बनी भली सी।

वारनिश करने की रीति

उत्तम वारनिश और औटा हुआ अलसी का तेल और तेल तारपीन मिट्टी का तेल इत्यादि ये सब रोगन करने के काम में आते हैं।

जिस वस्तु पर रोगन या वारनिश करना हो उसको पहिले धो कर और ब्रुशादि से खूब साफ करलो और यदि अस्तर की आवश्यकता हो तो पहिले लकड़ी पर अलसी के तेल में गेरुवा हिरमिजी रंग मिलाकर अस्तर करलो अस्तर सूख जाने पर उसके ऊपर वारनिश करने से उत्तम प्रकार की चमक दमक पायदार हो जाती है।

मामूली वारनिश

मामूली वारनिश अलसी के तेल से भी बनाई जाती है इसके बनाने का भी तरीका वही है जो चन्दरस की वारनिश बनाने का है। यह वारनिश अक्सर लेथो के छापे खानों की छापने की स्याही बनाने के काम में आता है क्योंकि यह स्याही सिवाय इस वारनिश और किसी तेल से नहीं बनती इस वारनिश में काजल मिलाकर घोटने से उम्दा पक्की स्याही बन जाती है।

चूंकि यह अभ्यासी काम हैं जो करने से बहुत जल्दी आते हैं इस वास्ते इन शिल्पी कार्यों को करके लाभ उठाना चाहिये

रबड़ की मुहर बनाने की विधि

यह मुहर इस प्रकार बनाई जाती है कि सब से पहिले नाम के टाइप के अक्षरों को जिस आकृति में मुहर बनाना हो उसी प्रकार से जोड़ कर बैठार दो और खूब कस दो। पीछे एक लोहे की चौरस रकाबी में जिसमें एक जो ऊंची लोहे की बाढ़ अर्थात् (किनारा) लगी हुई हो उसमें मोल्डिंग कम्पोजीशन के पैरिश प्लास्टर को पानी में घोलकर उस बाढ़ में भर दो और ५ मिनट ठहर जाओ। जब यह मसाला थोड़ा जमने लगे या जम जाय तभी उसको उन टाइप के हरूफों पर जो मुहर बनाने की सूरत के बने हुये धरे हैं, ढाल दो और खूब दबा दो कि हरूफों की सूरत उस साँचे में ज्यों की त्यों आ जावे पश्चात उस टाइप को उसमें से निकाल कर अलग करदो और मोल्ड को देखो कि सब तरह से ठीक है यदि किसी प्रकार की कमी हो या कहीं से टूटा हो या अक्षर टूटे हों तो फिर दोबारा बनाओ। जब तक कि साफ ठीक न बन जाय तब तक बनाओ जब सांचा ठीक हो जाय उस समय उसको प्रेस के भीतर रक्खो और प्रेस के नीचे कोयलों की आग सुलगाओ और उस साँचे के बराबर गटा पारचा (कच्ची रबड़) का टुकड़ा काट मुहर के सांचे पर रक्खो और रबड़ के ऊपर एक टुकड़ा कागज का रख दो। पश्चात् थोड़ी देर के जब आग रबड़ पर असर करेगी तो रबड़ थोड़ी गरमी पाकर नरम होने लगे और रङ्ग भूरे से काला होने को आवे तभी प्रेसको थोड़ा दबा दो और गरमी बढ़ा दो जब गरमी बढ़े और रबड़ पिघले तभी तुम प्रेस को एक दम खैंच दो और देखो कि कागज जो रबड़ के ऊपर रखा था वह जल कर रंग बदल गया। यदि बदल गया हो तो रबड़ भी पिघल गई समझ खूब प्रेस को दाब दो और आग पर से उतार कर नीचे रख दो और ठण्डा होने पर

प्रेस में से फ्रेम निकाल उस पर से रबड़ को उठालो और देखो कि मुहर की आकृति पूर्ण रूप से बन गई। यदि बन गई हो तो जो रबड़ पिगल कर किनारे पर बढ़ आई हो उसको कैंची से काट कर मुहर को साफ बना लो। पश्चात् सरेस के द्वारा लकड़ी की मूंठ पर चिपका दो। यह रबड़ की मुहर बनाने का क्रम है परन्तु यह भी अभ्यास के आधीन है।

रबड़ की मुहर छापने की स्याही

ग्लेसरीन सग रंग मंजीठ (लाल) या नीला मिलाने से रबड़ की मुहर छापने की स्याही बनती है।

अथ मंत्र विद्या प्रारम्भ

उस पर ब्रह्म परमात्मा ने मनुष्यों के हित साधन के हेतु अनेक उपयोगी बातों को रचा है जो साधन से समय २ पर सब मनुष्यों के कार्यों को सिद्ध करती है।

प्रत्येक विद्या अपने २ नाम से प्रसिद्ध है उन सब विद्याओं में मन्त्र विद्या सब से उत्कृष्ट प्रभाव वाली है। इस विद्या के द्वारा मनुष्य बिना किसी परिश्रम और कार्य के अपने वा पराये के सब कार्यों को सिद्ध कर सकता है परन्तु मन्त्र सिद्ध करना कोई सहज बात नहीं है इस की साधना में बड़े बड़े भय उपस्थित होते हैं। इसी कारण से वर्तमान काल में इसका अभाव सा हो गया है। इसके कर्ता भी बहुत थोड़े दृष्टि आ रहे हैं और इसकी ओर से मनुष्यों का विश्वास भी उठ-सा गया है कारण यह कि इस कार्य के करने वाले ढोंग तो बहुत सा रचते हैं परन्तु कार्य नहीं करते बल्कि इतना व्यय कराते हैं कि मनुष्य का जी घबरा जाता है, फिर भी काय की सिद्धि

न होने से उन पर बज्र सा टूट पड़ता है इसी से इसका कोई नाम भी नहीं लेता। परन्तु यह विद्या सिद्धि दायिनी है ऐसा समझ कर ही केवल मन्त्रों का हम इसमें वर्णन करते हैं जो अर्थ-धर्म—काम-मोक्ष चारों पदार्थों के पाया हैं। मन्त्र विद्या में यह एक सबसे भारी गुण है कि इसके द्वारा अनेक रोगों की चिकित्सा भी क्षणिक में हो जाती है यहाँ तक विषधर कीड़ों का विप भी शान्त हो जाता है मृत प्रायः मनुष्य भी अच्छे हो जाते हैं बड़े २ विषधर कीड़ों को मन्त्री मनुष्य मन्त्र के बल से पकड़ कर स्वयं वश में कर लेते हैं। कहाँ तक लिखा जावे मन्त्र की महिमा अपार है।

इस स्थान पर उन थोड़े से सावरी मन्त्रों को विधि समेत उल्लेख किया जाता है जिनके साधन में कठिनाई नहीं है और काय सिद्धि में प्रशस्त हैं।

आधासीसी का मन्त्र

ओं नमो बन में ब्यानी बानरी काचा बन फल खाय।
हुंकारत हनुमान जो मंडक आधासीसी जाय॥ १॥

विधि—पृथ्वी को साफ करके उस पर चाकू से सात रेखा खड़ी काढ़े और फिर उस पर सात रेखा आड़ी खैंचे और रेखा खींचते २ मन्त्र को पढ़ता जाय। ऐसे ही नित्य सात बार करैं तो आधासीसी जाय—यह प्रयोग कम से कम ३ दिन सूर्योदय से पहिले करै।

सरस्वती मन्त्र

ओं सरस्वत्यै नमः॥ २॥

विधि—निर्गुण्डी की जड़ पर बैठकर इस मन्त्र को जपने से विद्वान बन जाता है। जप एक लक्ष करै॥

बीछू के विष उतारने का मन्त्र

ओं नमो समुद्र, समुद्र में कमल, कमल में विषधर बीछू ऊपजो बीछू कहूं तेरी जात, गरुड़ कहै मेरी अठारह जात हुई काला, छुह कावरा छुह कूं कूं बान—उतररे उतर नहीं तो गरुड़ पंख हंकारू आन-सवत्र विसन मिलई उतर रे बिच्छू उतर गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ ३ ॥

विधि—इस मन्त्र को पढ़ता बीछू काटे स्थान पर सात बार हाथ फेरे तो तत्क्षण अच्छा होय परन्तु प्रथम दस सहस्र मन्त्र पढ़कर सिद्ध कर लेवे।

नेत्र का दर्द दूर करने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरू को समुद्र समुद्र में खाई इस मरद की आँख आई। पाकै फूटे न पीड़ा करै गुरु गोरख जी आज्ञा करें। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच ॥ ४ ॥

विधि—सात लवण की कंकरी से पढ़ कर झाड़ा दे तो आँख अच्छी होवें।

रोग निवारण मन्त्र

ओ३म ह्रीं खीं छीं ह्रीं श्रीं फ्रीं ह्रीं ॥ ५ ॥

विधि—इच्छानुसार जाप करने से सब रोग शान्त होते हैं।

भूतादिक के झाड़ने का मन्त्र

ओ३म् नमो ओं ह्रीं ह्रों ह्रूँ नमो भूतनायम समस्त भुवन भूतानि साधय २ हुई ॥ ६ ॥

विधि—इस मन्त्र को पढ़कर मोर पंख से झाड़ा दे तो भूतादि भाग जाय।

भूतग्रह निवारण मन्त्र

ओं नमः श्मशान वासिने भूतादि पलायनं कुरु कुरु स्वाहा ॥७॥

विधि—रविवार के दिन सिरस के पत्ते और फूल ले आवे उसमें घुग्घू कुत्ता और गंधक भी डाल देवे तथा सफेद चिरमिटी और कड़वा तेल भी डाल देवें और धूप देकर इस मन्त्र को जपै तो भूतबाधा, राक्षस, भूत, वेताल, देव मानव खेचट, डाकिनी, प्रेतनी, ये सब भूत देखकर ही भाग जाते हैं। १०८ बार मन्त्र जपने से इसकी सिद्धि होती है।

सांप कीलने का मन्त्र

बजरी २ वजर किवाड़, बजरी कालु आस पास मर साँप होय खाख मेटा कील्या पत्थर किलै पत्थर फूटै न मेरा कीला छुटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥६॥

विधि—इस मंत्र से पढ़कर एक काँकरी मारके साँप कीला जाय।

सांप खोलने का मन्त्र

कीलन भई कुकीलनी बाचा भयी कुवाच। जाहु सर्प घर आपने चुगफिर चारों मास ॥ १० ॥

विधि—इस मन्त्र से पढ़कर काँकरी मारे तो कीला हुआ साँप छुट जाय।

यन्त्र विद्या

बाल रक्षा का मन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर विधिवत् पूजे और त्रिलोह में उस को मढ़वाकर गले में बाँध देवे तो शारीरिक और मानसिक सम्पूर्ण रोग दूर हो जाते हैं, ईर्षा कोप दोष दूर हो

ह्रीच

साध्या नाम

जाते हैं। दाँत विर्विघ्न निकल आते हैं, तथा बालक को दूध का दोष भी कभी नहीं होने पाता है।

नित्य ज्वर का यन्त्र

इस यन्त्र को ठीकरी पर लिख कर उस मनुष्य के हाथ से कुएं में गिरवावे जिसको ज्वर आता होय तो उसका नित्य का ज्वर जाता रहेगा।

८२	८६	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८०

बुरे स्वप्न का यन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर सोते समय सिरहाने धर लेवे तो बुरा स्वप्न न दीखे।

हं	सं	षं	फं
षं	दं	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	पं

मसान दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर गले में बांधे तो मसान दूर होय।

८	३३३	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

शत्रु मारन यन्त्र

इस यन्त्र को चौदस की रात्रि के समय श्मशान में जाकर मनुष्य के कपाल पर लिखे और धतूरे के रस में मरघट के कोयलों को घिस कर स्याही बनावे और नग्न होकर लिखे फिर शराब संपुट में इस मन्त्र को रख कर बलि मांसादि उपहार

म्लम्लि
साध्यनाम
म्लम्लि

और अपने रुधिर से पूजन करे और उस पर अग्नि जलावें ऐसा करने से तीसरे दिन ज्वर होकर बढ़ता चला जाता है।

तन्त्र विद्या

जो कार्य मंत्रविद्या से शब्दों के द्वारा सिद्ध किया जाता है वही कार्य मन्त्रों के द्वारा लिखकर होता है वही कार्य तन्त्रों द्वारा औषधि फल फूल, द्रव्य और क्रिया द्वारा सिद्ध होता है।

शास्त्र में वैद्यक क्रिया आदि को भी तन्त्र ही कहा है, परन्तु यहाँ हमारा अभिप्राय उस मन्त्र से नहीं है। किन्तु तन्त्रोपचार के द्वारा कौतुक दृश्य दिखाने के हैं। इसलिये कुछ थोड़ी सी तन्त्र क्रिया कौतुक दृश्य को लिख कर पाठक बृन्द का चित्त प्रसन्न करते हैं।

मायारूपी अक्षर लिखना

साबुन सों कागज के ऊपर अक्षर लिखो बनाई।
नहीं देखने में दिखलाये कागजकोरो यह भाई॥
जब अचरज दिखलाना होवे तब यह करो उपाय।
पानी में कागज को पटको अक्षर पड़े लखाय॥

आग से हाथ न जले

अकर करा को पाठा ग्वार। नौसादर फिटकरी संवार।
या नौसादर और कपूर। हाथन ऊपर मलो हुजूर ॥
छाया में कर लेप सुखाय। धर अंगार कर अचरज आय ॥

कागज पर लिख अक्षर उगाना

सैंधा नमक सुहागा सम ले नौसादर मिलवाओ।
बीस लेप अक्षर पर कर के धरो धूप में जाओ ॥
थोड़ी देर मांहि ले देखो अक्षर सब उड़ि जावें।
देखनहारे लोग तमाशे देखें अचरज पावें ॥

चलनी में पानी न छने

घी गुरुवार रस लो चलनी में मोटा लेप करावे।
सुखा ताहि पानी भर तामें रुके न गिरने पावे ॥

कपड़ों में से गोली मारें और कपड़ा न फटे

पाराभर बन्दूक में करो ओट से चोट।
पशुपक्षी मर जांय सो कपड़ा होय न खोट ॥

लोहे को तांबा सा करना

इस नीला थोथा कर लोहै पै दे फेर।
लोहा तांबा सा जंचे तन्त्र करो नहि देर ॥

शीघ्र साबुन बनाना

तेल अरु पानी लेउ मिलाय करो नहिं देरी।
डालो फिर एमोनियाँ तामें बने सवेरी ॥

बाल उड़ाने की विधि

चूना हरताल मिला केला पानी। लो राख ढाक उसमें मिला दीजै पानी ॥ बालों पै ताको लेप कीजै सुजानी। गिर जांय बाल रोम कहं प्रेम सुवानी ॥

नकसीर बन्द करने का यन्त्र

गोबर सूंघते गाय को होवे नकसीर बन्द ।
प्रेमरीत ये तन्त्र की बदी करत मतिमन्द ॥

नींद न आने का यन्त्र

सेत कौफी का जो कोई खाई । दींद न आवे रात जगाई ॥

देह की दुर्गन्ध जाय

लाघ कदंब का पत्र ले अरु अर्जुन का फूल ।
पीस लेप कर देह में हो दुगन्ध निरमूल ॥

बांझ के गर्भ रहे

रस निरगुण्डी में पीसा तुम गोखरू को कही मन्त्र ।
बांझ नारी जो पिये गर्भिण होवे यह है तन्त्र ॥

शीशी अग्नि से भरी दीखे

भर शराब शीशी में दीजै तामें गंधक डार ।
धरो अंधेरे में यों चमके शीशी में अंगार ॥

इन्द्र विद्या

अदृश्य (गायब) होना

लोह पात्र में सप्त दिन, बच अंकोल के तेल । राखे फिर **मुख** **में** सुदिन गायब हो मन खेल ॥ दुग्ध भैंस, हरताल ले तेल **बनाय** सुअंग ॥ धारै गायब होय सों कौतुक करे सुरंग ॥

मन्त्र—ओ३म् नमो भगवति रुद्रेश्वराय नमो रुद्राय व्याघ्र चर्म परिधानाय डमरु चंड प्रचंड कालि काली स्वाहा ।

विधि—काला श्वान भूखा राख के काले तिल दूध खिलावे, पिट्ठा में के काले तिल लेके तेल पिरावे, उस तेल का काजर नेत्रों में आंजे तो गायब होय।

अधिक भोजन करे

अर्क लाकड़ी मन्त्र पढ़ि, अष्ट बार कर लेय।
भोजन अधिक सु पावई कौतुक में चित देय॥

मंत्र—ओ३म् महा मत्त सेनाधिपतये नमःमानि भद्राय अन्नास्थित मतं देहि ये स्वाहा।

भूख न लगे

गूलर फल अन्कोल में, जो मिलाय के खाय।
भूख न लागे तासु को, उदर भरा सु दिखाय॥

एक मास भूख न लगे॥

ओंगा चावल शुद्ध कर, अजा सखी पय लाय।
खीर बना भोजन करै मास न भूख दिखाय॥

बिना खूंटी खड़ाऊं ऊपर चले

पीस चिरमिटी पानी संग, लेप खड़ाऊं कराय।
कोस एक चाल सुघड़ अचरज सबहिं दिखाय॥

सौ योजन चले

अश्व लार अक्काल का, तेल चिरामटी लाय।
हाथ पाँव में ले पिये, सो योजन चल जाय॥

स्तन गायब

कूकर काला माँस ले सिरस पुष्प मिलाय। मले हाथ मुट्ठी बंधे तुरत दिखावे ताय॥ देखत गायब होंयगे स्तत तिय तिहि काल। मुठी खोल फिरि देखि सो कौतुक रत्न विशाल। शोरा थल कुलाल की दोनों लावे जाय। गोली बांधे नीर सों सत

कुआरी लाय ॥ दोउ हाथ गोली रखे एक देय दिखाय । स्तन गायब दूसरी देखत परें लखाय।

बिना दीपक पढ़े

उल्लू की ले खोपड़ी घी सों काजर पार ।
नैन आंज पढ़ लीजिये, बिनु दीपक सरकार ॥

अदृश्य अक्षर

नीबू रस सों लिख न दिखाय । अग्नि तपाये दृष्टि पराय ॥
लिखे दूध सों कागज कोरा । तपन करावें अक्षर ओरा ॥

लोहे पर लिखना

खरा तूतिया लेयकर तासों लिखे बनाय ।
लोहे पै अक्षर बनै कौतुक भली दिखाय ॥

बिल्ली बन्दर सा दीखे

श्याम बिलाई के मुखहिं बीज अरण्डहिं बोय । पाके बीज सु राख मुख बिल्ली सा तब होय ॥ ले बन्दर की खोपड़ी रत्ती देय बुवाय । ताकी माला डार गल बन्दर सम दिखराय ।

चोरी निकालना

मन्त्र—ओं ह्यु चक्रेश्वरी चक्रधारणी चक्रवेगी कोटि भ्रामी भ्रामी चोर गृहाणि स्वाहा ।

विधि—२१ बार पढ़ चावल खिलावे तो चोर के मुख सों रक्त बहै । प्रथम मन्त्र सिद्ध करले ।

स्त्री पुरुष में परस्पर बैर बढ़े

मूष बिलाई बार दोउ जाकी खाट रखाय ।
पिय पत्नी दोउ बिलग रहें कौतुक भली लखाय ॥

सर्प विष उतरे

सिरस फल सुखवाय के पुट इक सिरस लगाय ।
मिसरी मिर्च मिलाय के प्यावै विष उतराय ॥

थप्पड़ मारे बीछू विष उतरे

चढ़े जहाँ तक कक विष तहाँ पर कर यह यत्न ।
गोबर बंध लगाय के एकहि बेर सुजत्न ॥
मारे थप्पड़ खैंच के वाही ठाम विचार ।
विष उतरै जितनो जबहि फिर योंहि परचार ॥
जब काटे स्थान पर विष आजावे बोल ।
तब ही छोड़े पात्र को मोहन बन्ध न खोल ॥

जलती जंजीर खेंचना

अकरकरा घी ग्वार ले हाथन में लपटाय ।
खैंच साँकली गरम सो अचरज एक दिखाय ॥

प्रेमोत्पन्न करना

कनक बीज अरु बिजौर प्याज मिलाय सुखाय ।
सूंघत ही प्रियतम बनै मोहन कोग सुहाय ॥

बोतल में अण्डा उतरना

अण्डा सिरका मांहि भिजावे । नरम होय शीशी बिच पावे ।
पानी तामें देउ भराय । अण्डा फूल सु निकसे नांय ॥

रसायन विद्या

रसायन निरुक्ति

रस आदिक जे धातु सब उत्तम जासों पाय ।
सोई रसायन युक्ति है वरनी चरकाचार्य्य ॥

रसायन का गुण

मेधा शक्ति स्मर्ण अरु, स्वर वर्णन सुख काय । इन्द्रीगण उत्तम बलहि, जासों लेवे पाय ।। रहै तरुणाई बनो, नहीं बुढ़ापा आन । आयु बढ़े जा योग तें, सोई रसायन जान ।।

रसायन भैषज्य गण

यज्जरा व्याधि हरणं भेषजं तद्रसायनं । जरा व्याधि को जो हर भेषज सोई रसान । देत निरोगन बल बढ़ा वृष्य अुही सत जान ।। वृष्य रसायन औषधी एकहि करके मान । गुण में कुछ अन्तर नहीं नाम भेद पहिचान ।। उदाहरण जिमि भूषण रूपहि करै द्विगुण शोभंत । तिमिहिं रसायन मनुज को शक्ति देय मकरंद ।। सानहि हीरा नहीं चमक दमक दर्शाय । तिमिहि रसायन के बिना मनुज शक्ति नहि पाय ।।

रसायनोत्कट प्रभाव

भला रसायन में भरयों उत्कट एक प्रभाव । सदा वीर्य रक्षा करे याको यही स्वभाव ।। रसिक रसायन सौगुनी योग रसायन हेत । यह खाये सुख देत है वह पाये सुख देत । रसिक चमक चाखे भली कंठ रसायन धार । आकर्षण स्तम्भन करहि वाजी-करण बिहार ।। सुख मन में प्राणन रखें जिमि योगी सुख पाय । तस ही रसिक शरीर को बीज गती ठहराय ।। ज्यों बाजा गति में प्रबल साधत सबरे काम । तसही बाजीकरण यहि कहाँ प्रयोग सुखधाम ।।

वाजीकरण के लक्षण

जाके सेवन से अधिक उत्पति हो सन्तान । आल्हाद तुरतहि वाजीकरण सो जान ।। जाके सेवन से मनुज बला हो अश्व समान । केलि कला में हाथ नहीं प्रतिहत कबहुँ सुजान ।। प्यारा

दो अति तीयन का पुष्ट काय अधिकाय। वृद्धा हमें वीर्य गति अक्षय तासु दिखाय। जिमि सुवृक्ष शाखा सहित फैलत शोभा पाय। तिमि ही संतति सो मनुज शोभसु वाज खाय॥ मूल हेतु सन्तान का यश श्री बल की खान। मोहन पुष्ट प्रयोग बड़ी वाजीकरण हि जान॥

रसायन भेद

दो प्रकार के रसायन, कहे मुनी जन गाय।
कुटी प्रावेशिक दूसरी वीततपिक सु सुहाय॥

कुटी प्रावेशिक की विधि

साधु पुन्य कम्मा सजन तीन वरण घर जाय। इक निर्वात स्थान में कुटी लेय बनवाय। अति प्रशस्त आलय पुनि ऊंचाई सम्मान त्रय परकाटा को सुरख वायु मार्ग रख छान। शीतभीत ग्रीष्म सुखद सब काल सुख दैन॥ वर्जित तिय सो स्वच्छ अति रहै सदा दिन रैन। कुटी मांहि बैठे बहुरि वैद्य सु आज्ञा पाय। स्वाद्य रसायन युक्त सों लेवे सुघड़ बनाय॥ शुभ मुहूर्त शुभकाल शुभ लग्न सुशुभ ऋतु पाय। शुद्ध होय परवेश कर बेटे बेटी में जाय॥ संसाधन परिथम करै भेषज इच्छु मंगाय। ताकी विधि सोई कहत हों सुनिये ध्यान लगाय॥ शरीर संशोधन विधि। काया। पहिले शोधन फेर रसायन लेय। बिनु काया साधे कछू रसायन गुण नहिं देय।

गुण—हर्र आंवला सेंधव जान। घुड़ बच वायविडङ्ग सुआन॥ हल्दी पीपल सोंठ संवार। चूर्ण गरम जलसों सुउतार॥ स्नेहन स्वेदन करम, परिथम कर मन लाय। काय शुद्धि है जाय जब, लेय वस्तु यह पाय॥ मल शुद्ध के कारने तीन परमान मनि पिये यवागू पाँच दिन घृत ऋषि दिन मंड सुजान॥ जग शुद्धि हो

जाय जब सेवन करे रसाइन । चरक ऋषी वर्णन किया योग्य सिद्ध बलवान ॥

आमलक रसायन

माघ फाल्गुन मास सुहाय । कर से तोड़ आंवले लाय ॥ बीज सवन के देय निकार । पुट इक्कीस दे आँवला कार ॥ छाया माँही लेय सुखाय । आढक एक सुतोल बनाय ॥ जीवनीय गण औषध लेय । वृहणीय पुनि तापर देय ॥ शुक्रबर्द्धनी हू ल लीजे ॥ वयस्थापक तापर दीजे ॥ पात्र एक में सकल भराय ॥ चन्दन अगर धौ खैर मंगाय ॥ शीशन असन सार ले काढ़ । हर्र बहेड़ा पीपल बाढ़ । ब्रच चीता चव्य वाय बिडङ्ग । आढक तेल मांहिकर संग ॥ दश गुन जल में ताहि चढ़ावे । रहे आढ़कभर तब उतरावे चूर्ण आँवला प्रथम बनाया । सोअल तामें डेउ जिलाया ॥ वेश अग्नि से ताहि पकावे । जल न रहे तभि उतरावे ॥ लोह पात्र में देय सुखाय । मिरगचर्म पर पीसहु ताहि ॥ अष्टमाँस लोह चूर्ण युत मधु घृत देय मिलाय । बल अग्नि अनुमान युत सेवन करे बनाय ॥ गुण काश्यप अंगिरा और बशिष्ठ, भारद्वाज भृगु काश्-यप इष्ट । सेवन करी आमलक पान । जिये वर्ष दश सहस निदान ॥ सेवन करे बुढ़ापा जाय । बुद्ध इन्द्री बल सकल बढ़ाव ॥ अत्रि ऋषि जो कही रसायन । सेवन करे महा सुख दायन ॥

मेध्य रसायन

चीर सङ्ग मंडुकपर्णि रस वा मधुयष्टी लेई । रस गिलोय वा शङ्ख पुष्पि जड़ पुष्प कलक कर देई ॥ एक २ का पय सङ्ग नित प्रति जो कोई करतें पान । आयु अग्नि इन्द्रजल बाड़े पुष्ट होय तन मान ॥ बढ़े काम बल रोग नष्ट हो सुखी सदा रहे प्रानी ॥ मेध्य रसायन चार चरक मुनि सुगम कहीं हित जानी ॥

पीपल रसायन

जो रसायन सर्व गुण का चाओ। तो पीपल का योग बढ़ाओ मधु अरु घृत के सङ्ग में पाँच पीपरे नित्त। वर्ष एक सेवन करे बाढ़े काया हित॥ खाँसी क्षय गल रोग अर्श हिचकी विषम ज्वर जेते। पीनस गुल्म बात व्याधि सब कफज रोग हन तेते॥ पीपल नाम रसायन याको जो श्रद्धासो पावे। मोहन काया पुष्ट करे सुख सदा सुअधिक बढ़ावे॥

बंगेश्वर रस क्रिया

रांगा पत्र अग्नि पे तावे, मट्ठा माँहि बुझावे। तेल माँहि काँजी में पुनि गौ मूत्र माँहि बुझवावे। सप्तवार राले रस में पुनि अर्क दुग्ध घुटवावे। या विधि रोग शोध कर सज्जन फिर यों भस्म करावे॥ पीपर छाल इमलिका छाली भाग जो मिल जावे। चोखी भाँति कढ़ाई में धर नीकी भस्म बनावे। पारद राँगा दोयले एक जीव करवाय। धरे कसेला चूर्ण में भस्म तुरत बनजाय॥

मृगांक मारण विधि

राँगा ले पैसा भरौ सीसा चूल्हे पर गढ़वावे। विषखपड़ा की जड़ के टुकड़ा तामें रखतो जावे॥ जब जल भस्म होय सबकी पुनि ताहि दाब कर राखे। रत्ती एक पान सङ्ग खावे सुक्ख घनेरा चाखे॥ शहद मिलाय खाय जो प्रानी खाँसी शूल नशाने॥ स्वाँस क्षुद्र विष मह कीड़ा वासों सभी खसावे॥

चाँदी मारण विधि

चोखे चाँदी पत्र तले रूपा माखी डार।
सरवा संपुट फूंक ले चाँदी भस्म सुसार॥

ताँबा रस बनाने की क्रिया

ताम्र पत्र नीचे ऊपर रूपा माखी लेपन कर।
सरवा संपुट गज पुट फूंके विमल ताम्ररस लहिवर ॥

नागेश्वर विधि

शोभा सीसा लेय गलावे डाल कढ़ाई । मांही घोट केवड़े घोटा से तिहि तब तक लाल दिखाई ॥ लाय भस्म नागेश्वर की चोखी जो वैद्य बतावे । रत्ती भर इक्कीस दिना लो खाय अधिक सुख पावे ।

सार बनाने की क्रिया

चूरण ले गज बेलि का लोहो जो मिल जाय । ईंगुर द्वादश अंश ले घी गुवार रस लाय ॥ घोटे पहर सु दोय की सरवा मध्य रखाय। गज फुट अग्नि लगाय के सार भस्म बन जाय ॥

(पारद) रस रसायन बनाना

पारद गूलर दुग्ध में नीके खरल कराय। उक्त क्षीर में हींग मल मूस भलौ बन जाय ।। तामें पारद धार कर कंदा सेर मंगाय। फूंक भस्म पारद बने खात रोग नस जाय ॥

गौदन्ती हरताल भस्म करण

अर्क दूध मल अग्नि दे भस्म होय हरताल ।
ज्वर खाँसी जूड़ी विथा सबही देवे टाल ॥

बसन्त मालती बनाने की क्रिया

सुवर्ण पत्र इक माशे लीजो मोती माशे दोय । सिंगरफ तीन चतुर मिरचा ले पुनि यों करै सुहोय ॥ शुद्ध खपरिया आठमाशे ले मक्खन खरल करावे । कर सबको इक ठौर पीसकर गोला सुघड़ बनावे ॥ करे घुटाई ताकि ऐसी चिकनई रहन न पावे । ये मालती बसंत सरस रस चोखे ही बन जावे ॥ पीपर शहद संग जो पावे

विषय ज्वर मिट जावे । हो शरीर अति पुष्ट जोग यह वैद्यक चतुर बतावे ॥

त्रिफला रसायन

त्रिफला मिश्री सङ्ग में एक वर्ष लो खाय । आयु बढ़े बुद्धि बल बढ़े चरक ऋषि कहि गाय । त्रिफला मधु घृत सङ्ग में अथवा लोचन संग । अथवा सङ्ग मुलैहटी सेवन कर बन चंग ॥ लुगदी त्रिफला की बना लोहे पात्र लिपाय । सूखे तभी उतार कर मधु जल से नित खाय ॥ वष एक लों तक करे ये प्रयोग मन लाय । पाचे पर घृत पान कर अङ्ग सुदृढ़ हो जाय । आयु बुद्धिकता बहुरि बल को देय बढ़ाय । रोग सकल तनके हरे जो विधि पूर्वक खाय ।

आकर्षणी विद्या (मैस्मिरेजम)

गुरुपदपंकज ध्यानधरि गवरि गनेश मनाय । प्रेताकर्षण विधि कहूँ सुनिये सब चितलाय । पूर्वकाल विधि छोड़ के नवि रीति अनुसार । आत्मिक आकर्षण कहों लेउ चित्त में धार ॥ अंग्रेजी में कहत हैं याहि मिस्मरेजम सब लोग । वशीकरण यह प्रेत को मोहन बरनत जोग ॥

आकर्षण के भेद

दो प्रकार के होते हैं आकर्षण सुखदाय । इक आरोग्य कारक कहा दूजा साधक कार्य्य ॥ रोग अनेकन भाँति के बिनु भेषज किये पान । निश्चय अच्छे होते है करहु बुद्धि परमान ।

अवस्था

जाग्रत पहिली अवस्था निद्रा भ्रमण सुदोय ।
परोक्ष दर्शिता तीसरी कही अवस्था होय ॥

कार्य कर्त्ता

पात्र प्रयोक्ता होत हैं मिडिम मेम्बर जान ;
गुरु चेला जानों सही कर्तब करें जुमान ॥

योग्य पात्र के लक्षण

जाके चित्त में प्रेम हो कार्य करनका मीत । स्थिरचित गोरा बदन अरु स्वभाव सुखरीत ॥ रोग शोक अरु भोग सों दूर होइ सबकाल । सकल सुचिंता रहित अति मुख प्रसन्न प्रतिकाल ॥ दयामया श्रद्धा बहुरि भक्ति चित्त में होय । ऐसे को कर पात्र फिर करै इष्ट सब खोय ।

योग्य प्रयोक्ता

लघु भोजन स्नान नित करै स्वच्छ रहै चित्त । मादक स्वादक वस्तु को, तिरस्कार कर नित्त ॥ निडर धीर अरु वीर पुनि सन्तोषी उपकारि । तिय सेवी होवे नहीं दाता परम उदार ॥

नियम

स्वाथ साधना हेत कार्य को कबहुँ न करिये । खेल दिखावन काल कभू नहिं चित में धरिये । अधिक भीड़ जहां होय वहाँ नहिं करै प्रयोगा । करै ध्यान बट जाय चित्त पावे दुख सोगा ॥ कसरत करके कबहुँ सिद्धि प्रयोग न लीजै ॥ भूखा करै जुनाहिं खायकर पीछे कीजै ॥ रोगिन पर नहिं करै करै तो हाथ न फेरे । नहिं तो पावे रोग चित यह नियम निवैरै । अपने से बलवान पात्र पर करै न घर्षण । ऐते नियम धार चित्त कर प्रेमाकर्षण ॥

काल निर्णय

रात्रि काल उत्तम कहा, मध्यम दिन का जोग ।
जो प्रयोक्ता सिद्ध हो, दिन में करे प्रयोग ॥

प्रयोग विधि

जापर चित चाहै प्रयोग को ताको प्रथम बुलावे। दक्षिण मुख कर सन्मुख अपने नीचो नैक बिठावे ॥ उससे ऊंची तनिक प्रयोगी आसन अपनी धारै। दृष्टि बाँध कर लखे पात्रको पलक बिनाही मारै ॥ इक घटिका पश्चात प्रयोगी यों प्रयोग चित धारे। दोउ करकी उंगरी सिर सों पात्र के पास उतारे ॥ हाथ उदर तक लावे बहुरो नीचे को ले जावे। बारम्बार करे या विधि को जब तक मूर्छन आवे। जब मूर्छागत पात्र होय तब सावधान चित चाई। आकर्षण कर प्रेत आत्मा वाके तन मन भाई। इच्छित प्रश्न सु पूछो तासों विलंब न अधिक लगावे। पात्र शक्ति अनु-मान प्रेत को हर्ष चित्त ठहरावे ॥ पुनः प्रेत प्रस्थान करै तब यह प्रयोग नित लावे। उलट उदर सो पास देय जब तक नहिं पात्र जगावे। जगे पात्र की मूर्छा जबहीं मीठे बचन उचारे। प्रेम करे नित नूतन दूना पात्र सुप्रेम प्रचारे ॥ इहि विधि नियत समय पर नित २ कर प्रयोग मन लावे। मोहन करे समाज सुक्ख दै काय सिद्ध को पावे ॥

सावधानी

पास करते समय पात्र का गात हाथ नहीं छीए। हाथ गात के निकट रहै अति विलग न तासों लीए ॥ मूर्छा काल लागते ही झट पास बन्द कर देवे। पास मूर्छा काल न देना यह चित में धर लेवे ॥ भाव दूसरा चित नहिं राखे सत्य प्रोक्ता भाखें। मोहन प्रेताकर्षण करके तुर्त मनोरथ साधे ॥

अन्य शिक्षा

जो एक दिन में सिद्धि न पावे प्रोक्ता नहिं घबड़ावे। साहस चित में धारे निश्चय नित प्रयोग बढ़ावे। करत करत अभ्यास अवश्य ही सिद्धी को नर पावे। सत्य परिश्रम का फल मोहन कबहु न

निष्फल जावे । और अभ्यास करते बहु दिन बीत जांय तब देखे, पात्र पलट कर साधन कीजे सिद्धि प्रयोग सुलेखे ॥ नियत काल स्थान नियत में नित २ कारज साधे । चित उत्साह प्रोक्त पात्र की प्रेम प्रतिज्ञा बांधे ॥

अद्भुत रहस्य भेद ।

करत करत अभ्यास जिहि प्रोक्ता पात्र सुआन । शक्ति चिंत उत्पत करहिं गुप्त भेद यह जान ॥ सोइ शक्ति कारज करे यह चित की बात बसाय । गुप्त भेद मोहन कहा सूक्ष्म रीति सों गाय ॥

रत्न परीक्षा विद्या

रत्नेन शुभे न शुभं भवति नृपाणाम निष्ठम शुभेन ।
यस्मादतः परीक्ष्यं दैवं रत्नाश्रितं तज्ज्ञे ॥ १ ॥

अर्थ—शुभ और अशुभ लक्षणों वाले रत्नों के धारण करने से राजा लोगों को शुभाशुभ फल होता है । इस कारण रत्न लक्षण जानने वाले पुरुषों को उनके आश्रित देव की परीक्षा भी करनी चाहिये ।

रत्न नामावली

हीरा, पन्ना, लाल, नीलम, गोमेद, शंख, पुखराज, मोती, मूंगा ये मिलाकर नवरत्न कहलाते हैं ।

मणि—वैदूर्य, पुलक, विमलक, राज फुटिक, चन्द्रकांति मकतमणि, ब्रह्ममणि, ज्योति रस सस्यक इत्यादि ॥

अन्य रत्न

स्त्री, घोड़ा, हस्ती आदि को भी रत्न कहते हैं क्योंकि इन में भी रत्न के ही समान लक्षण गुण होते हैं, इनके शुभाशुभ धारण करने से मनुष्य शुभाशुभ फल पाते हैं ।

रत्नोत्पत्ति

मुनियों ने रत्नों की उत्पत्ति कितने ही प्रकार से वर्णन की है। एक कहते हैं कि हीरे की उत्पत्ति दधीचि ऋषि की अस्थि से हुई है। दूसरे कहते हैं कि बल दैत्य के देह से और तीसरे कहते हैं कि पृथ्वी और पाषाणों के संयोग से पृथ्वी के स्वभाव से ही पाषाण ही रत्न बन कर प्रगट होते हैं सर्वत्र भूमि एक सी नहीं सर्व स्थानों में रत्नोत्पन्न नहीं होते जैसे ही बुन्देलखण्ड में और मोती सिंघल द्वीप में।

हीरा की उत्पत्ति

श्वेत रंग का हीरा वेणा नदी के तट पर उत्पन्न होता है, सिरस के फूल के रंग का हीरा कौशल देश, लाल रंग का हीरा हिमवान पर्वत अरु सौराष्ट्र और काले रंग का सूपरिक देश में उत्पन्न होता है। पीले रंग का मातंग देश और कलिंग देश में उत्पन्न होता है। हीरे के तीन स्थान हैं नदी-खानि और ऊसर ॥

हीरा आश्रित देवता

श्वेत वर्ण पट कोण हीरा होय उसका इन्द्र देवता होता है। काले हीरे का देवता यम। नीला पीला चाहे जिस रंग का हीरा होय उसका देवता विष्णु। स्त्री के योनि आकार का पीले रंग के हीरे का वरुण देवता होता है।

हीरा वर्ण जाति

श्वेत वर्ण का हीरा ब्राह्मण, लाल पीला क्षत्री, हरे रंग का वैश्य और काले रंग का शूद्र को शुभ होता है।

शुभ हीरा

जो हीरा जल पै उतराय। टूटे काहू घन सों नांय ॥
हलका चमकीला पुनि होय। विद्युत प्रभा छटा अति सोय ॥
जानिये शुभ तेहिसुनी पारखी। करहु परिक्षा रत्न सारिखी ॥

मोती की उत्पत्ति

सीप, सङ्ख, हाथी, बांस, मच्छी और शूकर इन से मोती उत्पन्न होता है। सिंहल द्वीप, सौराष्ट देश, पारस देश, पारलौकिक कौवेर, पांड्य, वाटक और हिमवान पर्वत इन आठ स्थान से मोती उत्पन्न होते हैं।

मोती आश्रित देवता

श्याम रंग का विष्णु, श्वेत का इन्द्र, पीले का वरुण, काले का यमराज, लाल का वायु, चमक व अग्नि सम प्रभा वाले का देवता अग्नि होता है।

शुभ मोती

शंख आदि से उत्पन्न हुये मोती का धारण करना पुत्र धन और सम्पति देता है रोग शोक का नाश करता है और मनो-वांछित फल देता है।

हीरे की तोल अरु मूल्य

आठ श्वेत सरसों का १ चावल होता है इस प्रमाण से २० चावल के हीरे का मूल्य दो लक्ष रुपया होता है और २ चावल के हीरे का मूल्य २००००० का १००० वां भाग होता है अर्थात अच्छा हीरा १०) चावल के हिसाब से आता है।

हीरा साधारण का फल

संतान की कामना वाली स्त्रियाँ यदि हीरा धारण करेंगी तो उनके सन्तान नहीं होगी। हीरा चाहे जिस वर्ण और रंग का हो। सन्तान की इच्छा वाली स्त्रियों को नहीं धारण करना चाहिये पुरुष अपने वर्ण का हीरा अथवा अपने से नीच वर्ण का धारण करेंगे तो सर्व सुखी रहेंगे। शुभलक्षणी हीरा राजाओं की बिजली विष और शत्रु से रक्षा कर अनेक सुख देता है।

जो पुरुष अशुभ लक्षण युक्त हीरे को धारण करते हैं उनके बंधु एश्वर्य्य और आयु क्षीण होती है।

सारिणी मोती की तोल

५ रत्ती का एक माशा—४ कर्ष का एक पल

१६ माशे का एक कर्ष—पल का १० वां भाग १ चरण

मोती का मोल

यदि एक मोती तोल में ४ माशे का सर्वाङ्ग सुन्दर चमकदार गोल बिना दाग होय उसका मूल्य ५३००) रुपया होता है। ३॥ माशे का ३२००) तीन माशे का २०००) ढाई माशे का १३००) दो माशे का ८००) डेढ़ माशे का ३५३) एक माशे का १३५) ४ रत्ती के मोती का ६०) साड़े तीन रत्ती का ७०) तीन रत्ती का ५०) ढाई रत्ती का ३५) यह मूल्य तेज, समस्त गुण युक्त मोती का है नहीं तो मूल्य घट जाता है।

यदि एक धरण पर २३ आयदार मोती चढ़े तो उनका मूल्य ३५०) एक धरण में १६ हो तो २००) पचीस हों तो १३०) इसी प्रकार ४०० मोती एक धारण पर चढ़े तो ५) और पाँच सौ मोती एक धरण पर चढ़े तो ३) होता है।

गजमुक्ता के गुण

गज मुक्ता को बिना छिद्र के धारण करे तो पुत्र और विजय हो।

पवित्र मोती परीक्षा

शूकर की डाढ़ का मच्छी की आँख का पवित्र होता है। मेघ मोती-बादलों से उत्पन्न मोती पृथ्वी पर नहीं आता इसको देवता धारण करते हैं यह बिजली सा चमकीला होता है। वासुकी मोती परीक्षा यह सर्प से पैदा होता है। इसकी कांति नीली होती है। इसकी परीक्षा यों करे कि चाँदी के पात्र में रख कर मोती को

सूखी भूमि में धरै यदि पानी बरसने लगे तो इसको वासुकी मोती समझे। यह अमोल है राजा धारण करे यह सर्प विष और दरिद्रता को दूर करता है। यश विस्तार और शत्रुओं का क्षय करता है और विजय देता है। वंशमोती परिक्षा-कपूर और स्फटिक के समान श्वेत चपटा और विषम मोती बाँस में उत्पन्न जान।

शंखजा मोती—यह चन्द्रमा की भांति कांतियुक्त चमकीला गोल और सुन्दर होता है।

मोती वेधन—शंख, मछली, हाथ, बाँस, शूकर, सर्प और मेघ से उत्पन्न मोती में छिद्र न करना चाहिए यह विशेष गुण वाले हैं इसी से इनका मूल्य नही कहा गया।

धारण योग्य मोती—शंख से उत्पन्न धारण योग्य होता है। यदि सब गुणों करके युक्त होता है, तब पुत्र और सौभाग्य यश देता है और रोग शोक का नाश करता है (ब्रहत्संहिता) रत्न धारण गुण—रत्न अथवा रत्न युक्त आभूषणों के धारण करने से संपत्ति मंगल आयु हर्ष दर्शनीयता और ओज बढ़ते हैं और सब प्रकार की दुर्भाग्यता दूर होती है। [चरक]

—:×:—

वृक्ष विद्या

प्रथम प्रकरण

वृक्ष विद्या—वह विद्या है जिससे हम यथा विधि वृक्षों का लगाना, सींचना, ऋतु काल के अनुकूल रक्षा करना प्रत्येक प्रकार के खाद देकर पृथ्वी को उर्वरा बनाना, फल फूलों को स्वादिष्ट सुगन्धित करना, एक पेड़ पर अन्य पेड़ की कलम, दब्बा चश्मा, पैबंद लगाना पुष्पों का अनेक दिवस ज्यों के त्यों रखना पुष्पों की रंगत बदलना और वर्षा शीत और धूप के आतप से बचाकर उनको सदैव हरे भरे पुष्पित व फलित बनाये रखने का सुगम उपाय सीख सकते हैं।

नोट—वृक्ष लगाने के पूर्व प्रत्येक मनुष्य को यह विचार लेना उचित है कि यह वृक्ष जो मैं आरोपण करता हूँ कौन से देश और कैसी पृथ्वी का है क्योंकि शास्त्र में देश और पृथ्वी के भेदों को भी कहा है यथा—श्लोक

भूमिदेशिस्तथाऽनूपो जांगलो मिश्र लक्षण

अर्थात् भूमि देश तीन प्रकार का होता है १ अनूप २ जांगल ३ मिश्र, जो देश, नदी, तालाब, पर्वत, सघन वृक्ष, कमल पुष्पादिक करके पूरित हो, हंस सारस, जलचर, चक्रवाक, शसा शूकर, महिष, पशु पक्षी जहाँ अधिकतर हों, जहाँ दूब थाल, विशेषोत्पन्न होती हो, इक्षु, शाली जिस देश में बहुतायत से उत्पन्न हों उस देश को अनूप देश कहते हैं जैसे नैपाल' काश्मीर, काबुल इत्यादि। २-जो देश ऊंचा और स्वच्छ हो जिसमें थोड़े ताल, बावड़ी कूप हों, थोड़े वृक्ष हों, छौकर करील बेल आक पील

और बेर इत्यादि से पूरित हो, जहाँ हिरन, रीछ, चीते गधा यह विशेष हों उस देश को जांगल देश कहते हैं।

३—जो दोनों से मिलता जुलता है वह मिश्र है।

वृक्षों की उत्पत्ति

परमात्मा की जो चार प्रकार की सृष्टि है उसमें से उद्भिज नामक सृष्टि में बृक्षों की संज्ञा है।

उद्भिज जो पृथ्वी को फाड़कर उत्पन्न होता है।

बृक्षोत्पति में अन्य मत

वैद्यक शास्त्र में भाव मिश्र बृक्षों की उत्पत्ति इस प्रकार वर्णन करते है कि जिस समय पहिले वीर गरुण ने युद्ध में सम्पूर्ण देवताओं की सैन्य पराजय करके अमृत के कलश का शीघ्र हरण किया था उस समय उस कलश में से जो कण अमृत के जहाँ पर गिरे उन्हीं कणिकाओं से ये सम्पूर्ण प्रकार के बृक्षादि उत्पन्न हुए इनका स्वामी चन्द्रमा है।

वृक्ष प्रकरण

वृक्ष दो प्रकार के होते हैं एक बृक्ष और दूसरे बेल।

बृक्ष—वह है जो सीधा बढ़ता है उसमें से शाखें फूटती हैं। जैसे बड़, पीपर, निम्म, सिरसादि।

बैल—वे हैं जो बृक्षादि का सहारा लेकर फैलती हैं।

इसके अतिरिक्त उद्भिज और भी चार प्रकार के होते हैं यथा बनस्पति, वीरुधि, वानस्पति और औषधि—

१ बनस्पति—जो बिना फूल के फल जैसे बड़, पीपर गूलर इत्यादि

विरुधि—जो लता फल फूल वाली होकर अनेक डालियाँ युक्त घनी हो जाती है उसको वीरुधि करते हैं। जैसे पान, गिलोय वेल धमासा इत्यादि ।

वनस्पति—जो फूल आकर फलती है उसको वनस्पति कहते हैं। जैसे, आम, जामुन, नीबू, नारंगी केला इत्यादि ।

इसी का भेद एक क्षुप होता है जो वृक्ष पतले २ व छोटे-छोटे होते हैं उन को क्षुप कहते हैं।

औषधि—फल के पकने से जो नष्ट हो जाती है वह औषधि कहलाती है। यह चतुर्थ प्रकार की सृष्टि को अत्युपयोगी होती है ।

वृक्षों के लिंग भेद

जिस प्रकार मानवी सृष्टि (जरायुज) पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक तीन प्रकार की होती है उसी प्रकार वृक्ष भी उपरोक्त प्रकार के हुआ करते हैं।

पुलिंग वृक्षों के लक्षण

जिस वृक्ष के फूल पत्ते न तो बहुत बड़े हों और न बहुत छोटे हों किन्तु मोटे कड़े हों उस वृक्ष को पुलिंग अर्थात पुरुष जाति का वृक्ष कहते हैं।

स्त्री संज्ञक वृक्षों के लक्षण

जिन वृक्षों की शाखायें कड़ी, कद लम्बा, पत्ते चिकने, फल-फूल सुन्दर हों उनकी स्त्री संज्ञा है।

नपुंसक वृक्षों के लक्षण

जो उपरोक्त दोनों भेदों से मिश्रित हों अथवा जिसमें उपरोक्त लक्षण भेद एक भी न हो उसकी नपुंसक संज्ञा जानना।

वृक्षों के भूख प्यास के लक्षण

जिस प्रकार मनुष्यों को क्षुधा पिपासा-निद्रा आदि उपाधियाँ सताया करती हैं उसी प्रकार यह वृक्षों पर भी अपना प्रभाव रखती हैं जो समय २ पर उद्यानक (मालियों) की भूल से उत्पन्न हुआ करती हैं। वृक्षों पर, इन उपद्रवों का ठीक वैसा ही प्रभाव पड़ता है जैसा मनुष्यों पर अर्थात् जिस प्रकार अन्न के न मिलने से पुष्ट पुरुषार्थी पुरुष कृश होकर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार वृक्षादिकों को उनका भक्षण न मिलने से वे भी नष्ट हो जाते हैं।

नोट—वृक्षों की क्षुधा पिपासा मृतिका और जल के ग्रहण करने से जानी जाती है।

क्षुधित वृक्ष के लक्षण

जो वृक्ष हरा भरा दीखे परन्तु पुष्ट न हो तब उस ऐसे लक्षण युक्त वृक्ष को क्षुधित [भूखा] जानना चाहिए।

उपाय—क्षुधित वृक्ष के चारों ओर मिट्टी लगाना चाहिये क्योंकि वृक्षों का भोजन मृतिका है। जैसे मनुष्य जल से पुष्टि पाता है उसी प्रकार वृक्ष भी नित्य नवीन अथवा समय २ पर नवीन मृतिका के योग से पुष्टि पाते हैं।

तृषित (प्यासे) वृक्ष के लक्षण

जो वृक्ष मुरझाए से दृष्टि पड़ें पुष्ट हरे भरे न हों तो उनको तृषित [प्यासे] समझना चाहिए।

उपाय—तृषित वृक्ष को उसी समय जल से सींचकर उपद्रव शांत करना चाहिये। पानी लगाते ही वृक्ष ैतन्य हो जायगा।

निद्रित वृक्ष के लक्षण

जिन वृक्षों के पत्ते आपस में चिपट जाया करते हैं अथवा

संकोच [तंग] हो जाया करते हैं उन वृक्षों को निद्रा के वशीभूत समझना चाहिए।

उपाय—सोते हुए वृक्ष में नवीन मृतिका, पानी देकर निरावन से निद्रा नष्ट हो जाती है।

उद्भिजात पर पंच तत्वों का प्रभाव और उनके उदयास्त का लक्षण

उद्भिज सृष्टि में नीच पच भूत [पृथ्वी-जल अग्नि वायु आकाश] का प्रभाव हुआ करता है, उनको इस प्रकार समझना चाहिए।

१—वृक्षों में जो कठोरता है वह पृथ्वी का अंश है, २—जो गीलापन है वह जल का, ३—जो उष्णता है वह अग्नि का, ४—जो बढ़वारी है वह वायु का अंश है, ५—जो छिद्रों का होना है वह आकाश का अंश है, सारांश यह कि उक्त प्रकार से पाँचों तत्व वृक्षों में भी विद्यमान रहते हैं।

जिस समय किसी तत्व की न्यूनाधिकता होती है उसी समय उसके अनुसार वृक्षों में उपाधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिस प्रकार मनुष्य जाति में दोषों के विषमभाव से रोगोत्पन्न हुआ करते हैं उसी प्रकार तत्व दोषों की विषमता से वृक्षादि भी रोगी हो जाते हैं।

नोट—वृक्षादिकों के रोग निवारणार्थ चतुर मालियों को उनके रोगानुसार चिकित्सा करनी चाहिए। इस पुस्तक के अन्त, में जो विविध प्रकार के मसाले औषधियाँ इत्यादि लिखि है उन

१ वात पित कफ ये ही तोन दोष मैं इन्हीं के अन्तर्गत पाँचों तत्व विराजमान हैं इसी से स्थावर तत्व अरु जंगम दोषों की संज्ञा समान है।

को काम में लाकर वृक्षों को ग्रसित रोगों से मुक्त करना चाहिए। यह उद्यानक का प्रथम कार्य है कि वृक्ष विद्या विषम भली भांति देखे क्योंकि सम्यक प्रकार से वृक्षों का जीवन मरण पालन पोषण उद्यानक ही के हाथ में है। जहाँ पर उद्यानक कुशल नहीं होते अर्थात अबुध वादी, मानी होते हैं वहाँ वृक्ष अनेक कष्ट पाकर स्थान को शून्यागार बना देते हैं जिस प्रकार अधेड़ वैद्य रोगों को भी असाध्य बना कर प्राण हर लेते हैं उसी प्रकार वृक्ष विद्या कलाहीन उद्यानक वृक्षों से स्थान शून्य कर देते हैं। इसी कारण बाग लगाने वाले सज्जन पुरुषों को भी प्रथम वृक्ष विद्या देख लेनी अति उपयोगी है, कि वह मूर्ख माली की मूर्खता से बचाकर अपने ज्ञान के द्वारा हरा भरा बनाये रक्खें और समया-समय पर जब माली चूके तभी उसको सीधे मार्ग पर ले आया करें। ऐसा करने से उपकार और कीर्ति दोनों पदार्थ दीर्घकाल तक चिरस्थाई रह सकते हैं।

उपयुक्त भूमि के भेद, लक्षण

शास्त्रकारों ने भूमि को तीन प्रकार की मानी है १ सामान्य २ विशिष्ट और ३ त्याज्य।

सामान्य भूमि के लक्षण

जो भूमि कंकरीली न हो ऊसर न हो, जहाँ खार खड्डे अधिक न हों पथरीली न हो, जल युक्त हो जहाँ सामान्य से नमी (तरी) रहती हो जो श्वेत वर्ण पीत रक्त हो, जो बालू से रहित हो ऐसी भूमि को शास्त्रकार सामान्य भूमि कहते हैं।

विशिष्ट भूमि के लक्षण

जो पृथ्वी पथरीली, कठोर, भरी, काली हो जिसमें सघन स्थूल वृक्ष उत्पन्न होते हों और जहाँ कृषी भली भांति होती हो

(इसमें पृथ्वी तत्व अधिक रहता है इसी कारण यह सर्व कार्य योग्य पृथ्वी कही जाती है) ऐसी पृथ्वी को विशिष्टभूमि कहते हैं यह सर्व कार्य योग्य है।

त्याज्य भूमि के लक्षण

जो कंकरीली-पथरीली अनेकन खार खड्डे युक्त, बावी बील से आच्छादित, जिसका स्वाद कटु (कड़ुवा) तिक्त निजल, शुष्क ऊसर समान हो ऐसी पृथ्वी को शास्त्रकार त्याज्य भूमि कहते हैं।

नोट—सामान्य से विशिष्ट भूमि उपयोगी है परन्तु त्याज्य भूमि सर्वदा त्यागने योग्य है। ऐसी पृथ्वी को परम उपयोगी खाद, मसाले इत्यादि देकर दोष रहित बना लेना चाहिए (जैसा कि इस पुस्तक में आगे लिखा है) पश्चात् इसको काम में लाना चाहिये यदि उपरोक्त खादादिक से भी भूमि ठीक न हो तो उस का त्याग करना ही श्रेठतर है।

द्वितीय प्रकरण

(आरामास्यादि उपवनं)

इस प्रकरण में उपवन व्याख्या, उपवन प्रयोजन, उपवन लगाने का समय, बाग बनाने की विधि, बाग बनाने की भूमि, बाग लगाने का क्रम वृक्षारोपण प्रणाली वृक्ष सींचन क्रिया उपयोगी खादें, मसाले कूप, बावड़ी, नाली वारासींचन प्रथा, वृक्षों की अवस्था, बागों के नाम, विवाह, शास्त्रोक्त रीति से भूमि परीक्षा जोतिष मत से उपवन स्थापन काल, इत्यादि बातों का वर्णन किया जायगा—

उपवन (बाग) व्याख्या

जिस पवित्र कुश कंटक रहित भूमि में सफल पुष्पित ऋतु और अनेकन प्रकार के सुगंधित शोभायमान वृक्ष लतादि लगाये

जाते हैं उनके मध्य स्थान में देवालय शयनालायवर थरमनायल वायु सेवनालय इत्यादि विचित्र भाँति के गृह सुसज्जित किये जाते हैं उन वृक्ष और स्थानों को सम्यक प्रकार से रक्षा की जाती है उस स्थान को आराम, उपवन वाटिका और बाग कहते हैं।

बाग लगाने का प्रयोजन

बाग लगाने से मनुष्य को अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। क्योंकि संसार में स्वेदज अंडज उद्भिजादि जितने जाति के पदार्थ हैं वे सब भाँति मनुष्यों की रक्षा के हेतु हैं, जिनसे सम्यक प्रकार मनुष्य का काम निकलता है। परन्तु इन सब में वृक्षादि मनुष्यों के विशेष उपकारी हैं क्योंकि यह आरोग्यता प्रदान करने में प्रधान पदार्थ हैं। इनके नीचे बैठने उठने सूंघने से प्रायः शरीर का बल और मस्तक को प्रबलता पहुँचती है। सुगंधि पुष्पों के संयोग से स्थानीय वायु शुद्ध हो जाती है जो जीवन का मुख्य आधार है।

तत्व वेत्ता डाक्टरों का भी कथन है वृक्षों में से आक्सीजन (प्राणप्रद वायु) का संचार अधिक होता है जो मुख्य करके जीवन दान पदार्थों की गणना में श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु रात्री के समय इन वृक्षों में से कारबोनिक एसिड गैस (मिषवायु) का विकास होता है इसी कारण डाक्टर लोग रात्रि के समय वृक्षों के नीचे सोने का निषेध करते हैं, परन्तु दिन में विष वायु प्रायः गुप्त सी हो जाती है और प्राण वायु (आक्सीजन) का संचार होता रहता है, जो पुष्पित वृक्षों से स्पर्श करके और भी जीव को आनन्द प्रदान करता है।

सदाचार में लिखा है कि प्रातःकाल प्रत्येक मनुष्य को वायु सेवन करने की चेष्टा करनी चाहिये। वायु ही इस देह में मुख्य तत्व है।

उपवन के लगाने से मनुष्य को बड़े बड़े लाभ होते हैं। शास्त्रकारों ने लिखा है कि बाग लगाने से सदा फल आहार को मिलते हैं। धर्म, अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थों की सिद्धि होकर मनुष्य यश का भागी होता है। बाग लगाने से यह भी एक लाभ है कि अनेकन प्रकार के पशु पक्षी उपवन में निवास करते हैं। जिनसे मनुष्य जाति को अत्यन्त लाभ पहुँचता है।

उपवन लगाने की युक्त भूमि

उपवन लगाने के लिये विशिष्टादि भूमि का लेना योग्य है जैसा कि प्रथम प्रकरण भूमि परीक्षा में कह आये हैं अर्थात् सदैव सजल भूमि को लेना योग्य है।

उपवन लगाने की विधि

जिस भूमि में बाग लगाना हो उस भूमि को प्रथम डोरी डालकर नापना चाहिये, फिर कुशल उद्यानक की सम्मति के अनुसार उसमें क्यारी इत्यादि बनाना चाहिये। यदि भूमि ऊसर हो और बाग लगाने की आवश्यकता हो तो प्रथम उस भूमि में खाद देकर उस भूमि को उपयुक्त बना लेना श्रेष्ठ है ऊसर पृथ्वी में बिना खेत कराये कभी बाग़ न लगाना चाहिये। इस स्थान पर एक प्रश्न यह होता है कि ऊसर पृथ्वी में वृक्ष क्यों नहीं होता? इसमें बाग क्यों नहीं लगाना चाहिये। इसका उत्तर यह है कि ऊसर भूमि में पार्थिव गुण अर्थात् पृथ्वी तत्व प्रधान नहीं होता इसी कारण पृथ्वी तत्व के बढ़ाने के हेतु उस में उपरोक्त क्रिया कराना अत्यन्त हितकारी है इस कार्य को एक ही साल नहीं वरन जब तक पृथ्वी ठीक न हो जाय तब तक बराबर सम्पूर्ण ऋतुओं में तदनुसार खेती करा कर पृथ्वी को गुण युक्त शुद्ध बना लेना चाहिये। इस प्रयोग को कम से कम

तीन वर्ष करना चाहिये। जब पृथ्वी पार्थिव गुण युक्त ठीक हो जावे तब उसको अपनी रुचि अनुसार उद्यानक सम्मति से उस में क्यारी, बरहा, रौस, पट्टी, गोला चौक, मार्गादि उपयोग स्थानों से सुशोभित करना चाहिये। पश्चात् वृक्ष क्रम इस प्रकार से करना चाहिये कि सामाजिक पुष्पित वृक्षों के लिये आग्नेय दिशा में स्थान देना चाहिये। ऋतु आवर्त वृक्षों का उन के पीछे २ लगाना चाहिये। उनके पश्चात पादप वृक्षों को लगाना योग्य है। बाग के डोरे के पास सदैव बड़े २ वृक्षों को आरोपण करें। परन्तु ढोरे के ऊपर कंटकीय नागफनी थूहर केतकी, घीग्वारादि स्थापित करें। आम्र नीबू, नारंगी खटा, मिट्ठा कमरख अमरूद इत्यादि वृक्षों के न्यारे २ तख्ते लगावें। जामुन, कदंब सिंगार शीशमादी वृक्षों को पीछे पटकें। पुष्पित पेड़ों के समीप गोल चौक वा दरवाजे के पास सुगन्धित मौलसिरी के पेड़ों को लगावें। केलों का स्थान भूमि में करें। बाग की शोभा बढ़ाने का पुष्पित पेड़ों की रक्षार्थ उद्यान में घूमने वाली रौस के अग्रभाग पर दाहिन बाग रेलिया वा महंदी को सुन्दर प्रकार एक स्त्रीं लगावे और स्थान २ पर बाग भी प्रवेश करने का सुन्दर मार्ग छेकता जावें। ठौर २ पर क्यारियों में रामवेल चमेली, बेला, मोगरा, जुही, चंपा, गैंदा, गुलाब, सेवती, मरुआ, दौना, तुलसी इत्यादि और वाहर के पुष्पित पेड़ों को लगावें उसी स्थान पर पीछे की ओर अर्थात पूर्वी किनारे पर मोर पंखी मोरशिखारादि शोभनीय वृक्षों को उपजावें। बीचोंबीच उद्यान में एक सुन्दर वायु विहित पक्का स्थान शिल्प शास्त्रानुसार बनावे उसके इर्द गिर्द स्वच्छ थोड़ी भूमि छोड़ देवें। अंगूरों की बेलों को न्यारी रक्षित भूमि में स्थापन करे, केवड़े का पेड़ भी बाग में पीछे की

और लगावें। उसका थावा बांधकर उसके आस पास भी स्थान साफ रक्खे क्योंकि इस पेड़ के पास प्रायः सर्व रहा करते हैं, कूड़ा करकट रहने से मनुष्य धोके में आकर मारे जाते हैं इसी से स्थान साफ रहना चाहिये समय २ पर बाहर के पेड़ों को बहार की क्यारियों में जो दर्शनीय चौक और गोलों के पास हैं लगाया करें और अन्य २ मेवे के पेड़ों को भी लगावें। यदि बाग बड़ा होवे तो एकादि पानी का स्थान तालावादि भी उसमें बनावें। क्यारी २ पर इस सुन्दरता से पानी की नाली निकाले कि सम्पूर्ण पेड़ प्रति समय हरे भरे ही दृष्टि आवें। बाग के मुख्य दरवाजे के पास भीतर बाहर कूप की स्थापना करे। जो यात्रियों को दृष्टि पड़ता रहे। बाग के बाहिरी ओर अनुमान से दो अढ़ाई फीट ऊंची पशुओं के पानी को सुन्दर पक्की प्याऊ बनवावे। बाग में पशुओं के निवास का स्थान दक्षिण दिशा और देवालय पश्चिम दिशा में स्थापित करे। यदि इस क्रम से न बने तो जैसा उचित समझे वैसा बनावे। अर्थात शिल्प शोखानुकूल उद्यान बनाना अत्यन्तश्रेष्ट है इसका कोई नियम नहीं है जहाँ जैसी जगह मिल सके वैसा ही बाग लगा लेवे परन्तु शास्त्रकारों ने उसका भी विधान लिखा है।

बाग त्रिकोण चतुर्कोण, पच, षट, अष्ट, बहुकोंण गोला इत्यादि सभी प्रकार के हुआ करते हैं परन्तु शिल्प शास्त्र वेत्ता चतुर्कोण बाग को सब से उत्तम बतलाते हैं और उसी के अन्तर्गत सम्पूर्ण प्रकार के कोणों के बनाने की आज्ञा देते हैं।

नोट—हमारी सम्पति में जो जहाँ जैसी भूमि उपलब्द हो वैसा ही बाग बना लेवें परन्तु शुभाशुभ और जलका सुगमता-पूर्वक मिल जाना यह दो बातें देखना अत्यन्त उपयोगी हैं।

बाग लगाने का समय

उत्तम समय बाग लगाने का प्रावृट ऋतु अर्थात् वर्षा काल ही है। क्योंकि इस समय पृथ्वी बीज ग्रहण करने के उपयुक्त होती है। जिस प्रकार मनुष्यों की उत्पत्ति करने में स्त्रियाँ ऋतु काल में गर्भधारण के योग्य होती हैं, उसी प्रकार पृथ्वी भी प्रावृट में प्रायः संगमी होने के योग्य होती है।

बाग में वृक्ष लगाने का क्रम

बाग में वृक्षों को इस प्रकार लगाना चाहिए कि प्रत्येक बड़ा वृक्ष एक वृक्ष से अनुमानतः ५ गज की दूरी पर और प्रत्येक छोटा वृक्ष ७ फीट की दूरी पर रहे और पुष्पित पेड़ों को २ फीट के अन्तर पर लगाना योग्य है बाहर के पेड़ों के लगाने में मुख्य दूरी का प्रथम बिचार करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि यह पेड़ केवल सुगन्धी और शोभा के लिये लगाये जाते हैं।

वृक्ष सींचने की विधि

जब कि पौधों को बाग में लगाओ उसी समय से प्रातः सायं दोनों समय पानी से सींचना योग्य है। दुपहरी के समय पौधों में कदापि पानी न देना चाहिये। पानी पौधों की जड़ में न डालो थोड़ा हट कर कोई पत्थर वा ईंट रखलो उस पर डाला करो। जड़ में पानी डालने से उस स्थान की मिट्टी हट कर पौधा प्रायः गिर पड़ता है। चौमासे में पानी लगाने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार शीत काल में भी एक बार आवश्यकतानुसार सींचना योग्य है।

पौधा लगाने का समय

श्रावण के महीने में पौधा लगाना उत्तम होता है कहीं पर कोई २ पौधा माघ में लगाया जाता है, परन्तु सर्वोत्तम प्रावृट ही है।

कलम, दब्बा, चश्मा जड़ौंदा पत्ता और पैवंद बनाने की विधि—

फाल्गुन महीने में सम्पूर्ण वृक्ष पतझड़ हो जाया करते हैं उसके पश्चात फिर बसंत ऋतु के आदि में वृक्षों में नवीन कोंपल निकलना आरम्भ होती हैं। उस समय वृक्षों के लगाने के अनेक काय होते हैं।

कलम लगाने की विधि

जिस वृक्ष की कलम लगाना हो उसकी डाली में से एक २ बालिश्त अनुमान कलम सदृश टुकड़े काट उन्हें इकट्ठे एक स्थान पर मिट्टी में दबा देना चाहिये और वृक्षों के अनुसार सींचना चाहिये जब उनमें जड़ पड़ जावें तब निकाल कर अलग लगा देना चाहिये। कलमों को मिट्टी में गाढ़ते समय इस बात का अवश्य ध्यान रहना चाहिये कि उनके ऊपर अधिक मिट्टी न चढ़ने पावे। शहतूत, गुलाब, कन्नेर, गुलफरंक, पेन्सटिया मिट्ठा आलूबा, खट्टा नींबू बेला नारंगी इत्यादि की कलमें लगाई जाती हैं।

कलम लगाने की दूसरी विधि

वृक्ष की डाली को काट कर धरती में गाड़ देना और उसकी जड़ पकड़ कर उगना कलम लगाना कहाता है। कलम लगाने की ठीक समय जैसा कि प्रथम वर्णन कर आये हैं वर्षा ऋतु में सावन का महीना है, परन्तु बहुत से पौधों की कलमें सदा ही लग सकती हैं किसी की कच्ची और किसी की पक्की लगाना उत्तम होती हैं। जो कलम डाली के अग्रभाग की ली जाती है वह शीघ्र फूल फलने वाली होती है परन्तु फूल और फल छोटा आता है। यह प्राय: निर्बल रहता है। परन्तु जो

कलम डाली की जड़ की ओर से लगाई जाती है वह स्थूल हो कर अधिक स्थान में फैलती है और पुष्ट फलों को प्रदान करती है बहुत से प्रकार की कलमें घमलो में भी लगाई जाती हैं।

दब्बा लगाने की विधि

वृक्ष की डाली झुका कर उसको चीरकर झुका के पृथ्वी में गाड़ देवे और कुछ हिस्सा उसका ऊपर को निकला रहने देवें जब उसमें जड़ पड़ जावें तभी उसकी जड़ की ओर से काट देवें इसको दब्बा लगाना कहते हैं।

चश्मा लगाने की विधि

इसके लगाने की यह रीति है कि एक वृक्ष की शाखा में से उसकी आँखें निकाल दूसरे वृक्ष को चीरकर उसमें धर देना चाहिये। आंखें निकालते समय इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि वृक्ष की आँख में जो कली रहती है वह न टूटने पावे बल्कि आँख के साथ एक २ इंच की छाल भी काट लेना चाहिये निकली हुई आँखों को सूखने न देना चाहिये एक प्रकार पानी में डाल देना चाहिये। जब आँख को दूसरे पेड़ की डाली पर रख चुके तब उसको सन से बांध दे। जब उसमें कल्ला फूटने लगे तब उस पेड़ की डाली को जिसमें चश्मा लगाया है काट देवे। यह चश्मा बढ़कर एक दूसरा नवीन पेड़ हो जायगा। यह काम भी सावन और माघ के महीने में किया जाता है।

पत्ता लगाने की विधि

प्रायः स्वयं ही बहुत से पेड़ों के पत्ते गिर कर अपने आप ही उग आते हैं परन्तु जब पत्ते लगाने की आवश्यकता हो तो उपरोक्त चश्मा लगाने की विधि के अनुसार पेड़ की डालों में से पत्ता आंख समेत निकाल कर पृथ्वी में गाढ़ दे और क्रमानुसार खींचती रहे, थोड़े दिवस में जड़ पकड़ जायगा।

जड़ौदा लगाने की विधि

जड़ौदा लगाने का ठीक समय सावन का महीना है बहुत से स्थानों में माघ लगाया जाता है। पेड़ की जड़ को लगाने का नाम जड़ौदा है। जिस प्रकार कलम दब्बा चश्मा पत्तादि लगाये जाते हैं उसी प्रकार बहुत से पेड़ो की जड़ें लगाई जाती हैं तब वह पेड़ होकर अपना फल देती हैं। जड़ के लगाने में उपरोक्त बातों का ध्यान रखना चाहिये। बेला, चमेली, निबोड़ा, कुन्द चम्पा, जुही, सेवती इत्यादि पुष्पित पेड़ों की जड़ें लगाई जाती हैं।

पैवन्द लगाने की विधि

किसी वृक्ष के पौधे को बड़े वृक्ष के नीचे रख उसकी डाली झुका कर उसे छील (चीर) कर और पौधे की डाली को भी छील दोनों को आपस में मिला कर सन से बांध दे और नित्य प्रति पानी लगाया करें, यहाँ तक किसी काल में भी सूखने न दें। थोड़े दिवस में जब उसमें जड़ पड़ जावे तब उस डाली को काट कर वृक्ष से अलग कर दो बस वृक्ष अलग बन जायगा। पैवंद सजातीय वृक्षों पर लगाया जाता है विजातीय में नहीं अर्थात् बेर की पैवन्द बेर जाति के वृक्षों में ही लगेगा तो फलेगा यदि किसी अन्य पेड़ पर लगाया जावेगा तो नही फलेगा। जिन वृक्ष की स्वभाव प्रकृति में एकत्वता है उन में पैवन्द लग सकती है। पैवन्द लगाने का समय भी उत्तम माघ का महीना है कहीं २ पर बसंत ऋतु के अन्त चैत में भी पैवन्द लगाया जाता है आम, आडू, अनार, नारंगी, बेर, गुलाब इत्यादि एसे पेड़ों पर पैवंद लगाया जाता है।

तृतीय प्रकरण

वृक्ष विचित्री करण

फलित वृक्षों के फलों में अनेक प्रकार के स्वाद करने के द्रव्यों

का इस प्रकरण में वर्णन किया जाता है इस प्रकरण को आम्र को अनेक प्रकार के स्वाद को बनाने के क्रम और द्रव्य [मसालों] से प्रारम्भ किया जाता है।

आम सींचने का क्रम

जैसा चाहो स्वाद आम में तैसा ही बनजावे। करे युक्ति सों सिंचना जा नर स्वाद आम का पावे॥ दाख नीर सों सीचो दाखो स्वाद आममें पाओ। पय घृत द्रव सों सीच आम को पुष्ट बनाओ चाहो अधिक सुगन्ध आम में केशर जल सिचवाओ। चन्दन दे पुनि सींच रसालहि अतिहि सुगन्धित पाओ।

दोहा—जो रसाल मधु सोचिये, म वष्टी संयोग त्वरक त्तीर पुन दे करे सौरभ पुष्ट प्रयोग॥ जिम पुरुषन पुष्टी करन रूप निकाय विधान। तसही पौधन की क्रिया का जय हित चित मान॥ काल देश ऋतु अवस्था इनको करे विचार। लेवे सदा जु आम को फल देव सुख सार॥ क्रिया अनेकन भांति की पार्थिद भेद निकाय। गुप्त भेद जानत वुही जे अति करे उपाय॥

अनार जाति भेद

हैं दाड़िम बहु भांति के देश भेद सों मान! अम्ल मिष्ट दो श्रेष्ट है या में झूठ न जान॥ दाना बेदाना बहुरि भूमि भेद सों होय। यामें संशय कुछ नहीं लख लीजे सब कोय॥ दानादाड़िम होत है भरतखण्ड में जान। बेदाना कंधार पुनि काबुल देख बखान दाता बेदाना करन अम्ल मिष्ट रस हीन। रस युत दानेदार की सीचन बहुत प्राचीन॥

अनार सीचने के मसाले

पच, घृत, मधु सों सीचिये दाढिम मलय मिलाय।
होय स्वाखित पुष्ट अरु स्वाद देय अधिकाय॥

होय सुवासित पुष्ट अरु स्वाद देव अधिकाय ॥ मधु यष्ठी सों कीजिये सो सिंचन दिन तीन। मिष्ठ होय कटु तिक्त कों पुष्प होय रस हीन ॥ गूगल धूप बनाइये अगर करै मलदूर। मलम मिलावे धूम्र है दंत बीज को नूर ॥ पुनि बोहदाना करन को सबै नीर सों सींच। मधु छकि पुनि पय की करै वेद दिवस लों कींच ॥ या प्रकार दाड़िन बनै रस कस पुष्ट सुवास। देय स्वाद अति ही घनौ करहु बचन विस्वास ॥

नारंगी के सिंचन के मसाले

नारंगी रस भरी पुनि कमरख नींबू जान। खट्टा मिट्टा बिजौरा और जमीरी मान। करिये सुवासित मिष्ठ अरु पुष्ठ जायकेदार। सींच मसाले सों खरी नारंगी रंग भार ॥ इनकी पौधन में प्रथम माँटी देऊ विचार स्वाद खरी पुनि डारि के सींचिये नीर पसार ॥ पय, घत सो दिन तीन लों मधु सों पुनि दिन एक। जेठी मधु सों कीजिये सीरे नीर विवेक। लो लवंग पुनिकर विषय त्वक गंधा लौ जाय। राखे दाहिन भूल में फूलै फलै अघाय। शनि दिन लै अंकोल को बीज नारंगी डार। बोवे सो उपजै अधिक भूमि भेद सों न्यार ॥ नारि केल जल सों करै जो सिंचन बहु काल। अति रस नारंगी बनै यह चतुरन की चाल ॥ कदली जल सों सींचिये जो नारंगी जान। कदली फल के स्वाद को लीजै चतुर सुजान। जस २ स्वादन को चहै तस २ नीर सिंचाय। खट्टे, खारी नीर सों नारंगी दरसाय।

केला सिंचन के मसाले

कदली को दीजै प्रथम गोबर मूल समेल। बहुरि नीर सों कीजिये सिंचन तलिय भमेल। नारिकलि पय मधु सरस मलय मिलावे नीर। सिंचन कदली का करै देव अमित फल वीर ॥

अगर गुग्गुली धूर की धूनी निस दिन देय। रस कदली फल में करै बहुरि सुवासित लेय॥

खजूर तैहूं नारिकेलि सिंचन के मसाले

नारिकेलि को पय पानी सों सींचिये । घृत मृतिका में डार मधू कर दीजिये ॥ याही विधि सों तेहूँ ओर खजूर कौ । सिंचन कर फल लेउ बहुत सत धूर कौ ॥

दाख सिंचन विधि

मास मीन पय नीर सों सींचिये दाख विचार । स्वाद देय अति ही घनों नीर सीर अधिकार ॥ खाँड, शहद, घृत, दुग्ध, ये मिष्ठ करन का जान । मलथ मुलहठी, अगर ये हैं सुवास को मान ॥

केशर सिंचन के मसाले

चंदन अगर मिलाइये बिल्ली लोटन लेउ । पथ घृत, गुटिका नीर में तरल मेल कर देउ ॥ फेर विचार भूमिकौ कीजै सींचे केसर जना । लै कुसुम्भ जल रंग सुन्दरी मधुयष्ठी परमान ॥

बदरी सींचन मसाले

प्रथम मुलैठी मीर पुनि मृग मद नीर मिलाय । पय घृत मधु सों सोंचिये बेर सुगंध सवाय ॥

एक नारंगी की खेती बढ़ाने की तरकीब

जो चाहौ नारंगी बढ़कर सुन्दर फल को देवे । तो उपाय यह कीजै तुतहि अद्भुत फल को लेवे ॥ चून सज्जी क्षार अस्थि का चौथाई का डाले । क्षार नीर सों सींच भूमि अच्छी तरियाँ प्रति पाले ॥ अथवा खाद अधिक सों डारै नीकी भूमि बनाव ॥

खाद के काम के मसाले

एक अंग्रेजी पुस्तक में लिखा है कि २ सल्फेट आव ऐमोनिया

१—एमोनिया ३। फास्फोरिक एसिड आधा पोटास इन मसालों से भी नारंगी की खेती अधिक बढ़ती है ।

२—यह अंग्रेजी मसाला है ।

३० नाइट्रेट आव सोडा २० पिसी हड्डी १२५ प्लास्टर पेरिस १२५ पौंड नमक बुशल राख १॥ बुशल यह सब वस्तुयें मिलाकर खेत में डाले तो खेत उत्तम फले—

अथवा

नमक, हड्डी पिसी हुई शोरा-सज्जी गोबर लकड़ी का बुरादा— इत्यादि भी अच्छा मसाला है।

१ ऐमोनिया ३। फास्फोरिक एसिड आधा पोटाश इन मसालों से भी नारंगी की खेती अधिक बढ़ती है। यह अंग्रेजी मसाला है।

॥ अद्भुत मसाले ॥

घण्टे भर में पेड़ लगाना

ले कसूम के तेल को तुलसी बीज भिजोवे। सप्त दिवस माटी में रखे, पाछे ताकू बोवे ॥ घन्टे भर में पेड़ जमावे अद्भुत खेल दिखावै। इंद्रजाल का अजब तमाशा देखे अचरज आवे ॥

शीघ्र फल लगाने का कौतुक

ले अंकोल तेल तामें पुनि बीज वृक्ष को घोलै। आम आदि का पेड़ लगावै कभी कछु नहिं बोले ॥ कमल बीज तामें पुनि घोलै माटी में लिपटावे। शीघ्र स्वाद फल लगै प्रेम सों खाय मजा वह पावै ॥

फलों को बरसों तक ताजा रखना

जो चाहो फल सड़े नहीं साल एक दो साल। कीजै ऐसी युक्ति को जो है रीति निराल ॥ मोम तायकर डालिये फल मुख बन्द कराय। जैसे का तैसा रहै अचरज परत लखाय ॥

अथवा

शीरा के मटका में राखो फल नहीं सड़ने पावे। जब चाखा

तब स्वाद रसीला ज्यों का त्यों ही आवै ॥

गुलदस्ते को हरा रखना

पुष्प अनेकन भांति के इकट्ठे लेय कराय । चुन २ बांधे तिन्हें पुनि, गुलदस्ता कहलाय ॥ अधिक दिवस जो उन्हें तुम राखन चाहो मीत । तो युक्ती ऐसी करो बरतन जैसी रीति । १॥ कार्बोनेट आव सोडा को लो पानी में घोल । छिड़को पुनि गुलदस्ता ऊपर रहे हरा बिनु मोल ॥

बिना मौसम फल फूल लगाने की विधि

शुतर मुरग के घर की मिट्टी कंकड़ कूड़ा लेना ।
खाद बनाय मूल में रखना बिनु मौसम फल देना ॥

फल फूलों का बचाना

कीकर गोंद मंगाय के पानी मांहि भिजोय । राखे फल और फूल को तामें या विधि मोय ॥ ऐमोनियम क्लोराइड लीजै पच्चीस २ ग्रेन । फल अरु फूल भिजावो उसमें रखे महीने तीन ॥ लेकर नोन बजार सों पानी तामे डार । रखे फूल फल युक्त सों हरे हरे मास चार ॥

खाद के लिए अर्क अंग्रेजी

३ गानों एक छटाँक ले नीर सेर लेउ पाँच ।
चोखी खाद बनाइये यह चतुरन की जाँच ॥

अथवा

अजा मित्र मेगनी नीर में भिजो खाद में डाल ।
उत्तम खेती बने बढ़े पैदा निश्चय फरफाल ॥

अथवा

अंजन कज्जल पानी घोल । उत्तम खाद बनाओ घोल ॥

१—कपड़ा धोने का सोडा—कार्बोनट आव सोडा होता है ।
२—ग्रेन
३—यह एक अंग्रेजी चीज है ।

शीघ्र आम लगाने का तंत्र

पुष्य नक्षत्र में लाइये गुठली आम सुजान। पय में पर से तीन दिन बोवै कर संधान॥ बृक्ष फरै लघु दिनन में यामें फरे न सार। तब कह्यौ विधि कीजिये देय लमित बरबार॥

कड़वे फल को मीठा करना

धोर सुहागा पानी मेल। सिंचन करै खाद को पले॥
पुनि मधु मधुयष्टि को लाय। पय घृत सों सींचे सुख पाय॥
वाय विडंगी पुनि ले भारी। सींच बृक्ष फल हो मिठयारी॥

बेल चलाने का उपाय

जाकी बेल चलानी चाहो ताकूं ऐसो कीजे। बोय बृक्ष के नीचे सुन्दर विधि सों पानी दीजे॥ जब वह बढ़े तनक तब ही जड़ में इक लकड़ी लाओ। डोरी बाँध बेल जो जैसी चाहो मित्र चलाओ॥ फेर बृक्ष पर छोड़ो ताको कभू न या में चूको। बेल चले सुन्दर तरिया सों पेड़ रहे नहीं सूखो॥

तंत्र

पुष्य रविवार होय तब बीज को लाय। पारख निसि अधियार में दीजे ताहि बुवाय॥ बेल चले अति ही धन अचरज माने लोग। क्षीर, नीर सों सींचिये येहि याको जोग।

१ खरबूजे को मीठा करने का सामान

खरबूजे के बीज को प्रथम करौ यह उपाय। कछुक दिवसलों राख में सपुट दीजै लाय॥ फिर भूमि को भजन कर भंजन नीकी रीत। बीज बोय कर सींचिये पय मधु दिन त्रिय मीत। क्षीर नीर सों सींचिये पुनि पुनि काल बशे खरबूजे उत्तम लगे पुष्टि मिष्ट नि शेष॥

---

१ खरबूजे उत्तम रेतीली धरती में हुआ करते हैं।

१ सेब सुगंधित करने का मसाला

सेब बीज को दीजिये सम्पुट तीन प्रमान । पय घृत, मधुयष्टी पुनः ककी सरस बखान ।। मृद मद पय, घृत युक्त कर सींचिये तीजी बार । सेब सुगंधित देय फल निश्चय रहित विकार ।

चतुर्थ प्रकरण

२—वृक्षों का रोग निदान चिकित्सा

जिस प्रकार कि जरायुज सृष्टि में किसी दोष के घटने बढ़ने से रोगोत्पत्ति हो जाती है उसी प्रकार उद्भिज सृष्टी में भी इन्हीं दोषों की न्यूनाधिकता से वृक्षों में भी रोगोत्पन्न हुआ करते हैं ।

यह पहले वर्णन कर आये हैं कि तत्वों का उसी प्रकार वृक्षों पर प्रभाव होता है जिस प्रकार कि मनुष्यों पर। इसमें संशय नहीं, इस स्थान पर हमको यह लिखना आवश्यक है कि वृक्षों के रोग कितने प्रकार के हुआ करते हैं और वह कैसे जाने जाते हैं इनका निदान केवल देखने मात्र से ही हो जाता है। या मनुष्यों के समान अष्ट प्रकार निदान इनका भी होता है ? नहीं, वृक्षों के रोग केवल देखने ही से जाने जाते हैं जैसा कि वृक्ष प्रकरण में इनके सोने जागने के निदान में लिख आये हैं ।

वृक्षों में भी चार ही प्रकार की बीमारियाँ हुआ करती हैं अर्थात् बात, पित्त, कफ और सन्निपात उनकी पहिचान यह है ।

१ सेब उसी भूमि में प्रायः होता है इसके लिये प्रथम भूमि बना लेना योग्य है जैसा कि इसमें लिखा है ।

पित्त रोगी वृक्ष का निदान

सो०—पित्त रोग का पेड़—पतला पतझड़ होय है ।
पाके फल न निवेड़-शीघ्र काल काचे तुरत ॥

दो०—अग्नि तत्व या में प्रबल, जान लीजिये भाय ।
ताही सों याके तुरत, पतझड़ हू है जाय ॥

कफ रोगी वृक्ष के लक्षण

कफ रोग वृक्षन के लक्षण ऐसे जानों भाई । चिकना वृक्षपात चिकने लिपटे अति अधिकाई । श्वेत रंग का फूल फलै कमती भारी पन जानो । लता लिपट लह लही ललित ललकत ललाम पहिचानो ॥ जैसे मनुज कफज रोगी की चिकनातन हो भाई । नेत्र फल नख श्वेत दिपैं कफ निश्चय अधिकाई ॥ तैसे ही वृक्षन मांहि स्वेतता कभकी बढ़ती मानो है निदान यह ठीक परीक्षा करके निश्चय जानों ॥

बात रोगी वृक्ष का लक्षण

है स्वभाव बात का ये ही सबको सुनौ सुखावै । प्रसर शक्ति दोनों दोषों को क्रम से बल पहुँचावे ॥ बड़ा दोष वायु का वैद्यक शास्त्र बीच यह गाया । समझ लेउ मन चतुर करौ निश्चय येही मन भाया ॥ बात रोग का वृक्ष होय सूखा अरु भारी भारी । फल नहीं लगै लखत में नीरस बापबी पगुण चारी ॥

(१) वृक्षों की चिकित्सा

पित्त की चिकित्सा

खस पद्माख, धना मधुयष्टी मिसरी सीरे नीर ।
पय सों सींच नसाओ शीघ्र हि पित रोग की पीर ॥

---

१ जिस प्रकार मनुष्यों की चिकित्सा है उसी प्रकार वृक्षों को भी जानना—

कफ की चिकित्सा

लवण क्षार सी जीत है कफ की सारी व्याधि।
शवन करत कटुतिक्त घृत सींचो वृक्षहि साध॥

वायु की चिकित्सा

घृतअर तैल वसा मज्जालैं सींचिये वृक्ष विचार।
अजा रुधिर सों सींच करैं वायु के दोष नसार॥

सन्निपात की चिकित्सा

क्षार, तिक्त कटु, चिकनी वस्तु सन्निपात में लीजै।
सबहिं मिलाकर दोष सबका शमन शीघ्र कर दीजै॥

वृक्षों के कीड़े दूर करने की चिकित्सा

गंधक लेय छटाँक भर चूना लेउ गलाया सज्जी तामें मेलकर बहुरि तमाकू खाय॥ पानी में पनि ताहिकों विधि सों करेजु मेल छिड़के नीके वृक्ष पर कीड़े भगें अलेल॥

बागों के बेलबूटों के कीड़े दूर करने की तरकीब

बुझा हुआ चूना पानी में रखा मित्र छिड़काओ। अथवा घोल तमाकू पानी याहि वृक्ष पर छाओ॥ सोडा लय १ कशिया लकड़ी जलमांही अपराओ। ऐती वस्तु करें कृमि दूरी करते देर न लाओ॥

दीमक दूर करने की विधि

दीमक लगैं पेड़ सौं दीमक या विधि देउ हठाई। हींग घोल पानी में छिड़को दीमक जाय पलाई॥ अथवा
कोलतार पेड़ों पर डालो दीमक मेहन माँहि। सूंघत ही दीमक दब जावे या में शंसय नांहि॥ अथवा मिट्टी तेल छिड़क दो नहिं घर दीमक होय। सूंघत ही दीमक मर जावे यामें झूठ न कोय॥ पत्ता लेउ चितोर का धुआँ देउ तत्काल। दीमक भागे तुरत ही यही तन्त्र की चाल॥

---

१ काशिया यह अंग्रेजी वृक्ष की लकड़ी है।

नीम और करेले की कड़वाहट दूर करने की विधि

इमली जल में औटिये प्रथम करेला लाय। कड़वाहट तुरतहि मिटै, या में शंशय नाय॥ नीम सुहागे में भली विधि सों लेउ सिझाय। कड़वाहट मिट जायगी, स्वाद भलौ दरसाय॥

फल न पकने का तंत्र।

रवि दिन मावस मारिये बकरा एक मंगाय। ताकी अस्थि चर्म पुनि देउ वृक्ष लटकाय॥ फल पाकै नहिं वृक्ष को हरे रहैं हर्षाय। कौतुक देखत होयगो अचरज लखिवे भाय॥

बिजली से पेड़ों को बचाना।

एक जस्त का तार ले ताँबा तनक मिलाय। अथवा तांबे तार में थोड़ी जस्त रखाय। हंसली डालै पेड़ में बिजली करे न मार। औरहु व्याधिन सों बचे कहै रसायन सार॥

प्रतिमा निर्माण विद्या

स्वैरंगुल प्रमाणेर्द्वादश विस्तीर्ण मायतंच सुखम्।
नग्नजितातु चतुर्दश दैर्घेण द्राविडं कथितम्॥

प्रतिमा का मुख अपने अंगुल प्रमाण से २ अंगुल चौड़ा और १४ अंगुल लम्बा नग्नजित आचार्य ने बताया है। यह भाव द्रविड़ देश का है।

(२) सब प्रतिमा अपने २ अंगुल प्रमाण से १०८ अंगुल होती है।

(३) प्रतिमा के नासिका ललाट चबुक ग्रीवा और कर्ण अपने अंगुल प्रमाण से चार २ अंगुल लम्बे बनाने चाहिये हनु को दो २ अंगुल लम्बे बनावे। चिबुक की चौड़ाई दो अंगुल रक्खे

(४) आठ अंगुल चौड़ा ललाट होता है ललाट से दोनों ओर

परे दो दो अंगुल प्रमाण शंख (कनपटी) बनावें शंखों की लम्बाई चार २ अंगुल रक्खे कान दो २ अंगुल चौड़े बनावे।

(५) कर्ण का उपान्त अर्थात् कर्णाग्र नेत्रों से लेकर भ्रू सम सूत्र करके साढ़े चार अंगुल का करना चाहिए, कान का छेद और उसके पास का ऊंचा भाग नेत्र प्रबन्ध के समान एक अंगुल ऊंचा रखना चाहिए।

(६) (गांच्छा) आध अंगुल विस्तीर्ण करना चाहिये मुख चार अंगुल लम्बा और डेढ़ अंगुल चौड़ा रखना चाहिये नरसिंह आदि देवताओं का फैला मुख ३ अंगुल चौड़ा रक्खे।

(७) नासिका को दोनों पुट दो दो अंगुल के करे और पुटों के अग्र से नासिका भी दो अंगुल जानें नासिका की ऊंचाई २ अंगुल रक्खे और दोनों नेत्रों के बीच ४ अंगुल का अन्तर रखे।

(८) नेत्र का कोष दो अंगुल, नेत्र दोनों दो २ अंगुल नेत्र की तिहाई के तुल्य तारा अर्थात् नेत्र के मध्य का कृष्ण भाग और तारा के पंचमांश के तुल्य दृक् अर्थात् नेत्र की कनीनिका बनावे नेत्र की चौड़ाई एक अंगुल करें।

(९) एक भ्रू के अन्त से दूसरे भ्रू के अन्त पर्य्यन्त दस अंगुल रखना चाहिये आधे अंगुल भ्रू की चौड़ाई दोनों भ्रू का मध्य भाग दो अंगुल और एक २ भ्रू की लम्बाई चार २ अंगुल करनी चाहिये।

(१०) ललाट के ऊपर केश रेखा भ्रू बन्द के तुल्य अर्थात दस अंगुल करै और आधे अंगुल चौड़ी केश रेखा रक्खे नेत्र के अन्त में एक अंगुल का करपीरक करै जिसको भूषिका भी कहते हैं।

(११) बत्तीस अंगुल लम्बा और १४ अंगुल चौड़ा शिर बनाना चाहिये जो चित्र बनाया जाय तो उस में शिर १२ अंगुल

देख पड़ता है और बीस अंगुल जो पिछली ओर रहते हैं वह नहीं देख पड़ते।

(१२) नग्नजित आचाय ने केश रेखा सहित मुख का विस्तार १६ अंगुल कहा है ग्रीवा का विस्तार दस अंगुल और उसकी लम्बाई इक्कीस अंगुल करनी चाहिये !

(१३) कंठ के आधे भाग से हृदय पर्यन्त बारह अंगुल अन्तर रक्खे हृदय से नाभि पर्यन्त और नाभि के मध्य से लिंग के मध्य पर्यन्त बारह २ अंगुल ही अन्तर कहा है।

(१४) उरू और जंघा चौतीस २ अंगुल लम्बे करने चाहिये जानु कल्पित (गोड़ों के ऊपर की पाली) चार अंगुल और पाद भी चार अंगुल करै अर्थात् टकने के नीचे का भाग चार अंगुल लम्बी रक्खे।

(१५) बारह अंगुल लम्बे और छः अंगुल चौड़े पैर बनाने चाहिये दोनों परों के अंगूठे ३ अंगुल चौड़े और पाँच अंगुल लम्बे बनावे और प्रदेशिनी (अंगूठे के पास की अंगुली) तीन अंगुली लम्बी रक्खे।

(१६) शेष तीन अंगुली प्रदेशिनी से अष्टांश २ न्यून करके क्रम से बनावे अंगूठे की ऊंचाई सवा अंगुल रक्खे। इसी हिसाब से और २ उंगलियों की ऊचाई जाने।

(१७) अंगूठे के नख की लम्बाई पौन अंगुल प्रतिमालक्षण जानने वालों ने कही हैं शेष अंगुलियों के नखों की लम्बाई आध आध अंगुल करै अथवा क्रम से किंचित २ न्यून करता जाय जिसमें उंगली और नख सुन्दर दीख पड़ें।

(१८) जंघा के अग्रभाग को विरालिता चौदह अंगुल और विस्तार पाँच अंगुल मध्य भाग का विस्तार ७ अंगुल और विशालता इक्कीस अंगुल कही है।

(१९) जानु के मध्य का विस्तार आठ अंगुल और विशालता

२४ अंगुल होती और उरु मध्य भाग में १४ अंगुल विस्तीर्ण होते हैं और अट्टाईश अंगुल उनकी परिधि होती है ।

(२०) कटि (कमर) का विस्तार अठारह अंगुल, कटि की परिधि चवालीस अंगुल होती है। नाभिका विस्तार और वेध (गहराई) एक-एक अंगुल होती है ।

(२१) नाभि को बीच में लेकर मध्यभाग का परिणाम वयालीस अंगुल का होता है। दोनों स्तनों का अन्तर १६ अंगुल और स्तनों के ऊपर तिरछे छः छः अंगुल के कक्ष होते हैं।

(२२) कंधों की लम्बाई ग्रीवा से लेकर आठ अंगुल रखनी चाहिये और बारह २ अंगुल लम्बे बाहू और प्रबाहु करने चाहिये बाहु का विस्तार छः अंगुल और प्रबाहु का चार अंगुल रखना चाहिये (कन्धे से कोहिनी पर्यन्त को बाहु और कोहिनी के नीचे को प्रबाहु कहते हैं)

(२३) बाहु के मुख में सोलह अंगुल अग्रहस्त में अर्थात् प्रकोष्ट के समीप बारह अंगुल परिमाण रखना चाहिये और हथेली की चौड़ाई छः अंगुल और लम्बाई सात अंगुल रखनी चाहिये ।

(२४) अंगुष्ठ के समीप की उंगली प्रदेशिनी उससे आगे की मध्यमा उससे आगे की अनामिका और उसके आगे की कनिष्ठका कहते हैं और एक-एक उंगुली में तीन-तीन पर्व होते हैं। मध्यमा पाँच उंगल लम्बी करे मध्यमा के बिचले पर्व का आधा घटा देवे तो प्रदेशिनी की लम्बाई होती है और प्रदेशिनी के तुल्य ही अनामिका होती है अनामिका में एक पर्व घटाने से कनिष्ठका की लम्बाई होती है।

(२५) अंगूठे के दो पर्व और शेष चार उंगुलियों के तीन २ पर्व करने चाहिये और सब उंगलियों के नखों की लम्बाई अपने २ पर्व के आधे के समान करे।

अपने २ देश के अनुसार प्रतिमा के भूषण वेश अलंकार (श्रृङ्गार) और शरीर बनावे। लक्षण युक्त प्रतिमा में देवता का सान्निध्य होता है इसी से वह बनाने वाले की सब प्रकार से वृद्धि करती है।

१०८ अंगुल लम्बी प्रतिमा उत्तम, ९६ अंगुल लम्बी मध्यम और ८४ अंगुल लम्बी प्रतिमा निकृष्ट होती है।

यह प्रतिमा निर्माण मैंने नग्नजित आचार्य के मत का कहा है इसको हृदय धारण कर प्रतिमा बनाने वाला प्रतिमा को बनावे।

प्रतिमा निर्माण विधी मापाङ्ग ले विस्तार।
मोहनलाल वर्णन किया मिहर महर अनुसार॥ इति॥

गृह निर्माण विद्या

जिस भूमि में घर बनाना होय पहले वह भूमि हल से जोती जाय फिर उसमें बीज बोय जायें। वे जब पक चुकें उसके अनन्तर एक रात उस भूमि में गौ बैठे और ब्राह्मण उस भूमि की प्रशंसा करें ऐसी भूमि में घर बनाने की इच्छा वाला पुरुष ज्योतिषी के बताए मुहूर्त पर जाकर अनेक प्रकार के लड्डू पूए आदि भक्ष्यद ही अक्षत सुगन्ध युक्त पुष्प और धूप करके क्षेत्रपाल आदि देवताओं का पूजन कर स्थापित (कारीगर) और ब्राह्मण का भी पूजन कर गृहारम्भ की रेखा करे, रेखा करने के समय ब्राह्मण अपने शिरको क्षत्रिय छाती को, वैश्य उरु को और शूद्र पैरों को स्पर्श करके रेखा करे॥

(परीक्षा प्रकार)

घर के बीच एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गोल गड्ढा खोदें, पीछे उसको उसी की मिट्टी से भरें जो गड्ढा भरने में मिट्टी न्यून हो जाय तो वह घर अशुभ होता है। ठीक ठीक गड्ढा भर जाय तो सम अर्थात् न शुभ और न अशुभ होता है और जो

गढ़ा भरजाय और मिट्टी बच भी रहे वह घर सब भाँति शुभ होता है।

(यथा दूसरी परीक्षा)

पूर्वोक्त रीति से गढ़ा खोदकर उसमें जल भर कर सौ बड़े (कदम) पर्यन्त जाकर लौट आवे इतने काल में जो गढ़े में जल कुछ भी न घटे वह भूमि शुभ होती है। और जहाँ की धूलि से आटक को भरकर फिर तोले और वह धूलि चौंसठ पल होय तो वह भूमि भी शुभ है।

(वर्ण विचार)

मिट्टी के कच्चे पात्र में चार बत्ती डाल उन बत्तियों में ब्राह्मण आदि चार वर्णों की कल्पना कर दीपक जलाय गढ़े में रक्खे जिस वर्ण की दशा में बत्ती बहुत काल तक जलती रहे वह भूमि उस वर्ण को शुभ हैं॥

(वर्णादि को पुष्प से भूमि परीक्षा)

ब्राह्मण आदि वर्ण के रंगके समान अर्थात् श्वेत रक्त पीत और कृष्ण रंग के चार फूल लेकर गढ़े में सायंकाल को रक्खे और दूसरे दिन देखे जिस वर्ण का फूल न कुम्हलाया होय वह भूमि उस वर्ण के लिये शुभ है अथवा जिस भमि में अपना मन लगै वह भूमि शुभ है उसमें और कुछ विचार न करे।

मार्ग वृक्ष किसी दूसरे घर की खूंट कुआ खम्मा भ्रम अर्थात् जल निकलने की मोरी इन करके विद्ध द्वार अशुभ होता है अर्थात् घरके द्वार के सन्मुख ये न होने चाहिए। परन्तु घरके द्वार की जितनी ऊंचाई होय उससे दूनी भूमि छोड़कर जो इनमें से किसी का बेध होय तो कुछ दोष नहीं॥

घर के द्वार को मार्ग का बेध होय तो घर के स्वामी का नाश वृक्ष का बेध होय तो बालकों को दोष, पक (कीच) का बेध होय अर्थात् घर के सम्मुख सदा पंक बनी रहे तो शोक होता है

मोरी का वेध होय तो धन का व्यय कूप का वैध होय तो अप-स्मीर (मृगी रोग) देवता की मूर्ति का वैध होय तो घरके स्वामी का नाश स्तम्भ का वैध होय तो स्त्रियों के दोष और ब्रह्मा के सन्मुख द्वार होय तो कुल का नाश करे।

जिस घरके द्वारका कपाट बिना खोले हीखुलजाय उसमें उन्माद रोग होता है। जिसका कपाट आपही बन्द हो जाय उसमें कुल नाश हो जाता है अपने नियत परिमाण से द्वार बड़ा होय तो राजा का भय और छोटा होय तो चोर का भय होता है और दुख देता है ठीक द्वार पर दूसरे खंड का द्वार आवे वह शुभ नहीं होता है। और सैकड़ों द्वार भी शुभ नहीं, बहुत थोड़ा द्वार क्षुधा का भय करता और कुबड़ा द्वार कुल का नाश कराने वाला होता है ऊपर के काष्ट से बहुत दबा हुआ द्वार घरके स्वामी को पीड़ा करता है। भीतर को झुका हुआ गृह स्वामी का मरण करता है। बाहर को झुका होय तो ग्रह स्वामी विदेश में रहे। और किसी दिशा की ओर देखता होय तो चारों करके पीड़ा होती है।

घरके मुख्य द्वार का स्वरूप और सामान्य द्वारों के समान ही न करे अर्थात् और द्वारों से मुख्य द्वार का स्वरूप उत्तम होना चाहिए। मुख्य द्वार को कलश फल पत्र शिवजी के गण आदि मंगल दायक द्रव्यों से सुशोभित करै अर्थात् इनके चित्र द्वार पर खुदवाय॥ प्लक्ष (पाकर) बड़ गूलर पीपल ये चार बृक्ष क्रम से घरके दक्षिण पश्चिम उत्तर और पूर्व में होय तो अशुभ होते हैं और उत्तर पूर्व दक्षिण और पश्चिम में क्रम से ये बृक्ष उत्पन्न होय तो शुभ हैं। घरके समीप खदिर आदि काँटों वाले बृक्ष होय तो अशुभ कहते हैं। आक आदि दूध वाले बृक्ष बनका नाश करते हैं। आम आदि फैलने वाले बृक्ष सन्तान

का क्षय करते हैं। इन वृक्षों का काष्ठ भी घर में न लगावे जो घर के समीप ये वृक्ष होंय और उनको काटे नहीं तो इनके साथ और शुभ वृक्ष लगा देवे। नाग केसर अशोक निम्ब बकुल (मौलसिरी) पनस (कटहर) शमी (जांट) साल ये वृक्ष शुभ हैं। घर का स्वामी सुख चाहै तो वस्तु के मध्य में स्थित ब्रह्मा की यत्न से रक्षा करै। ब्रह्मा के ऊपर उच्छिष्ट आदि डालने से घर के स्वामी को क्लेश होता है।

दैवज्ञ पुरोहित और वैद्य इनका प्रधान घर चालीस हाथ चौड़ा होता है। घर की चौड़ाई का जो प्रमाण कहा उतना ही ऊंचाई का प्रमाण होय तो शुभ होता है। यह लम्बाई चौड़ाई चारशाला वाले घर की कही, जो एक शाला के ही घर होंय उनकी लम्बाई चौड़ाई से दूनी होती है।

ब्राह्मण के प्रधान गृह की चौड़ाई ३२ हाथ, क्षत्रिय के प्रधान घर की चौड़ाई २८ हाथ है, वैश्य के प्रधान घर की चौड़ाई २४ हाथ है और शूद्र का प्रधान घर २० हाथ चौड़ा होता है।

घर की चौड़ाई के मान में सोलह का भाग देकर जो लब्धि आवे उसमें चार हाथ और जोड़े वही घर का पहिली भूमिका (खण्ड) की ऊंचाई का प्रमाण होता है। उसमें उसका द्वादशांश घटा देवे तो दूसरी भूमिका की ऊंचाई हो जाती है इसी भांति द्वादशांस घटाते घटाते तीसरी चौथी आदि सब भूमिकाओं की ऊंचाई का मान होता है।

सब घरों की भीत का प्रमाण घर की चौड़ाई के षोडशांश के तुल्य होता है। यह नियम पक्की ईंटों के घर का है काठ के घर में भीत की चौड़ाई लम्बाई ऊंचाई आदि का कुछ नियम नहीं ब्राह्मण आदि वर्णों के घर की चौड़ाई उसका पंचकांस लेवे लब्धि फल को अंगुल माने उसमें अठहत्तर अंगुल होय वह उनके द्वार की चौड़ाई से तिगुना द्वार की ऊंचाई होती है।

चौखट की दोनों भुजाओं को शाख कहते हैं और ऊपर नीचे के काष्ठ शिरधर और देहली को उदुम्बर कहते हैं द्वार जितने हाथ ऊंचा होय उतने ही अंगुल शाखाओं की मुटाई रखनी चाहिये शाखाओं से ड्यौढ़ी मुटाई उदुम्बरों की होती है ऊंचाई के सात से गुणा कर ८० का भाग देने से जो लब्धि मिले वह इस सबकी चौड़ाई है खंभ की ऊंचाई को ६ से गुणा कर ८० का भाग देने से जो लब्धि होय वह स्तम्भ के मूल की मुटाई होती है और उसका दशांश उसमें घटावे तो स्तम्भ के अग्रभाग की मोटाई का मान होता है।

(स्तम्भ नाम)

जो स्तम्भ बीच में चौकोरे हों वह रुचक–अष्टास्त्र होय वह वज्र, षोडशास्त्र हो वह द्विवज्रक, बत्तीस कोन का मध्य में हो वह प्रलीनक और जो बीच से गोल हो यह घृत कहाता है। स्तम्भ के समान नौ भाग कर सबसे नीचे के भाग को बहन बनावे उस पर स्तम्भ रक्खे बहन के ऊपर एक भाग में घर बनावे उसके ऊपर के भाग में कमल बनावे उसके ऊपरले भाग में उत्तरोष्ट बना कर शेष पाँच भागों को चतुरस्त्र बनावे। (शोभा के लिये जिसमें अनेक प्रकार के चित्र बनाये जाते हैं उसको उत्तरोष्ट कहते हैं) स्तम्भ के ऊपर जो तिरछा काठ रक्खा जाता है उसका भार तुला कहते हैं और इसके ऊपर जो काष्ट लगाये जाते हैं वह तुलो-पतुल कहलाते हैं भारतुला की मुटाई स्तम्भ की मुटाई के तुल्य होती है।

(वस्तु नाम)

जिस वस्तु में चारों ओर अलिद बनाये जावें और चारों ओर द्वार रक्खे जावें उसका नाम सर्वतोभद्र है और वह सब वास्तुकों का राजा है वह वास्तु देवता और राजाओं के लिये बनाना चाहिये शाला की भिति से लेकर प्रदक्षिण क्रम से जो अलिद युक्त हो वह नंगावर्त्त वास्तु कहाता है।

सम्भाषण विद्या

सम्भाषण विद्या

विद्वानों के परस्पर सम्भाषण से तर्क वितर्क की शक्ति उत्पन्न होती है दक्षता बढ़ती है, बोलने की शक्ति उत्पन्न होती है यह फैसला है पहले सुनी बात का सन्देह दूर होता है, जो बातें सुनने से रह गई हों वह सुनने में आती हैं परस्पर सम्भाषण के समय अपना पांडित्य द्योतक करने के लिये विजय प्राप्ति की इच्छा करने वाला गुप्त विषयों को भी प्रगट कर देता है, इसी लिये विद्वानों के परस्पर सम्भाषण की प्रशंसा करते हैं।

सम्भाषण प्रकार

सम्भाषण दो प्रकार का होता है पहला अध्याय सम्भाषण हितपूर्वक मिलाकर किसी गूढ़ पदार्थ का विचार करना दूसरी विगृह सम्भाषण अर्थात् विवाद द्वारा विजय की इच्छा से स्वपक्ष समर्थन के लिये कथनोपकथन करना।

वाद का लक्षण

शास्त्र के अनुसार जो वाद विवाद किया जाता है उसको वाद कहते हैं वाद के दो भेद हैं १ जल्प २ वितंडा। जो वाद दोनों पक्षों के आश्रय भूत हो उसे जल्पवाद कहते हैं और इसका विपरीत वितंडा वाद होता है। जैसे वादी कहता है कि पुनजन्म होता है। प्रतिवादी कहता है कि नहीं होता, ये दोनों अपने-अपने हेतु वर्णन करके अपने अपने पक्ष का समर्थन करते और पर पक्ष को गिराते हैं, इसका नाम जल्प है। इसके विपरीत वितंडा वाद

होता है। वितंडावाद में पर पक्ष में केवल दोष ही दोष निकाले जाते हैं। वितंडा वाद से सिद्धांत की प्राप्ति नहीं होती है।

प्रतिज्ञा लक्षण

साध्य वचन को प्रतिज्ञा कहते हैं अर्थात् जो युक्ति द्वारा सिद्ध हो सकती है जैसे पुरुष नित्य है।

स्थापना के लक्षण

हेतु दृष्टांत उपवन और निगम द्वारा पूर्वोक्त प्रतिज्ञा का स्थापन करना स्थापन कहलाता है। प्रथम प्रतिज्ञा की जाती है फिर उसकी स्थापना की जाती है। जिसकी प्रतिज्ञा नहीं की जाती है उसकी स्थापना नहीं होती। दृष्टांत पुरुष नित्य है। यह प्रथम प्रतिज्ञा की गई अब हेत्वादि चारों बातों से इसका स्थिर करना स्थापना कहलाती है जैसे १ हेतु से पुरुष यकृत है २ दृष्टांत से जैसे आकाश अकृत है उपवन से जैसे आकाश अकृत है वैसे ही पुरुष भी अकृत है ४ निगम से जैसे अकृत आकाश नित्य है वसे ही अकृत पुरुष भी नित्य है।

प्रतिष्ठापना लक्षण

पराई प्रतीज्ञा के बिपरीतार्थ वाली प्रतिज्ञा का स्थापना करना प्रतिष्ठापना कहाता है जैसे पुरुष अनित्म होता है यह पूर्व प्रतिज्ञा के विरुद्ध है।

हेतु लक्षण

जिस से उपलब्धि होती है उसे हेतु कहते हैं वह हेतु चार प्रकार का है प्रत्यक्ष अनुमान, ऐतिह्य और औपमेय इन चारों हेतुओं से जो उपलब्धि होती है उसे तत्व कहते हैं।

उत्तर लक्षण

वादी वस्तुओं का साधर्म्य प्रकाश करता हुआ हेतु को दिखावे यदि प्रतिवादी बैधर्म दिखाकर विधर्मता अर्थात् विषमता के हेतु प्रकाश को उसी का उत्तर कहते हैं।

दृष्टान्त का लक्षण

किसी विषय का वर्णन करना जो मूर्ख और विद्वान दोनों की समझ में समान रूप से आजाय उसे दृष्टांत कहते हैं जैसे जल पतला है पृथ्वी स्थिर है सूर्य प्रकाशक है उसी प्रकार सांख्य वचन भी प्रकाशक है।

सिद्धान्त का लक्षण

जिसको परीक्षक लोग अनेक प्रकार से परीक्षा करके और हेतुओं से सिद्ध करके निर्णय कर लेते हैं उसे सिद्धांत कहते हैं यह ४ प्रकार का होता है। १ सवतन्त्र सिद्धांत, २ प्रतितन्त्र सिद्धान्त ३ अधिकरण सिद्धान्त और चौथा अभ्युपगम सिद्धांत।

सर्वतन्त्र सिद्धान्त लक्षण

जो सिद्धान्त सम्पूर्ण शास्त्रों में एक ही प्रकार का है उसे सर्व तन्त्र सिद्धांत कहते हैं जैसे रोगों के निदान कर साध्य व्याधियों की चिकित्सा की जाती है यह सब शास्त्रों का ऐक्य है।

प्रतितन्त्र सिद्धान्त लक्षण

जो सिद्धांत एक तन्त्र में किसी प्रकार और दूसरे यन्त्र में किसी प्रकार का होता है। उसे प्रतितन्त्र सिद्धांत कहते हैं जैसे किसी के मत में रस आठ हैं किसी के में ६।

अधिकरण सिद्धान्त लक्षण

किसी एक सिद्धान्त के स्थिर करने में उसके अन्तर्गत जो और कोई सिद्धान्त स्थिर होता है उसे अधिकरण सिद्धान्त कहते हैं जैसे मुक्त पुरुष निस्पृह होने के कारण आगामी जन्म सम्बन्धी कर्म को नहीं करता है ऐसा सिद्धान्त होने पर बीच में कर्म फल मोक्ष पुरुष पुनर्जन्म सिद्ध होते हैं इसी का नाम अधिकरण सिद्धांत है !

अभ्युपगम सिद्धान्त लक्षण

जिस प्रसिद्ध अपरीक्षित अनुपदिष्ट अहेत विषय को वादी प्रतिवादी दोनों किसी प्रतिज्ञा के सिद्ध करने के लिए वाद विवाद करने के समय स्वीकार कर लेते हैं उसे अभ्युपगम सिद्धांत कहते हैं जैसे द्रव्य को प्रधान न मानकर व्याख्यान करेंगे।

शब्द लक्षण

वर्णों के सामान्य अर्थात् मिलने का नाम शब्द है शब्द चार प्रकार के होते हैं यथाः १ दृष्टार्थ, २ अदृष्टार्थ, ३ सत्य और ४ अनृत।

१ दृष्टार्थ-इसे कहते हैं जिसका विषय प्रत्यक्ष हो जाता है जैसे तीन हेतुओं से दोष प्रकुपित होते हैं और छैः उपायों से शान्त हो जाते हैं कानों में शब्द आदि का ग्रहण इत्यादि।

२ अदृष्टार्थ-जो जो बातें देखने में नहीं आती हैं जैसे पुनर्जन्म का होना देखने में नहीं आता अनुमान किया जाता है।

३ सत्य-शब्द का अर्थ यथार्थ है जैसे आयुर्वेद का उपदेश साध्य रोगों की चिकित्सा और आरम्भ मात्र का फल यह सत्य है।

४ अनृत-सब से विपरीत को अनृत (झूठ) कहते हैं।

प्रत्यक्ष लक्षण

जो आत्मा और सम्पूर्ण इन्द्रियों द्वारा अपने आप जाना जाता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं इनमें से सुख दुख इच्छा द्वेष आदि आत्मा से जाने जाते हैं इससे इनको आत्म प्रत्यक्ष कहते हैं और शब्दादिक इन्द्रिय प्रत्यक्ष हैं।

औपम्य लक्षण

जो एक वस्तु से दूसरी वस्तु की सहायता मिलाकर वर्णन की जाती है उसे औपम्य कहते हैं जैसे चंद्रवत मुख।

ऐतिह्य लक्षण—वेदादिक आप्तोप देश का ऐतिह्य कहते हैं।

अनुमान लक्षण—युक्त पूर्वक तर्क का नाम अनुमान है जैसे पाचन शक्ति जठराग्नि का और धूप से अग्नि का अनुमान होता है।

संशय लक्षण-संदिग्ध विषयों में एक बात का निश्चय न होना संशय कहलाता है। जैसे अकाल मृत्यु होती है कि नहीं।

प्रयोजन लक्षण

जिस फल के लिये कार्य को आरम्भ किया जाता है उसे प्रयोजन कहते हैं जैसे जो अकाल मृत्यु होती है तो मैं भी आयु के बढ़ाने वाले उपचारों का सेवन करूंगा फिर किस तरह अकाल मृत्यु मेरा भक्षण कर सकेगी! अर्थात् (नहीं करेगी)।

सव्यभिचार लक्षण—जिसमें अन्यथा आचरण हो उसे सव्यभिचार कहते हैं जैसे इस रोग में यह औषधि उपयोगी हो सकती है नहीं भी हो सकती है।

जिज्ञासा परीक्षा करने को जिज्ञासा कहते हैं।

व्यवसाय लक्षण—व्यवसाय का अर्थ निश्चय है जैसे यह व्याधि बातों से उत्पन्न हुई है और इसको यही औषधि है।

अथ प्राप्ति लक्षण—एक ही कही हुई बात से दूसरी बिन कही हुई बात सिद्ध होती है उसे अर्थ प्राप्त कहते हैं जैसे इस मनुष्य को दिन में न खाना चाहिए, तो इससे अर्थ प्राप्ति होती है कि इस को रात्रि में खाना चाहिये।

सम्भव का लक्षण जो किस से सम्भव अर्थात् उत्पन्न है उसे उसका उत्पत्ति कारण अर्थात सम्भव कहते हैं जैसे छः धातु गर्भ के संभव में और आरोग्य का संभव हितोहार है।

अनुयाज्य का लक्षण जो वाक्य पाध्य दोष से युक्त होता है वह पीछे लगाया जाता है उसे अनुयोज्य कहते हैं इससे विपरीत होता है उसे अननुयोग्य कहते हैं। जैसे यह व्याधि संशोधन साध्य है ऐसा कहने पर यह कहे कि क्या यह वमन साध्य वा विरेचन साध्य भी है इसे अनुयोज्य कहते हैं।

अनुयोज्य लक्षण

एक ही विद्या के जानने वालों में ज्ञान विज्ञान और बचन की परीक्षा के निमित्त जो सम्पूर्ण तन्त्र या एक खंड में प्रश्न होता है उसे अनुयोग कहते हैं जैसे 'पुरुष नित्य है' इस प्रतिज्ञा में जो कोई यह प्रश्न करे कि पुरुष के नित्य होने में क्या हेतु है इसे अनुयोग कहेंगे।

प्रत्यनुयोग लक्षण

अनुयोग के अनुयोग को प्रत्यनुयोग कहते हैं जैसे इसमें अनुयोग का क्या हेतु है अर्थात् यह प्रश्न क्यों किया गया कि पुरुष के नित्य होने में क्या हेतु है।

वाक्य दोष लक्षण--वाक्य में जो न्यूनता अधिकता, अनर्थकता आपाथकता और विरुद्धता होती है उसे वाक्य दोष कहते हैं।

वाक्य न्यूनता दोष लक्षण—जिसमें हेतु उदाहरण, उपनय और निगम इनमें किसी एक को भी न्यूनता हो तो वह वाक्य में न्यूनता दोष कहलाता है अथवा जो विषय बहुत से हेतुओं से सिद्ध करने के योग्य हूँ और वह एक ही हेतु सिद्ध किया जाता है उसे भी न्यूनता दोष कहते हैं ऐसा होने से ठीक विषय भी नष्ट हो जाता है।

वाक्याधिक्य दोष लक्षण

आयुर्वेद का वर्णन करते २ वाहस्पत्य और उशनासादि और किसी अप्रसंग बात का वर्णन करना अथवा किसी एक बात का पुनः उल्लेख करना वाक्याधिक्य दोष कहाता है इसके दो भेद हैं।

१ अर्थ पुनरुक्त—जैसे भेषज, औषधि साधन इत्यादि।

२—शब्द पुनरुक्त भेषज, भेषज इत्यादि।

वाक्य अनर्थक दोष लक्षण

जिस लेख से किसी अर्थ का बोध न हो, जैसे क, ख, ग, घ, ङ इत्यादि की भांति का लेख हो।

वाक्य अपाथक दोष लक्षण

ऐसे शब्द जिनका भिन्न २ तो कुछ अर्थ होता हो परन्तु उनके मिलने से एक ऐसा वाक्य न बन सके जिसका कुछ तात्पर्य हो इसे अपार्थक दोष कहते हैं। जैसे तक्र—नक्र—वन्श वज्र—निशाकर—इत्यादि इन शब्दों के अर्थ हैं परन्तु इनके मिलाने से कोई ऐसा वाक्य नहीं बन सका जिसका कुछ भी मतलब हो

वाक्य विरुद्ध दोष लक्षण

जो बात दृष्टांत सिद्धांत और समय से विपरीत होती है उसे विरुद्ध दोष कहते है।

समय तीन प्रकार का होता है—आयुर्वेदिक समय, याज्ञयि समय और मोक्ष शास्त्रिक समय॥ चिकित्सा से चारों पदों की सिद्धि को आयुर्वेदिक समय कहते हैं।

जब सम्पूर्ण पशु हिंसा के योग्य होते हैं उसे याज्ञिय समय कहते हैं।

जिसमें सम्पूर्ण जीवों की अहिंसा होती है उसे मोक्ष शास्त्रिक समय कहते हैं।

समय विरुद्ध दोष लक्षण

अपने समय से जो बात विपरीत कही जाती है उसे समय विरुद्ध कहते हैं।

वाक्य प्रशंसा लक्षण

जिस वाक्य में न्यूनता, अधिकता, अनर्थकता-अपार्थकता, अविरुद्धता और अनधिगत विषयादि दोष न हों उसे वाक्य प्रशंसा कहते हैं।

वाक्य (छल) लक्षण

बुद्धिमानी से किसी अर्थ का और ही अर्थ करके वादी को चक्कर में डाल देना छल कहलाता है।

छल दो प्रकार का होता है वाक छल दूसरा सामान्य छल।

इसको ऊपर लिख चुके हैं जैसे कोई कहे कि यह वैद्य नवतंत्र है यह कहकर धोखे में डालने के लिए 'नव शब्द का नौ' अर्थ कर के वैद्य कहने लगे कि मैं नवतन्त्र नहीं हूँ मैं तो एक तन्त्र हूँ फिर दूसरा कहे कि मैंने नौ तन्त्रों का विषय नहीं कहा मेरा नवतन्त्र

कहने का यह प्रयोजन है कि आपने इस तन्त्र का नवीन अभ्यास किया है यह सुनकर फिर वैद्य कहे कि मैंने इसका नौ बार नहीं सहस्त्रों बार अभ्यास किया है। इस उक्ति का नाम वाकछल है।

सामान्य छल लक्षण

यदि वादी कहे कि व्याधि की शांति के निमित्त औषधि होती है। यह सुनकर प्रतिवादी कहें कि आपने कहा सो ठीक है परन्तु सत से सत की शांति होती है तो रोग भी सत है और औषधि भी सत है, तो इस स्थान पर वह बात देखने की है कि वात रोग भी सत् है और क्षय रोग भी सत् है तो क्या वात रोग मे क्षय रोग शान्त हो जायगा यह सामान्य छल है।

अहेतु वर्णन

अहेतु—तीन प्रकार का होता है प्रकरण सम, संशय सम वर्ण्यसम

प्रकरण सम सहेतु लक्षण

शरीर में आत्म भिन्न हैं इसलिये आत्मा नित्य है--तिवादी कहे कि जिस हेतु से शरीर से आत्मा भिन्न हैं इस कारण आत्मा नित्य और शरीर अनित्य है और इसी हेतु से आत्मा शरीर सो विधर्म्मी है। यह अहेतु है कारण यह है कि जो पक्ष है सोई हेतु नहीं हो सकता है।

संशय सम अहेतु लक्षण

संशय हेतु को जो संशयच्छेद हेतु मान लिया जाय वही संशय सम अहेतु होता है—जैसे यह आयुर्वेद के एक देश का वर्णन करता है परन्तु यह चिकित्सक है या नहीं यह संशय है। इससे प्रतिवादो कहें कि इसने आयुर्वेद के एक देश का वर्णन किया है इससे यह चिकित्सक है इसमें संशयस्थ हेतु का विशेष वर्णन नहीं किया गया इससे यह अहेत है क्यों कि जो संशय का हेतु है वही संशय दूर करने का हेतु नहीं हो सकता

इस लिए इसको संशय सम अहेतु कहते हैं।

वर्ण्य सम अहेतु लक्षण

दो वस्तुओं की समान रूप से वर्णन करके जो उनमें अभेद दिखलाया जाता है उसे वर्ण्य सम अहेतु कहते हैं। जैसे बुद्धि का स्पर्श नहीं किया जाता इस से अनित्य है। इन में से स्पर्श करने में नहीं आता इससे यह भी अनित्य है। इनमें से शब्द वर्णन के योग्य है और बुद्धि भी वर्णन योग्य है, इस तरह दोनों वर्णन योग्य हैं इससे वर्ण्य सम अहेतु हैं।

अतीत काल लक्षण

पूर्व वक्तव्य विषय जो पीछे कहा जाता है उसको अतीत काल कहते हैं यह कालातीत होने से ग्रहण के योग्य नहीं होता।

उपालम्भ लक्षण

हेतु के दोष का वर्णन करना उपालम्भ कहाता है-यह अहेतु में वर्णन कर दिया गया है।

परिहार लक्षण

प्रतिवादी के वाक्य के दोष को दूर करके सत्यत्व प्रतिपादन करने को परिहार कहते हैं।

प्रतिज्ञा हानि लक्षण

यदि प्रतिवादी पूर्व की हुई प्रतिज्ञा में दोष दिखावे और उस दोष को देख कर अपनी प्रतिज्ञा को छोड़ देवे तो यह प्रतिज्ञा हानि होती है। जैसे पहिले प्रतिज्ञा की गई कि पुरुष नित्य है फिर अनुयुक्त होकर पुरुष को अनित्य कहने लगे तो यह प्रतिज्ञा होती है।

अभ्यनुज्ञा लक्षण

विपक्षी इष्ट अनिष्ट चाहे जो कुछ कहे और उसे स्वीकार करते रहना अभ्यनुज्ञा कहाती है।

हेत्वन्तर लक्षण

प्रकृति हेतु का वर्णन न करके अन्य हेतुओं का वर्णन कर देना हेत्वन्तर कहाता है।

अर्थान्तर लक्षण

कहना तो चाहिये ज्वर का लक्षण और प्रमेह का लक्षण कहने लगे इसको अर्थान्तर कहते हैं।

निग्रह स्थान लक्षण

जो विपक्षी तीन बार कहे हुए वाक्य को समझे तथा सभा के अन्य लोग समझ जाँय और वह विपक्षी अननुयोज्य की जगह अनुयोग और अनुयोज्य की जगह अननुयोज्य करे तो उस पर विजय प्राप्ति समझते हैं इसी को निग्रह स्थान कहते हैं।

विद्युत विद्या

बिजली के योग से कार्य करना

भारतवर्ष में किसी समय में इस विद्या से काम लिया जाता हो ऐसा सम्भव है, परन्तु वर्तमानकाल में इस विद्या का प्रादुर्भाव पश्चिमी विद्वानों से हुआ है और वह आज इस उन्नतावस्था को पहुंचा हुआ है कि देखकर चकित हो जाना पड़ता है। बिजली के द्वारा अनेक कार्य सिद्ध हो रहे हैं अनेक प्रकार के यंत्र निर्माण हो रहे हैं अनेक प्रकार से मनुष्य के रोगों की चिकित्सा बिजली द्वारा हो रही है आदि ऐसे ही बहुत से उपयोगी कार्य बिजली से लिए जा रहे हैं।

इन पश्चिमी विद्वानों ने जिस विज्ञान बल से बिजली का यन्त्र बना तार द्वारा सहस्त्रों कोसों की बात मिनटों में जानने का यत्न निकाला और संसारी जीवों को लाभ पहुँचाया। इसी प्रकार प्रकाश के करने में बिजली मे बड़ा भारी काम लिया है

आज जिधर देखो उधर ही बिजली की रोशनी नगरों को जगमगा रही है, भारतियों के चित्त को चुरा रही है। बिजली की विद्या के अनेकन कार्य हैं उन सबको छोड़कर इस स्थान पर केवल बिजली के योग से अन्य धातु की वस्तु अथवा लकड़ी इत्यादि पदार्थों पर चाँदी सोना चढ़ाना इस काम के करने का इसमें वर्णन किया जायगा। कारण यह है कि आज कल रोजगार की बड़ी आवश्यकता है यह कार्य रोजगार से विशेष सम्बन्ध रखता है इसी कारण इसको लिख कर सबको इसका ज्ञान करा देना सबको लाभ पहुंचाने का काम है जो हमारा मुख्य उद्देश्य है।

यों तो इस विषय की बहुत सी पुस्तकें लिखी हुई बाजारों में बिक रही हैं परन्तु बाजारी पुस्तक और बात है और अनुभवी पुरुष को पुस्तक लिख कर बतलाना कुछ और है। इसी कारण यह पुस्तक इस काम के कर्ता से बनवाकर सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रकाश की गई है। एक समय में दिल्ली गया वहाँ जाकर देखा तो गिलट करने की बहुत सी दुकान हो रही हैं और प्रायः सब ही पर थोड़ा बहुत काम भी हो रहा है। मेरे पास भी एक बटन की जोड़ी थी जो थोड़ी मैली हो रही थी मैंने ॥) देकर चाँदी चढ़वाई उसने १५-२० मिनट में चढ़ाकर मुझको दे दी। उस समय मैंने अपने जी में विचार किया कि जो पुरुष थोड़ी से भी थोड़ी पूंजी रखते हों वह सहज में घर बैठे ही इस विद्या के द्वारा अपनी अच्छी आजीविका कर सकते हैं ऐसा विचार कर मैंने इस पुस्तक को अपने अनुभव से लिखा है मैं इस काम को अच्छी तरह जानता हूं—

यद्यपि इस पुस्तक में विधि को विस्तार पूर्वक नहीं लिखा है तथापि काम करने वाला यदि होशियार है तो वह काम सीख

सकता है नहीं तो यह Practical अभ्य सी काम है बिना बताए और बिना हाथों से किये सिद्ध नहीं होता।

बिजली के द्वारा गिलट करने की रीति

इस काम के करने के लिये सबसे पहले एक बिजली की शक्ति पैदा करने वाला यन्त्र बनाया जाता है जिसको अंग्रेजी वाले बैट्री (Battery) और हिन्दुस्तानी गिलट करने वाले बाल्टी कहते हैं अंगरेजी बैटरी बहुत दिनों ठहरती है परन्तु देसी ही कीमती बनती है। अंगरेजी बैटरी विशेष कर तार घरों में काम आती है इसके बनाने का सविस्तार वर्णन हमने Telegraph teacher टेलीफोन टीचर में किया है। बैटरी का स्वरूप चित्र बनावट व प्रचलन मिलाने ये सब ब्यौरे वार वर्णन हैं जिनको खना हो वह उसको मंगाकर देखलें।

गिलट के काम करने वाले जिन बैटरियों से काम लेते हैं उनके बनाने की रीति इस प्रकार है।

बाल्टी बनाने की विधि

एक फुट भर ऊंचा और नौ इंच चौड़ा एक तांबे का डोल बनवाओ उसके एक किनारे पर एक पीतल का पेच लगाओ यह तांबे का डोल एक भाग बना अब इसी प्रकार की एक मिट्टी की नली सी बनाओ जो डोल के बीच में आजावे अनुमान से ९ इंच ऊंची और ४ इंच चौड़ी हो इसके बीच में रखने के लिए एक जस्त की मूसली बनाओ उसमें ऊपर एक पेच लगाओ बस यह सब सामान बाल्टी का है इसका मसाला भर कर इस प्रकार तैयार करलो।

बाल्टी तैयार करने की विधि

तांबे के डोल में जो पीतल का पेच लगा है उसमें एक तांबे

---

१ यह पुस्तक।) में मास्टर निहालचन्द बुकसेलर अलीगढ़ सिटी से मिलती है।

का पतला तार लगाओ। उसी प्रकार जस्त की मूसली में भी तार लगाकर रखलो।

अब चाखा तूतिया लेकर उसी को पीसकर उसको तांबे की बाल्टी में पटको और आधी बाल्टी से कम पानी भरदो फिर इस तांबे की बाल्टी में उस मिट्टी की नली को रक्खो उसमें आधे से अधिक नमक का पानी भरदो और उस मिट्टी की नली के बीच में उस जस्त की मूसली को रखदो और तांबे की बाल्टी के पीतल के पेच में लगा हुआ तांबे का तार और जस्त की मूसली में बंधा तांबे का तार दोनों के सिरे बाहिर रक्खो अब ये काम करने योग्य बाल्टी बन गई।

बाल्टी जोड़ने की रीति

जैसे तार बर्की का काम एक बैटरी से नहीं होता इसी प्रकार चाँदी चढ़ाने का बड़ा काम भी एक बाल्टी से नहीं होता, इसी लिए और बाल्टियाँ भी बना कर लगाई जाती हैं जो इस प्रकार आपस में जोड़ी जाती हैं कि एक बाल्टी का तांबे का तार दूसरी बाल्टी के जस्त की मूसली के पेच में लगाओ इसी तरह तीसर चौथी की आदि बस इसी तरह पर जोड़ते हुए चले जाओ।

(गिलट करने की चाँदी गला कर चाँदी का नमक बनाना)

चाँदी का चूर्ण कर उसको शोरे के तेजाब में गलालो यदि तेजाब खालिस हो तो बराबर करलो और यदि पानी मिला हो तो कुछ अधिक लगेगा और इसके नीचे आग जलानी पड़ेगी तब चाँदी गलेगी गलजाने पर चाँदी की काली राख हो जायगी उस राख को पहिले नमक के पानी से धोओ, पश्चात् साधारण पानी से इतना धोओ कि वह राख काया पलट सफेद नमक सी हो जायगी। बस इसी को चाँदी का नमक कहते हैं।

(सोना गलाकर—सोने का नमक बनाना)

सोना शोरा और नमक दोनों तेजाबों से गलाया जाता है और पहिले सोडा वा किसी क्षार से धोया जाता है। पश्चात् साधारण पानी से धोकर नमक बनाया जाता है इसी प्रकार लोहा, राँगा, पीतल, जस्ता, पारा आदि धातुओं का नमक भी बनाया जाता है।

(चाँदी का पानी बनाना)

चाँदी का नमक जो पहिले बन चुका है उसको आवश्यकतानुसार डाल कर एक चीनी के कटोरे में रक्खो और तोले भर चाँदी के लिए कम से कम ५ तोले साइनेड पोटाश को लो और कटोरे में भरे चाँदी के नमक पर पानी डालो और फिर पोटाश पटक दो। थोड़ी देर में चाँदी का नमक पोटाश के योग से पानी में मिल जायगा और यह सब रलमिल कर चाँदी का पानी बन जायगा। बन जाने पर इस पानी को बिलोटिंग कागज में छान लो और साफ करके बोतल में भर रक्खो और समय पर काम में लाओ। इस प्रकार सोना—पारा आदि का भी पानी बनालो।

(चाँदी चढ़ाने की रीति)

जिस वस्तु पर चाँदी चढ़ाना हो उस वस्तु (गहने) को पहिले चिकनाई व मैलापन सब नमक और साधारण पानी से धोकर खूब साफ कर लो फिर यदि चाँदी की चीज हो तो उस पर पहिले पारा चढ़ाओ वा पारे का नमक चढ़ाओ।

(पारे का नमक बनाने की रीति)

पारे को किसी चीनी के प्याले में रखकर उस पर शीशे का तेजाब [Nitric acid] डालो। उसके डालने से पारे में से एक प्रकार का पीला धुआँ निकलना शुरू होगा पारा बलता जायगा

यहाँ तक कि अन्त में एक प्रकार का पीला सा नमक बन कर रह जायगा वही पारे का नमक होगा:—

इसी नमक को सुखा चाँदी की चीज पर चढ़ा दो पश्चात् उस चीज को तांबे की बाल्टी के तार में बाँध दो और फिर एक प्याले में चाँदी का पानी जो पहले बना चुके हो उसको भरो और उसमें उस तार की बंधी हुई चीज को तार समेत डाल दो यह खबरदारी रक्खो कि केवल चीज ही चाँदी के पानी में डूबे तार न डूबने पावे-इसको एक ओर लटका कर छोड़ दो फिर जस्त की मूसली वाले तार में एक चाँदी का टुकड़ा बाँध कर उसे चाँदी के पानी वाले प्याले में एक ओर को लटका दो और इसका भी ऐसा ही ध्यान रक्खो कि यह तार भी चाँदी के पानी में न डूबने पावे बस दोनों तारों को उपरोक्त प्रकार से छोड़कर थोड़ी देर को चुप हो जाओ बीच में कभी २ देखलो। जब तुम्हारे तोल के माफिक चाँदी चढ़ जावे तभी दोनों तारों को चाँदी के पानी में से अलग कर दो और चीज को खोलकर देखलो। यदि मंशा के मुआफिक चाँदी चीज पर न चढ़ी हो तो उसी प्रकार चाँदी के पानी में डाल दो और मनमाना चढ़ने पर निकाल लो और ओपनी से जिला करके काम में लाओ।

(चीज पर से चढ़ी हुई चाँदी उतारने की विधि)

यदि चीज पर तोल से अधिक चाँदी चढ़ जावे तो उसके उतार लेने की यह रीति है कि जस्त की मूसली का तार जिसमें पहले चाँदी का टुकड़ा बाँधा है अब चाँदी उतारने के लिए उस चढ़ी हुई चाँदी की चीज को इसमें बाँधो और उसी प्रकार चाँदी के टुकड़े को बाल्टी के तार में बाँध कर प्याले के अनुसार पटक दो। जब चाँदी उतर जाय तब निकाल लो बस इसी क्रियानुसार

जितनी चाहो चाँदी चढ़ालो और उतार लो ॥ सावधानी--कभी कभी बाल्टी कमजोर हो जाती है वा पानी में शक्ति नहीं रहती वा काम जल्दी से करना मंजूर होता है तो चाँदी के प्याले को जिसमें तार में बंधी हुई चीज पड़ी है थोड़ी कोयले की आग पर रख लेते हैं जिसकी गरमी से चाँदी बहुत जल्दी चढ़ व उतर जाती है।

स्मरण रक्खो कि:—

चाँदी सोना चढ़ाने का काम सफाई अधिक चाहता है। इसी से चीज को सदैव साफ करके काम में लाओ—यदि चीज मैली रहेगी तो मुलम्मा भी साफ नहीं होगा।

यह मुलम्मा जो बैटरी (बाल्टी) बिजली के योग से चढ़ाया जाता है बहुत दिनों तक ठहर सकता है। जितना अधिक माल चढ़ेगा उतना ही अधिक ठहराने वाला होगा।

(सोना चढ़ाने की विधि)

सोने के चढ़ाने में भी सब क्रम चाँदी के अनुसार ही करना पड़ता है परन्तु यह एक बाल्टी से नहीं चढ़ता इसी से इसके चढ़ाने में दो या चार वैसी बाल्टियों की आवश्यकता है उनको जो क्रम बाल्टी जोड़ने का बताया गया है उसी प्रकार जोड़ कर काम में लाओ। यदि बाल्टी कम हों सो पानी के प्याले को आग पर धर कर बिजली की ताकत को बढ़ालो और काम में लाओ।

(अन्य धातुओं के चढ़ाने की रीति)

इसी प्रकार जिस धातु को चढ़ाना हो उसी का नमक बना पानी बनालो और चीज पर चाँदी चढ़ाने के क्रम से चढ़ालो। अकलमन्द को इशारा काफी है।

हमारी शिक्षा

यह है कि यह (Practical) हाथ से करने का काम है यद्यपि

पुस्तक में लिख दिया गया है तथापि तुम किसी अनुभवी के पास जाकर इसको सीखो और हाथों से काम करो । तब यह बड़ी जल्दी तुमसे आ जायगा क्योंकि यह एक प्रकार की रसायन है जो थोड़ी सी ही भूल से नहीं होने की । जब यह नहीं होगी तब तुम हिरास होओगे और पुस्तक वाले को भी जैसा मन में आवेगा कहोगे और अपनी भूल को भूल जाओगे इस कारण इसको किसी से सीखो । यदि पुस्तक से ही सीखना है तो हमारी इस गिलट कारिणी क्रिया को प्रथम खूब समझ लो ईश्वर ने चाहा तो आपको गिलट करना आ जायगा । यदि एकादि पर कार्य ठीक न हो तो हिम्मत न हारिये बराबर दिल लगाकर करते चले जाइये । आपको अवश्य यह अवसर प्राप्त होगा कि थोड़े से दिनों में कार्य करते २ आप ही इसके मास्टर (उस्ताद) बन जायेंगे और औरों को इसका करना बतायेंगे । इस पुस्तक में बिजली की विद्या का यह एक ही प्रयोग लिखा गया है इसके अतिरिक्त जो बिजली से और २ अनेक काम होते हैं वह और किसी समय पर प्रकाशित किये जायेंगे ।

॥ दोहा ॥

अधिक भाद्रपद अष्टमी, चौहत्तर की साल
विद्युत विद्या नई यह, रची सु मोहनलाल ॥

॥ इति शुभम् ॥